



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा  
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

# लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ अड़तीसवां अंक अक्टूबर-दिसम्बर, 2021



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय  
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124





ऑडिट दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का आगमन



ऑडिट दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री जी अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा  
Dedicated to Truth in Public Interest

# लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ अड़तीसवां अंक

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका  
(अक्टूबर-दिसम्बर, 2021)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय  
नई दिल्ली-110124



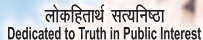
सरकारी कामकाज हिंदी में करना  
बहुत बड़ा मुश्किल काम नहीं है।

आप शुरू तो कीजिए धीरे-धीरे  
आपको लगने लगेगा ये तो बहुत  
ही आसान है।

मुख पृष्ठ

ऑडिट दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री महोदय  
सभी अधिकारियों का अभिवादन करते हुए





एक सौ अड़तीसवां अंक (अक्टूबर—दिसम्बर, 2021)

एक सौ अड़तीसवां अंक (अक्टूबर—दिसम्बर, 2021)

|                                                                                     |        |     |                                                                                            |        |
|-------------------------------------------------------------------------------------|--------|-----|--------------------------------------------------------------------------------------------|--------|
|                                                                                     | पृ.सं. |     |                                                                                            | पृ.सं. |
| पत्रिका परिवार एवं संपादकीय                                                         | 5      | 5.  | आत्मनिर्भर भारत की दिशा में<br>हिंदी का योगदान<br><i>महेश एम. जयसिंघानी</i>                | 25     |
| पाठकों के प्रति संदेश                                                               | 6      | 6.  | कोविड-19 : अकेलेपन की महामारी<br><i>सुश्री जसमीत कौर</i>                                   | 27     |
| आपके पत्र                                                                           | 7      | 7.  | पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता<br><i>विनोद कुमार शर्मा</i>                                   | 29     |
|  |        |     |                                                                                            |        |
| 1. प्रथम ऑडिट दिवस<br><i>सुश्री मीनाक्षी</i>                                        | 13     | 8.  | बलाघात<br><i>गौरव हारिथ</i>                                                                | 31     |
| 2. भाषा और संस्कार<br><i>उदय प्रताप सिंह</i>                                        | 16     | 9.  | स्वतंत्रता संग्राम के महानायक<br>राम प्रसाद बिस्मिल का हिंदी अनुराग<br><i>अभय राम सिंह</i> | 33     |
| 3. भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्त्व<br><i>सुश्री राजकुमारी शर्मा</i>          | 19     | 10. | यमुनोत्री व गंगोत्री धाम के दर्शन<br><i>ललित कुमार वर्मा</i>                               | 36     |
| 4. डिजीटल इंडिया अभियान<br><i>सुश्री मीना भारद्वाज</i>                              | 22     |     |                                                                                            |        |

| पृ.सं.                           |                                                                                                         | पृ.सं. |                                                                     |
|----------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------|---------------------------------------------------------------------|
| 11.                              | बिंदास जिन्दगी<br>संजीव कुमार गिरी                                                                      | 40     | 20. दो बूँद<br>पंकज अरोरा                                           |
| 12.                              | वेलू नाचियार – भारत की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी<br>श्रीमती वी. राधा                                | 42     | 21. दो गज़ले<br>सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'                           |
| 13.                              | (एन.ई.पी.) नई शिक्षा नीति – भारतीय परिप्रेक्ष्य में वर्तमान शिक्षा नीति की समीक्षा<br>सुश्री सुमेधा अमर | 44     | 22. सी.डी.एस. ले. जनरल बिपिन रावत – श्रद्धांजलि<br>राम सिंह         |
| 14.                              | पद्मभूषण – इसरो वैज्ञानिक नाम्बि नारायण<br>सुश्री आरती शर्मा                                            | 47     | 23. जीवन के बदलते रंग<br>मेहरबान सिंह नेगी                          |
| 15.                              | जीवन के नाटक में मंच के नाटक का योगदान<br>योगेश कुमार मिश्र                                             | 49     | 24. किस्मत की बात<br>रूप लाल                                        |
| <div> <div>कहानियाँ</div> </div> |                                                                                                         | 25.    | इति और हास<br>भूपेन्द्र कुमार शर्मा                                 |
| 16.                              | हरामी<br>अनिल शर्मा 'अनिल'                                                                              | 51     | 26. प्रस्थान—पत्र<br>केदार नाथ प्रसाद                               |
| 17.                              | यह शादी नहीं हो सकती<br>संजय कुमार सिंह                                                                 | 57     | 27. कन्या भ्रूण हत्या<br>सुश्री स्वाती गुप्ता                       |
| <div> <div>कविताएँ</div> </div>  |                                                                                                         | 28.    | नन्ही कली<br>सुश्री पूनम शर्मा                                      |
| 18.                              | दो कविताएँ<br>सुश्री लीना दरियाल 'सत्यम'                                                                | 65     | 29. आज की नजर<br>विनोद कुमार                                        |
| 19.                              | निवेदन<br>श्रीमती विदुषी वत्स                                                                           | 66     | <div> <div>यात्रा वृत्तांत</div> </div>                             |
|                                  |                                                                                                         |        | 30. आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका<br>कमलजीत सिंह रामुवालिया |



## स्वत्वाधिकार

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

## प्रकाशन

“लेखापरीक्षा प्रकाश”  
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

## प्रकाशक

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक  
का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

एक सौ अड़तीसवां अंक  
(अक्टूबर-दिसम्बर 2021)

## पत्रिका परिवार

## मुख्य संरक्षक

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू  
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

## संरक्षक

श्री के.एस. सुब्रमण्यन  
अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

## संपादक मण्डल

### प्रधान संपादक

श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया  
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

### संपादक

श्री अनिल कुमार पिलानी  
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

### सहायक संपादक

सुश्री मीनाक्षी  
सहायक प्रशासन अधिकारी

श्री हीरा बल्लभ भट्ट  
सलाहकार

## रचना चयन समिति

सुश्री मीनाक्षी  
सहायक प्रशासन अधिकारी

सुश्री राजकुमारी शर्मा  
सलाहकार

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेसंस  
जी-194, सेक्टर-2, बवाना, दिल्ली

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ  
संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।

# संपादकीय

विभागीय पत्रिका “लेखापरीक्षा प्रकाश” का 138वां (एक सौ अड़तीसवां) अंक आपके कर कमलों में है। उच्च अधिकारियों के सम्यक दिशा-निर्देश, राजभाषा विषयक व कार्यालयीन लेखों की राजभाषा कार्यान्वयन हेतु उपादेयता, विविध समसामयिक, साहित्यिक विधाओं में लालित्यपूर्ण तथा प्रेरक रचनाओं के रचनाकारों के यथेष्ट सहयोग के फलस्वरूप पत्रिका का स्तर ऊँचा हुआ है। पत्रिका आज जिस पायदान पर है उसका श्रेय आप सभी को जाता है।

पत्रिका ने राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में जो भूमिका निभाई है अथवा निभाने का प्रयास कर ही रही है, वह सबके समक्ष है। यह पत्रिका भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग में राजभाषा हिंदी की प्रगति का वह साक्ष्य है जो हमारे मिले-जुले प्रयासों का प्रतिबिम्ब बनकर विभागीय निष्ठा को परिलक्षित कर रही है। यही कारण है कि विभागेतर पाठकों तथा विभागीय लेखकों ने एक साथ इसकी उपयोगिता व गुणवत्ता की सराहना की है और मौजूदा परिस्थितियों में इसके प्रकाशन की उपादेयता को स्वीकारा है। पत्रिका ने विभाग में और विभाग के बाहर हिंदी के कार्यों से जुड़े व्यक्तियों व संस्थाओं के बीच अपनी अस्मिता बनाई, यह एक उपलब्धि है जिसका श्रेय उन सभी को जाता है जो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस पत्रिका अथवा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़े हुए हैं। हमारा उद्देश्य है लोगों में हिंदी के प्रति भावनात्मक लगाव पैदा हो तथा संघ की राजभाषा संबंधी नीतियों के अनुपालन हेतु बनाए गए विविध कार्यक्रमों में भाषा का स्वरूप देते हुए राजभाषा पद पर ससम्मान आसीन हो।

मैं उन सभी रचनाकारों को साधुवाद देता हूँ जिनकी रचनाएँ हमारी पत्रिकाओं में छप रही हैं। उनसे यह भी अनुरोध है कि वे तकनीकी विषयों पर भी अपनी लेखनी अवश्य उठाएं ताकि हर विधा में हिंदी लिखने में कठिनाई न आये और हिंदी के प्रयोग में आने वाली झिझक स्वतः दूर हो सके।

जय भारत – जय भारती।

नई दिल्ली

आपका शुभाकांक्षी  
(कमलजीत सिंह रामुवालिया)  
प्रधान संपादक

## पाठकों के प्रति संदेश

प्रिय पाठकवृंद,

विभागीय त्रैमासिक पत्रिका “लेखापरीक्षा प्रकाश” का यह अंक आपके समक्ष है। इस पत्रिका से जुड़े रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने बहुमूल्य विचार आप तक पहुंचाए हैं।

मैं उन रचनाकारों को इसी माध्यम से धन्यवाद देता हूँ जो हिंदी के प्रचार-प्रसार भारतीय भाषाओं को सामने रखकर करने की समझ रखते हैं। व्यावहारिक शब्दों को हिंदी में मिलाकर हिंदुस्तानी का भाषाई संगम तैयार कर रहे हैं। एक बात कहनी है जो आज के परिप्रेक्ष्य में जरूरी लग रही है वह है – जनता का रुख। अंदर ही अंदर अगर सबके मन मंदिर में माँ भारती की एकता व अखंडता की ममता जग जाए, तो अंग्रेजियत और अंग्रेजी की अनिवार्यता का वहम दूर हो जाए। यह भावना तब ही जाग सकती है जब हमारी एकता में भी अंग्रेजी की अनिवार्यता का मोह भंग हो और अपनी राष्ट्र भाषाओं के माध्यम से पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण को एक सूत्र में पिरो सके। हमें राजभाषा के लिए जागना होगा और अपने भूलते हुए अतीत को पुनः प्राप्त करना होगा।

मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका ‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के प्रकाशन में आप सभी का सतत सहयोग प्राप्त होता रहेगा। कृपया समसायिक, सारगर्भित, लक्ष्यभेदी विभागीय विषयों पर पठनीय रचनाएं भेजकर कृतार्थ करें।

नई दिल्ली

आपका शुभाकांक्षी  
(अनिल कुमार पिलानी)  
संपादक



## प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KARNATAKA, BENGALURU

सं.प्र.म.ले.(ले.व.ह.)हिं.क./ले.परी.प्रका./2021-22/202

दिनांक:28.03.2022

सेवा में,

सहायक प्रशासन अधिकारी/राजभाषा  
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय  
10, बहादुर शाह जफर मार्ग  
नई दिल्ली-110124

विषय- लेखापरीक्षा-प्रकाश के 137वें अंक की पावती के संबंध में ।  
संदर्भ- मुख्यालय से प्राप्त ई-मेल पत्र दिनांकित 21.03.2022

महोदया,

सादर सूचित किया जाता है कि मुख्यालय से प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक हिंदी पत्रिका लेखापरीक्षा-प्रकाश के 137वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका की साज-सज्जा एवं प्रस्तुतीकरण आकर्षक है । सुश्री लीना दरियाल 'सत्यम' की दो कविताएँ, श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया का लेख 'आंखों देखी बाबा आदम की धरती-अफ्रीका' एवं श्री बी.एस.चौहान की कहानी 'हार्ट अटैक' प्रशंसनीय है । पत्रिका में समाहित अन्य सभी लेख व कविताएँ भी सराहनीय हैं ।

आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

भवदीया,

ह/-

वरिष्ठ लेखाधिकारी/ मा.सं.वि.



सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

हरियाणा,

प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,

दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE  
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)

HARYANA

PLOT NO.5, SECTOR 33-B,

DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका लेखापरीक्षा प्रकाश/2021-22/257

दिनांक: 29.03.2022

सेवा में,

प्रधान निदेशक (राजभाषा),

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का कार्यालय,

10-बहादुरशाह जफर मार्ग,

नई दिल्ली-110124

**विषय:** 'लेखापरीक्षा-प्रकाश' के 137वें अंक के ई-संस्करण का प्रेषण।

महोदय,

दिनांक: 21.03.2022 को ई-मेल (पत्र संख्या: 119/ रा.भा.अ./39-2016 दिनांक. 21.03.2022) द्वारा 'लेखापरीक्षा-प्रकाश' के 137वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ है। एतदर्थ धन्यवाद। ई-पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यन्त सार्थक, सुन्दर एवं विषयानुकूल हैं। 'मातृभाषा की जीवंतता: मूक और बधिर के संदर्भ में', 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान', 'रानी अब्बक्का चौटा-भारत की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी' आदि रचनाएं हमें देश-भक्ति का संदेश देती हैं तथा 'प्रदूषण की समस्या एवं उसका निदान', 'हिंदी उपन्यास', 'हार्ट अटैक', 'निर्झर गान', 'अल्पविराम', 'अभिलाषा' आदि रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक हैं। पत्रिका राजभाषा कीर्ति पुरस्कार को चरितार्थ करती है। उत्कृष्ट श्रेणी की संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल को बधाई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ उप-महालेखाकार

(प्रशासन)





कार्यालय महालेखाकार, गोवा  
O/o the Accountant General, Goa  
'ऑडिट भवन', अल्टो परवरी, गोवा - 403 521  
'Audit Bhavan', Alto Porvorim Goa-403-521  
Tel: (D) 0832-2416112 Fax- 2416228, EPABX 2416224/25

पत्र सं- मले/गोवा/हि.अनु./हि.पत्रिका/2021-22/32

दिनांक: 30/03/2022

सेवा में,  
सहायक प्रशासनिक अधिकारी/राजभाषा  
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय  
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 124.

विषय: कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के 137वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के 137वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। अनेक धन्यवाद। सदैव की भांति पत्रिका का यह अंक भी उत्कृष्ट और श्रेयस्कर है तथा समस्त रचनाएँ प्रेरणास्पद, मनोरंजक एवं विविधतापूर्ण हैं। श्री अभय राम सिंह की रचना 'मातृभाषा की जीवंतता' भाव, रस, ज्ञान और लोक संस्कृति के उदाहरणों से परिपूर्ण है तथा बार-बार पठन योग्य है। श्री गौरव हरिथ का लेख 'ध्वनि विज्ञान' भाषा के जानकारों के लिए एक रोचक लेख हो सकता है। श्री मेहरबान सिंह नेगी का लेख 'वेदी की विधवा' स्वतंत्रता पूर्व ग्रामीण भारत के लोकाचार, सामाजिक परिस्थितियों एवं दृश्य घटनाओं का सुंदर चित्रण करती है। अन्य रचनाएँ भी पठनीय हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।



व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी अनुभाग



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)  
Office of the Principal Accountant General (A&E)  
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.



सं.हिंदी/लेप.प्र/प्रतिभाव-20/2021-22/ 95  
दिनांक: 30-03-2022

सेवा में,  
सहायक प्रशासनिक अधिकारी/ राजभाषा,  
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय,  
10. बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली -110124

विषय: त्रैमासिक हिंदी गृह-पत्रिका "लेखापरीक्षा-प्रकाश" के 137 वें अंक के प्रतिभाव के संबंध में।

महोदया,

मुख्यालय, नई दिल्ली की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा-प्रकाश" के 137 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। सर्वप्रथम, कार्यालय को सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार 2020-21 की प्राप्ति पर बहुत-बहुत बधाई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, सुश्री अनामिका अंतिल की रचना "देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका", सुश्री पूनम रानी की रचना "स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका", श्री अभय राम सिंह की रचना "मातृभाषा की जीवंतता: मूक और बधिर के संदर्भ में", श्री उदय प्रताप सिंह की रचना "लेखापरीक्षा का बढ़ता महत्व", श्री विनोद कुमार शर्मा की रचना "अभिव्यक्ति एवं संवाद का सशक्त माध्यम-भाषा", सुश्री सं.ग. श्रीमती की रचना "रानी अब्बक्का चौटा-भारत की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी" श्री गौरव हारिथ की रचना "ध्वनि-विज्ञान", श्री बी.एस.चौहान की रचना "हार्ट अटैक", श्री मेहरबान सिंह नेगी की रचना "वेदी की विधवा", श्री रविन्द्र की रचना "वजूद", सुश्री मंजीत शर्मा की रचना "गजल", और श्री अमित कुमार की रचना "उपभोगतावाद", विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर मुख्यालय, द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कार, 2020-21 प्राप्ति का और अंतिम पृष्ठ पर प्राप्त ट्राफी का चित्र सुंदर एवं प्रेरणादायक है, जो भविष्य में और भी अधिक बेहतर तरीके से कार्य करने की प्रेरणा देते हैं। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।



भवदीय,

*स्वाति*

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी



महालेखाकार (ले० व ह०) हरियाणा का कार्यालय  
लेखा भवन, प्लॉट नं० 4 व 5, सेक्टर 33-बी, चण्डीगढ़-160020  
टेलीफोन नं० 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं० 0172-2603824  
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,  
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B  
CHANDIGARH-160 020  
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824  
E mail – [agaeharyana@cag.gov.in](mailto:agaeharyana@cag.gov.in)

हिंदी/कक्षा/ले.प.प्र.प्रति./2021-22/316

दिनांक: 31.03.2022

सेवा में

प्रधान निदेशक (राजभाषा),  
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय ,  
10, बहादुरशाह जफर मार्ग,  
नई दिल्ली- 110124

महोदय/महोदया,

**विषय : हिंदी पत्रिका 'लेखा परीक्षा प्रकाश' के 137वें अंक के सम्बन्ध में ।**

मुख्यालय के ई-मेल दिनांक 21.03.2021 के माध्यम से मुख्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'लेखा परीक्षा प्रकाश' के 137वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अति मनमोहक है । पत्रिका का प्रत्येक अंक राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अति उल्लेखनीय योगदान निभा रहा है ।

पत्रिका में समाविष्ट श्रीमती पूनम रानी का लेख 'स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका', श्रीमती मीना भारद्वाज का लेख 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान', सुश्री सं.ग. श्रीमती का लेख 'रानी अब्बाका चौटा- भारत की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी' एवं श्री मेहरबान सिंह नेगी का लेख 'वेदी की विधवा' विशेष रूप से पठनीय व ज्ञानवर्धक हैं ।

इसके अतिरिक्त श्री सुभाष कुमार नेमा की कविता 'निर्झर गान', श्री कुमार भास्कर की कविता 'देख लेना' एवं श्री अमित कुमार की कविता 'उपभोक्तावाद' विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

उप महालेखाकार (प्रशा.)





भारतीय लेखा परीक्षा तथा लेखा विभाग  
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) पंजाब  
प्लॉट नं. 21, सेक्टर 17, चण्डीगढ़ - 160017  
Indian Audit & Accounts Department  
Office of the Pr. Accountant General (Audit) Punjab  
Plot No. 21, Sector 17, Chandigarh - 160017

क्रमांक / No. .... हि.क./लेखापरीक्षा/प्रकाश/2021-22/39/.....

दिनांक / Date ..... 18.04.2022.....

सेवा में

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय,  
10, बहादुरशाह ज़फर मार्ग,  
नई दिल्ली-110124.

विशेष ध्यानार्थ: वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (राजभाषा)

विषय : हिंदी पत्रिका "लेखा परीक्षा प्रकाश" के 137वें अंक का ई-संस्करण।

संदर्भ : दिनांक: 21.03.2022 का पत्र क्रमांक 119/रा.भा.अ./39-2016.

महोदय,

संदर्भित पत्र के साथ त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा-प्रकाश" के 137वें अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति हुई। अतः आभार स्वीकार करें। पर्यावरण एवं तकनीक की दृष्टि से पत्रिकाओं का ई-प्रकाशन अत्यंत प्रासंगिक एवं प्रसंशनीय है, अतः इस संबंध में आपके संपादक मण्डल को अशेष बधाई।

अपने पूर्व अंकों की भांति इस नवीन अंक में संकलित सभी रचनाएं उच्च स्तरीय, बहुआयामी, सुसंपादित और मन-आत्मा पर गहरा प्रभाव डालने वाली हैं। पत्रिका में बड़ी ही सुंदरता के साथ ऐनिमेशन का प्रयोग भी किया गया है, जिससे पत्रिका का रूप और अधिक निखर गया है।

पत्रिका के संपादक मण्डल व रचनाकारों को पत्रिका के सफल संपादन के लिए हार्दिक बधाई। यह पत्रिका इसी प्रकार 'नमः स्पर्श दिप्तम' के प्रतिमान को साकार करती रहे "लेखापरीक्षा-प्रकाश" के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'सुगन्धा' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

यह पत्र प्रधान महालेखाकार महोदय की अनुमति से जारी किया गया है।

भवदीय,

उप-महालेखाकार (प्रशासन)

# प्रथम ऑडिट दिवस

## ऑडिट दिवस 16 नवम्बर को ही क्यों?

इस लेख में 'ऑडिट दिवस' का महत्व इस बात से है कि गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, 1858 के तहत बंगाल, मद्रास और बॉम्बे प्रेसीडेंसी के लेखा विभाग के विलय के बाद 16 नवंबर, 1860 को पहले महालेखापरीक्षक ने अपना कार्यभार संभाला था। अब हर साल यह दिन ऑडिट दिवस के रूप में मनाया जाएगा।



सुश्री मीनाक्षी  
सहायक प्रशासन अधिकारी  
राजभाषा अनुभाग, मुख्यालय

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय में दिनांक 16 नवंबर 2021 को प्रथम ऑडिट दिवस मनाया गया। प्रथम ऑडिट दिवस के उद्घाटन के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के करकमलों द्वारा लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की मूर्ति का अनावरण भी किया गया।

इस गौरवपूर्ण अवसर पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री जी. सी. मुर्मू जी के भाषण के कुछ मुख्य अंश :-

प्रथम ऑडिट दिवस के अवसर पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री जी.सी. मुर्मू जी ने माननीय प्रधानमंत्री जी का स्वागत करते हुए आजादी के अमृत महोत्सव के वर्ष में उनकी उपस्थिति को गौरव का क्षण बताया। अपने भाषण में सीएजी महोदय ने कहा कि हमने इस दिन को प्रथम 'ऑडिट दिवस' के रूप में मनाने के लिए चुना है।



प्रथम ऑडिट दिवस पर सरदार वल्लभ भाई पटेल की मूर्ति का अनावरण करते हुए  
माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी



प्रथम ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य पर सभा को संबोधित करते हुए  
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय

इस दिन का महत्व इस बात से है कि गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, 1858 के तहत बंगाल, मद्रास और बॉम्बे प्रेसीडेंसी के लेखा विभागों के विलय के बाद 16 नवंबर, 1860 को पहले महालेखापरीक्षक ने अपना कार्यभार संभाला था। हम हर साल इस दिन को ऑडिट दिवस के रूप में मनाएंगे और इसमें कई कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाएगा जो हमें सार्वजनिक ऑडिट और खातों में उत्कृष्टता के लिए निरंतर खोज के माध्यम से खुद को फिर से समर्पित करने और सुशासन में योगदान करने की हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत करने में हमारी मदद करेंगे।

हम शासन प्रक्रिया में सक्रिय रूप से योगदान करते हैं। जब भी नए राज्य जैसे कि छत्तीसगढ़, झारखंड और तेलंगाना का निर्माण किया गया तो यह महालेखाकार ही थे जिन्होंने सरकार के साथ संपत्ति और देनदारियों के विभाजन में सहायता के लिए काम किया। इसी तरह, जब भी नई वित्तीय व्यवस्था लाई गई जैसे कि जीएसटी तो हमारी संस्था ने आंकड़े उपलब्ध कराए जो राज्यों को दिए जाने वाले मुआवजे की गणना में सहायक हुए।

हम दुनिया में एकमात्र सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान हैं, जो केंद्र और राज्यों का लेखापरीक्षा कार्य करने के अतिरिक्त, राज्य सरकारों के लिए लेखांकन कार्य भी करता है। इसके अलावा, हम विभिन्न पेंशनभोगियों और राज्य सरकार के अधिकारियों को उनकी हकदारी प्राप्त करने में सुविधा प्रदान करते हैं। हम 20 राज्यों में 28 लाख से अधिक जीपीएफ खाते रखते हैं, 19 राज्यों में 56 लाख से अधिक राज्य सरकार के कर्मचारियों की पेंशन को अधिकृत करते हैं और 9 राज्यों में राजपत्रित हकदारी के कार्य करते हैं। हमें हाल ही में 2024–2027 के वर्षों के लिए प्रतिष्ठित एशियाई सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के अध्यक्ष के रूप में चुना गया है। उन्होंने यह भी कहा कि आज के इस प्रथम ऑडिट दिवस से सालभर तक चलने वाली गतिविधियों का भी शुभारंभ होगा। इसमें स्वच्छता, हितधारकों के साथ बेहतर समन्वय, सिस्टम सुधार आदि पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा।

सीएजी महोदय ने यह भी बताया कि वर्ष 2020–21 में कोरोना महामारी के बावजूद हमने 123 लेखापरीक्षा रिपोर्ट





प्रथम ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य पर सभा को संबोधित करते हुए  
माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी

प्रस्तुत की जिनमें से 67 निष्पादन लेखापरीक्षा रिपोर्ट थी। सीएजी महोदय ने कौशल विकास एवं प्रशिक्षण के महत्व पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि विभाग अपने कर्मचारियों के क्षमता विकास के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता हैं।

इस प्रकार, सीएजी महोदय ने कार्यालय की प्रमुख गतिविधियों तथा उनके महत्व से अवगत कराते हुए ऑडिट की आवश्यकता से परिचित करवाया। अपने वक्तव्य के अंत में सीएजी महोदय ने माननीय प्रधानमंत्री महोदय से निवेदन किया कि वे हम सभी को अपने विचारों से अनुगृहीत करें।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के भाषण के कुछ मुख्य अंश:—

माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा कि एक समय था जब देश में लेखापरीक्षा को आशंका और भय के साथ देखा जाता था, 'सी.ए.जी. बनाम सरकार', हमारी व्यवस्था की एक

सामान्य सोच बन गई थी लेकिन, आज यह मानसिकता बदल गई है। आज लेखापरीक्षा को मूल्यवर्धन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। प्रधानमंत्री जी ने लेखापरीक्षा कार्य को हमारे चिंतन, मंथन तथा हमारी इंप्रूवमेंट का अभिन्न भाग माना। प्रधानमंत्री जी ने सी.ए.जी. संस्थान के समय के साथ— साथ अधिक मजबूत होने की बात कहीं। उनके अनुसार लेखापरीक्षा द्वारा सेल्फ एसेसमेंट का कार्य आसान हो जाता है। माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने कहा कि उन्हें पूरा भरोसा है कि देश के लिए हमारा योगदान अनवरत जारी रहेगा और देश के विकास को नई गति देता रहेगा। इसी विश्वास के साथ माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद करते हुए शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी तथा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री जी.सी. मुर्मू जी ने लेखापरीक्षा के महत्व से हमें अवगत कराया।

# भाषा और संस्कार

लेखक ने इस लेख में संस्कार के माध्यम से शिक्षा पद्धति एवं भाषा शैली दोनों को सुधारने पर बल दिया। यदि हम सब मिल कर प्रयास करें तो आने वाली पीढ़ियों को मातृ भाषा में सभी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का सुखद अनुभव करा सकते हैं।

उदय प्रताप सिंह

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग,  
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय,  
भारत सरकार, नई दिल्ली-110012

भाषा और संस्कारों का आपस में गहरा संबंध होता है। भाषा और संस्कार दोनों एक दूसरे को प्रत्यक्ष रूप में प्रभावित करते हैं। हमारे संस्कार हमारी भाषा को प्रभावित करते हैं और हमारी भाषा हमारे व्यक्तित्व को संपूर्ण जीवन प्रभावित करती है। भाषा स्वयं में भी एक संस्कार है। संस्कारों से पोषित, पल्लवित भाषा ही वाणी में सम्मोहन पैदा करती है। संस्कार भाषा की जननी है। किसी व्यक्ति की भाषा से उसके संस्कारों का आसानी से पता लगाया जा सकता है। भाषा और संस्कार जिस सूक्ष्मता से एक-दूसरे में गुथे हुए हैं उस पर चिंतन करने की आवश्यकता है। सिर्फ चिंतन ही नहीं, बल्कि अब उस पर अमल करने का समय आ गया है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र नहीं है, हमारे संस्कारों का शब्दों के रूप में एक प्रवाह है, ज्ञान एवं संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरण है। भाषा विचारों को जीवंत बनाती है।

हमारे बच्चों की या आने वाली पीढ़ियों की भाषा शैली कैसी होगी, ये हमारे द्वारा आज दिए जा रहे संस्कार निर्धारित करेंगे। आज का जो संस्कार चिंतन है वही कल हमारे समाज व आने वाली पीढ़ियों की भाषा शैली बनेगी।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि आज समाज में भाषा एवं संस्कार दोनों में गिरावट देखी जा रही है। समाज में खासकर अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित हो रही नई पीढ़ी में व्याकरण विहीन एक नए किस्म की भाषा शैली को ध्यान से सुनने और उस पर गौर करने पर यह प्रतीत होता है कि जैसे एक होड़ सी लगी हुई है कि जो जितने ज्यादा अशुद्ध वाक्य बोलेगा वह उतना ही ज्यादा आधुनिक एवं वाकपटु कहलाएगा। हिंदी वाक्यों को अंग्रेजी वाक्यों की शैली में और अंग्रेजी वाक्यों को हिंदी वाक्यों की शैली में मिला-मिला कर बोला जा रहा है। हिंदी और अंग्रेजी के शब्दों को मिला-मिला कर बोलना तो

मानों आज की बोल-चाल की नई भाषा शैली बन गई है। पढ़े-लिखे लोग भी आज इस शैली को अपनाने से नहीं हिचकते हैं, वे भी इसी भाषा शैली के प्रवाह के साथ बहे चले जा रहे हैं। चलन इतना ज्यादा बढ़ गया है कि हिंदी में बोलने वाले वक्ता जब तक उसमें अंग्रेजी के शब्दों का मिश्रण न कर लें या यूँ कहा जाए कि जब तक अपने हिंदी भाषण में अंग्रेजी के शब्दों का तड़का या छौंक न लगा लें तब तक बोलने वाले को मजा ही नहीं आता, उन्हें ऐसा लगता है कि जैसे श्रोताओं पर उनके बोलने का प्रभाव ही नहीं पड़ रहा है।

हिंदी अपनी मातृ भाषा होते हुए भी अधिकतर बच्चे सही से हिंदी नहीं बोल पाते हैं और माता-पिता ऐसी स्थिति में भी जब बेपरवाह दिखते हैं, तो यह एक चिंता की बात है। माता-पिता को अपनी संतानों को मातृ भाषा सिखाने का भरसक प्रयास करना चाहिए। अक्सर हम सब देखते हैं कि लोग जान-बूझ

कर गलत वाक्य बोलते हैं और जब दूसरे लोग उन्हें गलत वाक्य बोलने की वजह से टोकते हैं, तो गलत वाक्य बोलने वाले लोग अपनी झेंप मिटाने के लिए तुरंत कहने लगते हैं कि शब्दों को छोड़िए भावनाओं पर ध्यान दीजिए। यह एक गलत अभ्यास है, एक गलत संस्कार है और इसे बिल्कुल भी उचित नहीं ठहराया जा सकता है। भावनाओं पर तो ध्यान दीजिए ही, लेकिन शब्दों और वाक्यों की शुद्धता पर भी ध्यान दीजिए, उसको छोड़िए नहीं। बोलते समय शब्दों और वाक्यों दोनों का शुद्ध होना आवश्यक है। बच्चों को गलत आदत मत पड़ने दो। उन्हें गलत बोलना मत सिखाइए, गलत भाषा शैली के लिए प्रोत्साहित मत कीजिए। भाषा की शुद्धता का सुनने वालों पर सीधा असर पड़ता है। शुद्ध भाषा शैली में कही गई बात का प्रभाव बढ़ता है, असर पड़ता है। प्रभावी संप्रेषण क्षमता का विकास होता है। संप्रेषण कौशल आकर्षक बनता है। इसके साथ ही भाषा की शुद्धता से हमारे व्यक्तित्व में निखार आता है। हमारे बोलने व बातचीत करने का तरीका हमारे व्यक्तित्व का परिचायक होता है। हमारे छोटे भाई-बहन, मित्र, बच्चे हमारी भाषा शैली का अनुकरण करते हैं। यह अनुकरण क्रिया इतने सूक्ष्म स्तर

पर घटित हो रही होती है कि हमें पता तक नहीं चल पाता है लेकिन समय के साथ इसके लक्षण हमारी संतानों पर या आने वाली पीढ़ियों पर प्रत्यक्ष रूप से देखे जा सकते हैं।

हमने देखा है कि हम जिस तरह, जिस लहजे में अपने छोटे भाई-बहनों से, अपनी संतानों से बातचीत करते हैं, वे भी हम से उसी तरह, उसी लहजे में बात करते हैं। बच्चा जब शिशु होता है तब उसकी अपनी कोई भाषा नहीं होती है। वह भाषा अपने परिजनों—माता—पिता, दादी—दादा, नानी—नाना व अन्य सगे संबंधियों से ही सीखता है। बच्चे जो भी बचपन में सीखते हैं उसकी अमिट छाप जीवन भर के लिए उनके कोरे मस्तिष्क पर पड़ जाती है। विद्यार्थी जिस माध्यम से विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करता है आगे चलकर उसी माध्यम से बोलने या लिखने में सुविधा महसूस करता है। शिक्षा ग्रहण करने का माध्यम एक संस्कार की भूमिका निभाता है। यह संस्कार यदि बच्चे की अपनी मातृ भाषा शैली में न दिया जाए तो इसका प्रभाव बोलचाल में तो परिलक्षित होता ही है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति को हिंदी का ज्ञान होते हुए भी

हिंदी में कार्य करने को कहा जाए तो वह असुविधा महसूस करता है, ठीक उसी प्रकार यदि हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति को अंग्रेजी में कार्य करने को कहा जाए तो उसे भी असुविधा होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा ग्रहण करने का माध्यम एक संस्कार है, जो कि हमारी मौखिक व लिखित दोनों प्रकार की भाषा शैलियों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है।

शिक्षा का व्यावसायीकरण होने के कारण अधिकतर माता—पिता अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्रदान कराना चाहते हैं। अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दिलवाना हिंदी माध्यम से शिक्षा दिलवाने की अपेक्षा काफी महंगा है, तथापि शायद ही कोई माता—पिता अपने बच्चों को हिंदी माध्यम से शिक्षा दिलवाना पसंद करते हों। जहाँ अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय नहीं हैं या जो लोग अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दिलवाने का व्यय वहन नहीं कर सकते हैं उनकी बात अलग है। हम हिंदी से प्रेम तो बहुत करते हैं, अपने देश की राजभाषा को देश में ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी उसे उसका दर्जा दिलाने की हिमायत भी करते हैं, लेकिन अपने बच्चों को शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से दिलाना पसंद करते हैं। क्या कारण है, क्यों हम अपने बच्चों को



हिंदी माध्यम से शिक्षा दिलवाना पसंद नहीं करते हैं। चाहे शिक्षा का व्यावसायीकरण हो, या रोजगार के लिए अंग्रेजी का आकर्षण हो या रोजगार के लिए अंग्रेजी की अनिवार्यता, या अंग्रेजी के प्रति लोगों का आकर्षण, कारण जो भी हों, यही कारण हिंदी को पूर्ण राजभाषा का दर्जा दिलाने की राह में मुख्य रोड़ा बने हुए हैं। जब तक इनका निराकरण नहीं हो जाता तब तक हिंदी को पूर्ण राजभाषा का दर्जा दिलाने की राह में अनेक प्रकार की बाधाएं आती रहेंगे।

यदि हम अपने देश में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च तकनीकी शिक्षा तक फिर चाहे वह माध्यमिक शिक्षा हो, उच्च शिक्षा हो, व्यावसायिक शिक्षा हो, चिकित्सा शिक्षा हो, विधि एवं कानून की शिक्षा हो हर प्रकार की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण ढंग से, जो सभी अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर खरी उतरने वाली हो, यदि हम ऐसी शिक्षा हिंदी माध्यम से देने की व्यवस्था करने में सफल हो जाते हैं तो हमारी बहुत सी समस्याएं स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी। तब हिंदी माध्यम से प्राप्त होने वाली शिक्षा के प्रति हमारा नजरिया भी बदल जाएगा और हिंदी के प्रति और अधिक सम्मान बढ़ेगा। हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले बच्चों के अंदर पनपने वाली हीन

भावना भी समाप्त हो जाएगी और उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। ऐसी स्थिति बहुत सुंदर और सुखद होगी। वर्तमान स्थिति में हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थी स्वयं को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की तुलना में हीन समझते हैं और सबके सामने बोलने व बातचीत करने में संकोच महसूस करते हैं। धारा प्रवाह अंग्रेजी न बोल पाने के गुण को अपने अंदर एक बहुत बड़ी कमी के रूप में देखते हैं। सिर्फ हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थी ही नहीं समाज के अनेक असंवेदनशील लोग जिन्हें बच्चों के मस्तिष्क पर सूक्ष्म स्तर पर ऐसी बातों से पड़ने वाले प्रभावों का ज्ञान नहीं होता है, वे भी हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले बच्चों को हेय दृष्टि से देखते हैं और अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले बच्चों से उनकी तुलना करके जाने अनजाने उनका तिरस्कार करते रहते हैं। इससे बच्चों में कुंठा पनपने लगती है और वे निराशा की गर्त में जाकर अवसाद का शिकार बन जाते हैं। इस तरह उन बच्चों का पूरा जीवन ही बर्बाद हो जाता है। हमें इससे बचना चाहिए, यह एक बहुत संवेदनशील पहलू है जिससे संपूर्ण जीवन प्रभावित होता है। हमें अपने बच्चों की तुलना अन्य बच्चों से नहीं करनी चाहिए।

शिक्षा के अंग्रेजी माध्यम को इतनी अधिक प्राथमिकता नहीं दी जानी चाहिए क्योंकि शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम चाहे जो भी भाषा हो वह एक माध्यम मात्र है, लक्ष्य नहीं है, ज्ञान नहीं है। विषय का ज्ञान किसी भी भाषा में प्राप्त किया जाए लेकिन जितना प्रभावी वह अपनी मातृ भाषा में होगा उतना अन्य किसी भी भाषा में संभव नहीं है। मातृ भाषा में बच्चे बिना प्रयास के सहज भाव से सीखते हैं। इस तरह हम पाते हैं कि हमारे संस्कारों का हमारी भाषा पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। माँ जिस भाषा में बच्चे को संस्कार देती है, शिक्षा का माध्यम यदि वही भाषा हो तो शिक्षा ग्रहण करने में बहुत आसानी होगी तथा विषय को शीघ्र समझा जा सकता है। विदेशी भाषा में शिक्षा ग्रहण करना विषय को बोझिल बना देता है। सीखने की गति धीमी हो जाती है, सीखने वाले का ध्यान विषय सामग्री पर कम और माध्यम भाषा पर अधिक रहता है। विदेशी भाषा में शिक्षा बच्चों को उनकी संस्कृति से दूर करती है। संस्कारों के माध्यम से शिक्षा पद्धति एवं भाषा शैली दोनों को सुधारा जा सकता है। यदि हम सब मिल कर प्रयास करें तो आने वाली पीढ़ियों को मातृ भाषा में सभी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का सुखद अनुभव करा सकते हैं।

# भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व



**सुश्री राजकुमारी शर्मा**  
सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी  
एम-143, साउथ सिटी-1, गुरुग्राम

इस लेख में लेखिका ने आज के परिप्रेक्ष्य में सूचना प्रौद्योगिकी के सकारात्मक एवं नकारात्मक महत्व के बारे में जानकारी दी है।

**आ**ज के युग को सूचना प्रौद्योगिकी का युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। सूचना प्रौद्योगिकी ने पूरे विश्व में कायापलट कर दी है। भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सूचना, डेटा तथा जानकारी का आदान-प्रदान मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई देता है। भारत के विकास में इसने अहम भूमिका निभाई है।

“मैकमिलन डिक्शनरी ऑफ इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी” में सूचना प्रौद्योगिकी को परिभाषित करते हुए विचार व्यक्त किया गया है कि कम्प्यूटिंग और दूरसंचार के सम्मिश्रण पर आधारित माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स द्वारा मौखिक, चित्रात्मक, मूलपाठ विषयक और संख्या संबंधी सूचना का अर्जन, संसाधन, भंडारण और प्रसार है।

कोविड-19 महामारी के दौरान तो सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व और भी अधिक बढ़ गया। आज सूचना प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गयी है। क्योंकि जिस समाज में सूचना का प्रसार एवं प्रचार जितना अधिक है वह समाज उतना ही उन्नत एवं विकसित है।

## सूचना प्रौद्योगिकी के सकारात्मक प्रभाव

आज सूचना प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन के हर निर्णय को आसान बना दिया है। इसका मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है। निम्नलिखित क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी का अद्वितीय योगदान है :-

**1) शिक्षा के क्षेत्र में :-** कम्प्यूटर, इंटरनेट, स्मार्टफोन, ऑडियो-वीडियो आदि जैसी

तकनीकों से शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई है। आज विद्यार्थी इंटरनेट के माध्यम से घर बैठे ही पढ़ाई करके देश-विदेश में स्थित प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों से डिग्री प्राप्त कर सकते हैं। कोरोना महामारी के दौरान स्कूल-कॉलेजों की ऑन-लाईन माध्यम से पढ़ाई इसका जीवंत उदाहरण है।

**2) व्यापार/वाणिज्य के क्षेत्र में :-** सूचना प्रौद्योगिकी ने व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में कायापलट कर दिया है। ई-कामर्स इसका ज्वलंत उदाहरण है। बड़े-बड़े लेनदेन अब ऑन-लाईन माध्यम से सम्पन्न हो जाते हैं। दिन-प्रतिदिन की वस्तुओं/उत्पादों को आज लोग ऑन-लाईन माध्यम से आर्डर करके मँगवा सकते हैं। इससे न केवल समय की बचत होती है बल्कि अनेक लोगों को रोजगार भी मिलता है। अब घर

बैठे ही उचित कीमत पर सामान उपलब्ध हो जाता है। इसका भुगतान भी ऑन-लाईन माध्यम से किया जा सकता है।

**3) सरकारी कामकाज में :-** अब सरकारी कामकाज में भी सूचना प्रौद्योगिकी की महत्ता है। ई-ऑफिस में फाईलें प्रस्तुत करके न केवल समय की बचत होती है बल्कि कागजरहित प्रणाली के साथ-साथ समस्त जानकारी आसानी से एक स्थान पर उपलब्ध रहती है। सरकारी कर्मचारियों का समस्त रिकार्ड जैसे वेतन पर्ची, भविष्य निधि अंशदान, सेवा पुस्तिका इत्यादि भी अब ऑन-लाईन उपलब्ध है ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसे देखा जा सके। ई-प्रशासन में ई-मेल, फैंक्स, इंटरनेट, कम्प्यूटर आदि का प्रयोग किया जाता है।

**4) रक्षा के क्षेत्र में :-** सूचना संवेदकों का रक्षा के क्षेत्र में उपयोग किया जाता है। मिसाइल की कार्यप्रणाली, राकेट की दिशा, हवाई जहाजों की दिशा, दुश्मनों की गतिविधियों की जानकारी भी कम्प्यूटर जैसी तकनीक से मिल जाती है। रक्षा तथा परमाणु क्षेत्र में किए जाने वाले अनुसंधानों में भी कम्प्यूटर का अत्यधिक महत्त्व है।

**5) चिकित्सा के क्षेत्र में :-** आज के युग में चिकित्सा के क्षेत्र में भी सूचना प्रौद्योगिकी का अत्यधिक प्रयोग किया जा रहा है। कम्प्यूटरीकृत तकनीकों से शरीर के अंदर की बीमारियों की जांच की जाती है। इससे न केवल इलाज में लगने वाले समय तथा धन की बचत होती है बल्कि रोगी को अत्यधिक कष्ट से भी छुटकारा मिलता है। कोविड-19 महामारी के दौरान डॉक्टर से ऑन-लाईन समय लेना तथा डॉक्टर द्वारा ऑन-लाईन रोगी से बातचीत करके दवाइयाँ देना/उपचार करना केवल सूचना प्रौद्योगिकी के कारण ही संभव हो पाया।

**6) अन्तरिक्ष एवं मौसम संबंधी जानकारी :-** सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग उपग्रहों में किया जाता है जिससे अन्तरिक्ष तथा अन्य ग्रहों के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है। पृथ्वी में उपलब्ध आंतरिक संसाधनों, खनिज संसाधनों, तेल, प्राकृतिक गैस आदि की जानकारी संवेदक यंत्रों से प्राप्त होती है। इसी प्रकार मौसम संबंधी जानकारी (जैसे बारिश, तूफान, भूकंप आदि) भी उपग्रहों के माध्यम से प्राप्त होती है।

**7) मनोरंजन के क्षेत्र में :-** आज सूचना प्रौद्योगिकी ने मनोरंजन के क्षेत्र में भी नए द्वार खोले हैं। अनेकों गुणवत्तापूर्ण यंत्रों द्वारा मनोरंजन के सस्ते तथा अच्छे साधन उपलब्ध हैं। डिजिटल चित्रों के माध्यम से काल्पनिक घटनाएँ यथार्थ रूप में प्रतीत होती हैं। आभासी वास्तविकता को लोग असली घटना समझने लगते हैं। इस क्षेत्र में सीडी, वीडियो-ऑडियो, अनेकों डिजिटल उपकरण आदि इसके उदाहरण हैं।

**8) बुकिंग/भुगतान/अन्य जानकारी :-** रेलवे टिकट/हवाई टिकट/बस की टिकट आदि के लिए अब ऑनलाईन बुकिंग की सुविधा उपलब्ध है। अब किसी भी प्रकार का भुगतान ऑनलाईन माध्यम से किया जा सकता है। एटीएम कार्ड के द्वारा कहीं भी धनराशि निकाली जा सकती है। अन्य जानकारियाँ भी ऑनलाईन उपलब्ध होती हैं जैसे आधारकार्ड, पेनकार्ड, किसी प्रकार का फार्म, परीक्षा का प्रवेशपत्र प्राप्त करना, परीक्षा देने संबंधी अन्य सूचना इत्यादि।

**9) देश विदेश की सूचनाएँ/जानकारियाँ :-** यह सूचना प्रौद्योगिकी के कारण ही संभव हो



पाया है कि हम आज घर बैठे ही देश-विदेश की खबरें/जानकारी/सूचनाएँ टीवी तथा अन्य माध्यमों से प्राप्त कर सकते हैं। संचार के क्षेत्र में टेलीफोन, मोबाईल, इंटरनेट जैसी सुविधाओं ने दूरियाँ समाप्त कर दी हैं जिससे एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के काफी करीब अनुभव करता है।

### सूचना प्रौद्योगिकी के नकारात्मक प्रभाव

हर पक्ष के सकारात्मक पहलु के साथ नकारात्मक पहलु भी होता है। जहां एक ओर उसका लाभ होता है वहीं उसकी कुछ हानियाँ भी होती हैं। इसी प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी के जहां सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलते हैं वहीं इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं जो इस प्रकार हैं :-

**1) बेरोजगारी में वृद्धि :-** सूचना प्रौद्योगिकी का सबसे बड़ा नकारात्मक प्रभाव यह है कि इसके कारण बेरोजगारी में वृद्धि हो रही है। वर्तमान समय में कंप्यूटर तथा अन्य माध्यमों से कार्य करने के कारण श्रमबल की कमी हो रही है क्योंकि कई व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला कार्य अब एक ही व्यक्ति कंप्यूटर तथा अन्य संसाधनों की सहायता से सम्पन्न कर देता है।

**2) गोपनीयता का खतरा :-** कंप्यूटर पर स्टोर किए गए डेटा में निजी जानकारियों (बैंक इत्यादि से संबंधित) भी रहती हैं जो यदि गलत हाथों में पड़ जाएँ तो उसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ते हैं। इस प्रकार गोपनीयता भंग होने का खतरा बना रहता है।

**3) स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव :-** कंप्यूटर की बढ़ती आदत ने मानव जीवन को बहुत प्रभावित किया है। कंप्यूटर चलाते समय सामान्यतया वातानुकूलित कमरे का उपयोग किया जाता है जिससे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त लगातार कंप्यूटर पर कार्य करने से आँखों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

**4) डेटाबेस की सुरक्षा को खतरा :-** चूंकि अब रिकार्ड कागजों में न रखकर मैग्नेटिक माध्यम से कंप्यूटर में रखा जाता है इसलिए यदि कंप्यूटर सिस्टम में वायरस आ जाए तो पूरे का पूरा डेटाबेस कुछ ही सेकंडों में नष्ट हो जाता है। डेटाबेस का बैकअप न रखे जाने की स्थिति में पूरे का पूरा डेटाबेस नष्ट हो जाता है। संवेदी सूचना के नष्ट हो जाने की स्थिति में देश की सुरक्षा को भी खतरा हो सकता है।

**5) साइबर क्राइम :-** साइबर क्राइम भी सूचना प्रौद्योगिकी का एक नकारात्मक प्रभाव है। साइबर क्राइम के अंतर्गत डेटा की चोरी, डेटा की हैकिंग और बैंकिंग, इंटरनेट पर अश्लीलता दर्शाना, वायरस का प्रवेश कराना तथा बैंक और बीमा कम्पनियों के साथ धोखाधड़ी करके धन का गबन करना इत्यादि आता है। इसमें किसी दूसरे कंप्यूटर में अनधिकृत प्रवेश करके डेटा की चोरी या डेटा के साथ छेड़छाड़ की जाती है। कई बार साइबर क्राइम द्वारा देश की अर्थव्यवस्था को खतरा उत्पन्न हो जाता है।

अंत में यह मानना पड़ेगा कि सूचना प्रौद्योगिकी आज एक आवश्यकता बन गयी है। आज हमारे जीवन में यह एक अनिवार्य भाग बन चुकी है। किसी न किसी रूप में हम सूचना प्रौद्योगिकी के संसाधनों पर निर्भर हो गए हैं। इसने प्रत्येक क्षेत्र और हर वर्ग को प्रभावित किया है। यद्यपि इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलते हैं परंतु सकारात्मक प्रभावों को ध्यान में रखते हुए तथा कुछ सावधानियाँ बरतते हुए सूचना प्रौद्योगिकी के संसाधनों का इष्टतम लाभ उठाया जा सकता है जिससे हमारा देश भी उन्नति तथा विकास के शिखर पर पहुँच सके।



**सुश्री मीना भारद्वाज**  
सहायक लेखा अधिकारी  
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)  
हरियाणा, चंडीगढ़

# डिजीटल इंडिया अभियान

इस लेख में लेखिका ने डिजीटल इंडिया अभियान का लक्ष्य देश के समाज को डिजीटल रूप से सक्षम बनाना है। इस अभियान द्वारा भारत के हरेक गाँव तक इंटरनेट की पहुँच के माध्यम से लोगों को जोड़ने और इस अभियान के महत्व को समझोगी तथा इसका पूर्ण लाभ उठाएंगे, के संबंध में जानकारी दी है।

देश को डिजीटल रूप से सशक्त बनाने हेतु भारत सरकार द्वारा 1 जुलाई, 2015 को डिजीटल इंडिया अभियान शुरू किया गया। यह कार्यक्रम भारत को समृद्ध करने की दिशा में भारत सरकार की नई पहल है। इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य देश को डिजीटल रूप से सशक्त बनाते हुए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करना है। इसके द्वारा व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव डालते हुए समाज की उन्नति तथा प्रगति संभव है। डिजीटल इंडिया अभियान का लक्ष्य देश के समाज को डिजीटल रूप से सक्षम बनाना है। कोविड-19 महामारी के दौरान डिजीटल इंडिया अभियान का महत्व और अधिक बढ़ गया। महामारी की भयंकरता को ध्यान में रखते हुए सख्त लाकडाउन तथा अनेकों पाबंदियाँ सरकार द्वारा लोगों पर लगाई गई जिसमें घरों में रहना

तथा सामाजिक दूरी बनाए रखना भी शामिल था। अतः परिस्थितियों, समय की मांग तथा हालातों को ध्यान में रखते हुए समस्त कार्यों को डिजीटल रूप से तथा आनलाईन माध्यम से करने पर बल दिया गया। हालांकि भारत सॉफ्टवेयर की एक महाशक्ति के रूप में जाना जाता है, फिर भी नागरिकों के लिए इलेक्ट्रॉनिक सरकारी सेवाओं की उपलब्धता अभी भी अपेक्षाकृत कम है।

**डिजीटल इंडिया अभियान के नौ स्तम्भ हैं जो निम्न प्रकार हैं:**

1) **ब्रॉडबैंड हाईवे** — इस सुविधा के अंतर्गत पंचायतों को इससे जोड़ने की योजना है।

2) **मोबाईल कनेक्टिविटी के लिए सार्वभौमिक पहुँच** — इसके द्वारा देश में अधिकाधिक उपयोगकर्ताओं को मोबाईल फोन से जोड़ना है।

3) **पब्लिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम** — राष्ट्रीय ग्रामीण इंटरनेट मिशन द्वारा सीएससी को ग्राम पंचायतों के माध्यम से सेवा वितरण के लिए बहुआयामी अंत-बिन्दुओं के माध्यम से सबके अनुकूल बनाया गया है। डाकघरों को भी बहु-सेवा केंद्र बनाने की योजना है।

4) **ई-गवर्नेंस** — इसमें प्रौद्योगिकी के माध्यम से सरकारी तंत्र में सुधार शामिल है। सरकार आईटी का प्रयोग करते हुए बिजनेस प्रोसेस री-इंजीनियरिंग करेगी जिसमें पेमेंट गेटवे, मोबाईल प्लेटफार्म आदि शामिल हैं।

5) **ई-क्रांति** — इसमें सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी की जाती है जिसमें नियोजन, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, वित्तीय समायोजन, न्याय और सुरक्षा के क्षेत्र में शामिल

हैं जिनमें प्रौद्योगिकी का विकास किया जाना है।

6) **सभी के लिए सूचना** — इसका उद्देश्य ऑनलाईन जानकारी प्रदान करना है। इसमें एक खुले डेटा प्लेटफार्म का विकास किया जाएगा। यह जनता द्वारा सूचना के लिए एक आसान और खुली पहुँच के रूप में होगा।

7) **इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण**— देश में इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण को बढ़ावा देने हेतु इस डोमेन में “नेट शून्य आयात” का लक्ष्य रखा गया है। इस लक्ष्य में कराधान, प्रोत्साहन, पैमाने की अर्थव्यवस्था शामिल है।

8) **आई.टी. क्षेत्र में नौकरियाँ** — इसके अंतर्गत छोटे शहरों और गाँवों में लोगों को प्रशिक्षित करके आईटी क्षेत्र में नौकरियाँ देना है।

9) **प्रारंभिक फसल कार्यक्रम**— इसके द्वारा ग्रामीण स्तर पर योजनाएँ कार्यान्वित हो रही हैं जिनमें इंटरनेट के माध्यम से ग्राम स्तर पर आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराने की योजना शामिल है।

डिजीटल इंडिया अभियान के दृष्टिकोण में प्रत्येक नागरिक के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर एक उपयोगिता के रूप में, मांग करने पर शासन और सेवाओं की उपलब्धता, नागरिकों का डिजीटल सशक्तिकरण सम्मिलित है।

### डिजीटल इंडिया का कार्य-क्षेत्र

इस कार्यक्रम के कार्य-क्षेत्र में निम्नलिखित बिन्दुओं को शामिल किया गया है :

1) भारत को एक ज्ञान भविष्य के लिए तैयार करना।

2) परिवर्तन को साकार करने के लिए महसूस करना — आई.टी. (इंडियन टैलेंट) + आई.टी. (इंफोर्मेशन टेक्नोलॉजी = आई.टी. (इंडिया टुमोरो)।

3) परिवर्तन को सक्षम करने के लिए प्रौद्योगिकी को केंद्रीय बनाना।

4) एक शीर्ष कार्यक्रम बनाना जो कई विभागों तक पहुँचे।

इस अभियान का उद्देश्य देश को विज्ञान में एवं तकनीकी रूप से सुदृढ़ बनाकर विकसित देशों के बराबर लाना है। हमारे देश में अधिकांश जनसंख्या गाँव में रहती है। इस अभियान की सफलता केवल तभी संभव है जब उस अधिकांश जनसंख्या को इससे जोड़ा जाए। इस अभियान द्वारा भारत के हरेक गाँव तक इंटरनेट की पहुँच के माध्यम से लोगों को जोड़ते हुए उनके अंदर जागरूकता तथा तेजी लाना है ताकि वे उचित समय पर समस्त जानकारी प्राप्त करके इस अभियान के तहत प्रदान की जाने वाली सुविधाओं तथा सेवाओं का पूरा-पूरा लाभ उठा सकें।

### डिजीटल इंडिया अभियान के लाभ

1) डिजीटल इंडिया अभियान के तहत सरकार द्वारा प्रारंभ की गई





योजनाओं द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में डिजीटल सेवाएँ पहुँचाकर उसका लाभ ग्रामीणों को पहुँचाने का लक्ष्य है। इनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, वाणिज्य तथा अन्य क्षेत्र शामिल हैं। गाँव-गाँव तक बिजली तथा इंटरनेट पहुँचाने का कार्य किया गया है।

2) डिजीटल अभियान में वह कोई भी भुगतान शामिल है जो डिजीटल या ऑनलाईन माध्यम से किया जाता है। चूंकि कोविड-19 महामारी के दौरान कैश का प्रचलन कम हो गया। अतः डिजीटल या ऑनलाईन माध्यम से भुगतान करने को प्रोत्साहित तथा बढ़ावा दिया गया। इसमें प्रत्यक्ष रूप से मुद्रा का आदान-प्रदान नहीं किया जाता। धन का भुगतान करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का उपयोग किया जाता है जिसमें ड्राफ्ट, चैक या कैश का भुगतान करने के लिए डिजीटल या ऑनलाईन तरीके का अपनाना शामिल है।

3) इस अभियान से भ्रष्टाचार में कमी आई है। क्योंकि सभी कार्य डिजीटल रूप से किए जाते हैं अतः उनका रिकार्ड ऑनलाईन उपलब्ध होता है जिसके कारण भ्रष्टाचार तथा घूसखोरी इत्यादि संभव नहीं है।



4) डिजीटल रूप से कार्य करने में समय कम लगता है तथा घर बैठे ही ऑनलाईन सभी कार्य संभव होते हैं।

5) इस अभियान के अंतर्गत सभी डेटा आधार कार्ड से लिंक रहता है अतः आधार कार्ड के नंबर के आधार पर समस्त जानकारी उपलब्ध हो जाती है और हर स्थान पर समस्त दस्तावेज ले जाने की आवश्यकता नहीं होती।

6) सभी जगह इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध होने के कारण समय तथा धन की बरबादी नहीं होती क्योंकि किसी भी कार्य को कहीं से भी किया जा सकता है।

7) इस अभियान के अनेकों अन्य लाभ भी हैं। प्रत्येक नागरिक को उपयोगिता हेतु जीवन से मृत्यु तक अद्वितीय, आजीवन, ऑनलाईन और प्रामाणिक डिजीटल पहचान

प्रदान की गई है। उसके जीवन से संबंधित अनेकों रिकार्ड डिजीटल रूप में ऑनलाईन उपलब्ध होते हैं। मोबाइल फोन और बैंक खाते द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर डिजीटल और वित्तीय प्रक्षेत्र में भाग लेने के लिए सक्षमता प्रदान की जाती है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि डिजीटल इंडिया अभियान का उद्देश्य भारत को डिजीटल रूप से सशक्त समाज और अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करना है। इसके अनेकों लाभ हैं जिनका लाभ केवल तभी संभव है जब लोगों में जागृति आएगी। हमारा यह सपना तभी साकार हो सकता है जब सुदूर गाँव में बसी हमारी जनसंख्या डिजीटल इंडिया अभियान का महत्त्व समझेगी तथा इसका पूर्ण लाभ उठाएगी। इस अभियान के आगे बढ़ने के साथ वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश भी विकसित देशों के बराबर आ जाएगा।

# आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का योगदान



महेश एम. जयसिंघानी  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिंदी  
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा  
मध्य रेलवे, चौथी मंजिल  
न्यू एडमिनिस्ट्रेटिव बिल्डिंग,  
मुंबई-400001

आत्मनिर्भर का शब्दिक अर्थ है कि खुद पर निर्भर रहना अर्थात् अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं के बल पर करना। इसके साथ ही जिस प्रकार सागर में छोटी-छोटी नदियां आकर मिलती हैं और सागर उन्हें अपना अभिन्न अंग बना लेती है ठीक उसी प्रकार हिंदी भाषा विभिन्न भाषाओं को अपने में समाहित कर उन्हें अपना अभिन्न अंग बनाकर अपने को समृद्ध कर लेती है, लेखक द्वारा सुंदर प्रस्तुति।

हिंदी मात्र एक भाषा ही नहीं बल्कि भारत की आत्मा है। यह भारत को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है। यह विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है जो सरल और समृद्ध है। यह एक विशाल सागर की तरह है। जिस प्रकार सागर में छोटी-छोटी नदियां आकर मिलती हैं और सागर उन्हें अपना अभिन्न अंग बना लेता है। ठीक उसी प्रकार हिंदी भाषा विभिन्न भाषाओं से आए हुए शब्दों को अपने में समाहित कर उन्हें अपना अभिन्न अंग बना कर खुद को समृद्ध कर लेती है।

हिंदी भाषा जन-जन की भाषा है। देश के कोने-कोने में आम-जन अपने भावों को सरलता-सहजता से हिंदी में अभिव्यक्त कर पाते हैं। यह सरल, सहज, सुबोध एवं वैज्ञानिक भाषा है। इसमें जैसे लिखा जाता है, वैसे ही पढ़ा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि हिंदी और हिंदुस्तान एक दूसरे के पूरक हैं। मशहूर शायर इकबाल ने लिखा है : “हिंदी हैं हम वतन हैं, हिन्दुस्तां हमारा।” यह हमारे विचारों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करती है। भारतेन्दु हरिश्चंद ने लिखा है :





“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल  
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।”

अर्थात् अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार के उन्नति की जड़ है। इसके ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है। दूसरे शब्दों में कहें तो मातृभाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नतियों का आधार है। मातृभाषा के ज्ञान के बगैर अपने हृदयस्थ भावनाओं का संप्रेषण संभव नहीं है।

हिंदी की भाषा की महत्ता को ध्यान में रखते हुए ही इसे 14 सितंबर 1949 को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के संबंध में व्यवस्था की गई। 14 सितंबर को प्रतिवर्ष इस स्मृति को ताजा रखने के लिए हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी है। साथ ही, संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप है।

आत्मनिर्भर का शाब्दिक अर्थ है खुद पर निर्भर रहना अर्थात् अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं के बल पर करना। इसी प्रकार, आत्मनिर्भर भारत बनने का तात्पर्य भारत में उपभोग की जाने वाली वस्तुओं का निर्माण भारत में ही करना ताकि किसी अन्य देश पर इस देश के जरूरत की वस्तुओं के लिए निर्भर न रहना पड़े।

भारत आत्मनिर्भरता की ओर काफी तेजी से आगे बढ़ रहा है। भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सबके सहयोग की आवश्यकता है। सबके सहयोग के बिना यह संभव नहीं है।

देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए समाज का हर तबका भरसक प्रयासरत है। अनेक वस्तुओं का निर्माण देश में होने लगा है। जिस प्रकार, देश के आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए सबके प्रयास की आवश्यकता है जो प्रभावी संप्रेषण प्रदान कर सके और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के कार्यों को द्रुत गति प्रदान कर सके।

हिंदी ही वो भाषा है जो उत्पादकों को उपभोक्ताओं की बातों को समझते हुए उनके आवश्यकताओं का ठीक-ठीक आकलन करने, अपने कर्मचारियों/कामगारों को आवश्यक निर्देश देने तथा बाजार में उत्पादित वस्तुओं को बेचने के लिए बेहतर संप्रेषण का माध्यम प्रदान करती है। हिंदी विभिन्न पहलुओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित कर आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करती है। हिंदी न हो तो भारत के रास्ते में एक बड़ा भाषायी रोड़ा उत्पन्न हो जाएगा और आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना एक परिकल्पना मात्र ही रह जाएगी। इस प्रकार, आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है।





# कोविड-19 : अकेलेपन की महामारी

लेखिका ने अपने लेख में मनुष्य को किसी भी परिस्थिति में ढालने के लिए समय और दृढ़ता की आवश्यकता पर बल दिया है।



सुश्री जसमीत कौर (सीए)  
केएम-5, जे पी विश टाऊन,  
नोएडा, उत्तर प्रदेश

कोविड-19 महामारी और साथ में लॉकडाउन ने लोगों को अपने रिश्तों की स्थिति पर एक लंबी कड़ी नजर रखने के लिए मजबूर कर दिया है। कोरांटीन और अलगाव करने की तत्काल आवश्यकता को हमें मजबूरी में पूरा करते हुए, यह अहसास भी बढ़ गया है कि सोशल मीडिया पर असंख्य अनुयायी और मित्र हो सकते हैं, परंतु वास्तविक दुनिया में मित्र बहुत कम होते हैं। एक रोचक जीवन के बारे में पोस्ट को लाइक और शेयर करने की होड़ में, कहीं न कहीं जिंदगी के मुश्किल अनुभवों के बारे में रू-बरू बात करने की क्षमता कम हो गई है। वास्तविक मुलाकातों में बातचीत से भावनाओं और समस्याओं को सांझा करना कठिन हो गया है और वास्तव में जो अनुभव किया जा रहा है उसे प्रकट करने के लिए चौतरफा बेचैनी बनी हुई है — यह है महामारी द्वारा बदली गई दुनिया के बारे में बढ़ती

चिंता और अनिश्चितता। हमारे मूड और नींद के पैटर्न प्रभावित हुए हैं। पहले की तरह बाहर जाना और अपने आप को एक गहरे स्तर पर कनेक्ट करने को चुनौतीपूर्ण बना दिया है।

अलगाव के चक्र को तोड़ने का एकमात्र तरीका है कि तकनीक—आधारित ऑनलाइन माध्यमों से अलग होना, और वास्तविक दुनिया के रिश्तों पर ध्यान केंद्रित करना, इसी को ही प्राथमिकता देना और स्वयं और अपने आस-पास के लोगों के साथ फिर से जुड़ना। इसके लिए हमें अपने आप को फिर से देखने, पुनर्विचार करने और बदले हालातों के अनुकूल करने की आवश्यकता है। इस संबंध में कुछ सुझाव जो सहायक हो सकते हैं —

**स्वयं के साथ जुड़ें** — आत्म-जागरूकता आपकी आवश्यकताओं और इच्छाओं को समझने की कुंजी है। यह सुनिश्चित करने के लिए

एक सचेत और दिमागदार दृष्टिकोण विकसित करना जरूरी है कि आपके आस-पास के लोगों और आपके द्वारा अपने लिए बनाए गए जीवन से कोई डिस्कनेक्ट न हो।

**सीमाएँ खींचिए** — यहाँ 'ना' कहनी हो वहाँ 'ना' कहना सीखना और दूसरे लोगों की सेवा के लिए समय निकालना, मानवीय संबंधों का निर्माण कर सकता है। ऐसा करने का मतलब यह नहीं है कि आप अनुचित या गैर-जिम्मेदार व्यवहार करें। स्वयं को और दूसरों को भावनात्मक सहायता प्रदान करने के लिए यह ऊर्जाओं का एक आवश्यक पुनर्वितरण होगा।

**मनपसंद क्रियाएं** — अपनी रुचियों और जुनून के साथ जुड़कर खुद को वक्त दें। जब आप अपने आस-पास के लोगों के लिए काम करते हैं, तो इसका ध्यान रखें कि आपके लिये जो आवश्यक है वो आपको भी चाहिए।



**अपनों को समय दें** — समय को खोई हुई वस्तु न बनने दें। उन लोगों को प्राथमिकता देना और समय देना सीखें जिन्हें आप चाहते हैं और जिनकी आप परवाह करते हैं। कैरियर के लक्ष्य अक्सर पूर्ण रूप से संतुष्टता देने के लिए पर्याप्त नहीं होते। इसके लिए सार्थक संबंध बनाना भी महत्वपूर्ण होता है।

**वर्तमान में होना** — अपने काम और गैजेट्स से अलग होना सीखें। और एक मानसिक विराम लें। 'यहाँ' और 'वर्तमान में' उपस्थित होने का अभ्यास करें, अपने ध्यान को पुनर्निर्देशित करने के लिए याद दिलाएं कि आप कहाँ पर हो और आप एक जागरूक अवस्था में क्या कर रहे हैं।

**वर्चुअल दुनिया** — स्विच ऑन करने के लिए स्विच ऑफ करें — जैसे-जैसे वर्चुअल स्पेस और गैजेट्स हमारे भौतिक अस्तित्व के

विस्तार का हिस्सा बन रहे हैं, यह महत्वपूर्ण है कि अपने जीवन और रिश्तों की खातिर, आप इनसे अलग होना सीखें। और इसके लिए निम्नलिखित सरल टिप्स आपकी मदद कर सकती हैं —

क) गैजेट्स के उपयोग के लिए समय सीमा निर्धारित करें।

ख) खाना खाते, पढ़ते या कुछ देखते समय अपने गैजेट्स को अलग रख दें ताकि आप उस

गतिविधि पर ध्यान केंद्रित कर सकें, जिसमें आप व्यस्त हैं।

ग) अपने घर में ऐसे स्थान बनाने पर विचार करें जहाँ गैजेट्स की अनुमति नहीं हो।

घ) सोने से कम से कम एक घंटा पहले स्विच ऑफ करना सीखें ताकि आपका दिमाग आराम कर सके।

च) यदि आप अपने गैजेट्स के उपयोग को सीमित करने के लिए मुश्किल हो रही है, तो परिवार या दोस्तों की मदद लें।

किसी भी आदत को बदलने में समय और दृढ़ता तो लगती ही है। जैसे-जैसे आप स्वयं और अपने आसपास के लोगों के साथ जुड़ाव बनाने की ओर बढ़ेंगे, धैर्य रखें। परिवर्तन लाने के लिए खुद को समय दें। आपका धैर्य आपकी सफलता के लिए महत्वपूर्ण होगा।



# पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता



**विनोद कुमार शर्मा**  
वरिष्ठ लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)  
12ए, स्वास्तिक प्लाजा  
बंजारावाला, देहरादून

इस लेख में लेखक ने ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते खतरे को देखते हुए पर्यावरण संरक्षण के लिए हर समय प्रयास किये जाने पर जोर दिया है इसके साथ ही विषय की गंभीरता को दृष्टिगत रखते हुए इसके लिए जन-चेतना एवं जन-भागीदारी बढ़ाने के लिए कार्य योजना बनाकर युद्धस्तर पर अभियान चलाये जाने पर भी बल दिया है।

प्रदूषण के पर्यावरण पर पड़ने वाले घातक दुष्प्रभाव ने पूरे विश्व को चिन्तित कर दिया है। बढ़ते शहरीकरण, अर्थात् शहरी क्षेत्रों के अनियंत्रित विकास, सड़कों पर वाहनों की बढ़ती संख्या, फसलों के अवशेष जलाने से फैलने वाले प्रदूषण, कारखानों के आबोहवा को प्रदूषित करने वाले उत्सर्जन, निर्माण कार्यों से उड़ने वाली धूल, हरे पेड़ों के अन्धाधुंध कटान, आधुनिकीकरण के कारण पर्यावरण के होने वाले दोहन ने जहां एक ओर पर्यावरण में असंतुलन पैदा कर दिया है वहीं दूसरी ओर मानव स्वास्थ्य के लिए भी खतरा उत्पन्न कर दिया है। निसंदेह विकास आवश्यक है लेकिन इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि प्रदूषण के रूप में मानव जाति ने विकास की बड़ी कीमत चुकाई है। जैसे-जैसे

आर्थिक विकास होता गया दुनिया के अधिकतर देश प्रदूषण का शिकार होते गए, जिनमें भारत भी सम्मिलित है।

पर्यावरण एवं प्राणी एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। दूसरे शब्दों में यदि कहा जाए तो दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। पर्यावरण संकट के कारण विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं, पौधों एवं मानव जाति के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इस स्थिति के लिए स्वयं मानव भी कम जिम्मेदार नहीं है। जनसंख्या में वृद्धि, भूमि उपयोग में परिवर्तन के कारण कृषि भूमि का लगातार कम होते जाना तथा पर्वतीय क्षेत्रों में पर्वतों का कटान करके सड़कें आदि बनाने के कारण ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ता जा रहा है। इसी का परिणाम है कि पर्यावरण के

लगातार गर्म होने से कहीं भंयकर तूफान आ रहे हैं, कहीं शीत लहर और कहीं लू चल रही है। उक्त के साथ ही बर्फ एवं ग्लेशियर भी लगातार पिघल रहे हैं, परिणाम-स्वरूप समुद्र का जलस्तर भी बढ़ रहा है। आज ग्लोबल वार्मिंग के असर से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है। जलवायु परिवर्तन का सबसे ज्यादा असर शहरी क्षेत्रों में, गरीब बस्तियों में रहने वाले लोगों पर मौसम की मार सबसे ज्यादा पड़ रही है। शहरों में ग्रामीण क्षेत्रों से लगातार होने वाले पलायन के कारण बढ़ी भीड़ की वजह से ऊर्जा की मांग में हाल के वर्षों में काफी इजाफा हुआ है। ऊर्जा उत्पादन के स्रोतों में एक बड़ा स्रोत कोयला जनित बिजली संयंत्र हैं। इन संयंत्रों एवं पेट्रोलियम पदार्थों के उपयोग से कार्बन उत्सर्जन होता है, यह पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव



डालता है। उल्लेखनीय है कि कार्बन को सोखने की क्षमता जंगलों में होती है लेकिन वनों की कटाई में बढ़ोत्तरी करके उद्योगीकरण एवं सड़कें बनाने से पर्यावरण असंतुलन बढ़ रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि विकास कार्यों के लिए वनों का जितना भी कटान किया जाए उतना ही वृक्षारोपण अनिवार्य रूप से किया जाए। जहां तक संभव हो हरे पेड़ों के कटान पर प्रतिबन्ध लगाया जाए तथा इसके लिए जिम्मेदार लोगों के लिए कड़े दण्ड का प्रावधान किया जाए। स्वस्थ पर्यावरण के बिना जीवन चक्र

अकल्पनीय है, यह बात हम सभी के लिए समझना बहुत आवश्यक है। हालांकि हमारे देश में हाल के वर्षों में, खासकर शहरी क्षेत्रों में, लोग जलवायु परिवर्तन की चुनौती को स्वीकार करते हुए अधिक से अधिक पैदल चलने, साइकिल चलाने तथा सार्वजनिक परिवहन को अपनाने लगे हैं। लोग अब इस बात को समझने लगे हैं पर्यावरण संरक्षण एक ज्वलंत ही नहीं बल्कि अत्यन्त संवेदनशील मुद्दा है तथा हम सब की सक्रिय भागीदारी से ही इस पर विजय प्राप्त की जा सकती है। जन-चेतना एवं सक्रिय भागीदारी के बगैर हम स्वच्छ

पर्यावरण की कल्पना नहीं कर सकते। हम कम से कम इतना योगदान तो अवश्य दे सकते हैं कि अपने चारों ओर के वातावरण को साफ-सुथरा रखें। प्रत्येक छोटे-मोटे कार्य के लिए वाहन का प्रयोग करने से बचें।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते खतरे को देखते हुए पर्यावरण संरक्षण के लिए हर संभव प्रयास किए जाएं। विषय की गंभीरता को दृष्टिगत रखते हुए इसके लिए जन-चेतना एवं जन भागीदारी बढ़ाने के लिए कार्य योजना बनाकर युद्धस्तर पर अभियान चलाया जाना चाहिए।



# बलाघात



गौरव हारिथ

वरिष्ठ अनुवादक (राजभाषा)  
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक  
का कार्यालय, नई दिल्ली

उच्चारण में वाक्य के शब्द विशेष और शब्द के भी अक्षर विशेष पर दिए जाने वाला बल अथवा आघात बलाघात कहलाता है। बोलने में प्रायः वाक्य के अंशों पर बराबर बल नहीं दिया जाता। कभी वाक्य के एक शब्द पर अधिक बल होता है तो कभी दूसरे पर। इसी प्रकार शब्द की सभी ध्वनियों पर बराबर बल या जोर नहीं पड़ता। शब्द जब तक एक से अधिक अक्षरों का होता है तो इन अक्षरों पर भी बल बराबर नहीं पड़ता परंतु एक पर अधिक बल होता है तो दूसरे पर कम। यही बल बलाघात कहलाता है। भाषा की कोई ध्वनि बलाघात मुक्त नहीं होती है। जिन शब्दों, अक्षरों तथा ध्वनियों को हम बलाघात शून्य समझते हैं वे उन पर अपेक्षाकृत कम बलाघात होता है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार — बलाघात उच्चारण शक्ति की वह मात्रा है जिससे किसी भाषिक इकाई (ध्वनि, शब्द, अक्षर, वाक्य, वाक्यांश) का उच्चारण किया जाता है तथा जो उच्चारण के लिए भीतर से आती हुई तीव्रता एवं उच्चारण से सम्बद्ध माँसपेशियों की दृढ़ता पर निर्भर करती है। बलाघात के निम्नलिखित भेद होते हैं — (1) ध्वनि बलाघात; (2) अक्षर बलाघात; (3) शब्द बलाघात; और (4) वाक्य बलाघात।

(1) ध्वनि बलाघात — वह बलाघात जो किसी एक ध्वनि पर हो ध्वनि बलाघात कहलाता है। यदि हम देखते हैं कि उनमें से एक ध्वनि उस अक्षर का 'शिखर' होती है और शेष ध्वनियाँ 'ग्रहवर'। शिखर ध्वनि पर बलाघात अपेक्षा

अधिक होता है। 'जप' एक अक्षर है। इस अक्षर का शिखर इसके बीच का 'अ' है (ज+अ+प)। इस 'अ' में मुखरता आदि गुणों के साथ बलाघात आधिक्य भी है अतः वह शिखर है तथा अन्य ध्वनियाँ इसी कमी के कारण 'ग्रहवर' है।

(2) अक्षर बलाघात — वह बलाघात जो अक्षर पर हो अक्षर बलाघात कहलाता है। यदि किसी शब्द में एक से अधिक अक्षर हो तो उनमें प्रायः यह देखा जाता है कि एक अक्षर पर बलाघात सबसे अधिक होता है दूसरे पर और कम तथा तीसरे पर और भी कम होता है।

(3) शब्द बलाघात — इन सामान्य वाक्यों में सभी शब्दों पर लगभग बराबर बलाघात रहता है—

“राम ने मोहन को डण्डे से मारा।”

यह एक सामान्य वाक्य है किन्तु आवश्यकतानुसार इसके किसी भी शब्द पर अपेक्षाकृत अधिक बलाघात डाला जा सकता है और तब इस वाक्य के अर्थ में थोड़ा परिवर्तन आ जाएगा। जैसे कभी-कभी वाक्य गठन के समय वाक्य के सबसे महत्वपूर्ण शब्द को सबसे पहले रख दिया जाता है। उदाहरणार्थ —

‘मोहन को तुमने मारा’।

अथवा

‘डण्डे से तुमने मारा’।

इन दोनों वाक्यों में बल देने के लिए ‘मोहन’ और ‘डण्डे’ को वाक्य में सबसे पहले रख दिया गया है। ‘मोहन’ पर बल देने का अर्थ है मोहन को मारा और ‘डण्डे’ पर बल देने का अर्थ है ‘डण्डे’ से मारा किसी और चीज से नहीं। इस प्रकार बलाघात का सीधा सम्पर्क अर्थ से होता है थोड़ा भी हेर-फेर करने से अर्थ बदल जाता है।

**(4) वाक्य बलाघात** — सामान्य बातचीत में प्रायः सभी वाक्य बराबर होते हैं किन्तु कभी-कभी आश्चर्य,

भावावेशी, आज्ञा या प्रश्न से सम्बद्ध होने के कारण कुछ वाक्य अपने आसपास के वाक्यों से अधिक जोर देकर बोले जाते हैं। ऐसे वाक्यों में कभी-कभी बल तो कुछ शब्दों पर ही होता है। किन्तु कभी-कभी पूरे वाक्य पर भी बल दिया जाता है। आसपास के अन्य वाक्यों को तुलना में अधिक बलाघात युक्त वाक्यों के प्रयोग के कारण इन ध्वनियों को वाक्य बलाघात कहा जाता है।

राम : तुम जो भी कहो मैं नहीं जा सकता।

श्याम : वाह! यह तो अच्छी रही जिस पतरी से खाओं उसी में छेद करो और उस पर यह कहो कि जा नहीं सकता, जाओगे कैसे नहीं? (हाथ उठाकर उसे भगाने की दिशा में दिखाते हुए) भाग जाओ, नालायक कहीं के।

उपर्युक्त उदाहरण में श्याम द्वारा कहे गये वाक्यों में ‘भाग जाओ’ पर बलाघात अन्यो की तुलना में बहुत अधिक है इस प्रकार बलाघात युक्त वाक्य छोटा होता है। यदि उसमें अधिक शब्द होंगे तो बलाघात कुछ शब्दों तक ही सीमित हो जाएगा। इस प्रकार के बलाघात को यदि अलग नाम देना

चाहें तो वाक्यांश बलाघात कह सकते हैं। उपर्युक्त उदाहरण में ‘भाग जाओ’ के स्थान पर यदि ‘भाग जाओ यहाँ से’ कर दिया जाए तो बलाघात केवल प्रथम दो शब्दों तक ही सीमित हो जाएगा।

**अर्थ के आधार पर बलाघात के भेद** — अर्थ के स्तर पर बलाघात दो प्रकार का होता है —

(1) सार्थक; (2) निरर्थक।

**सार्थक अर्थ** से संबंध रखता है जिसके कारण अर्थ में विशेषता आ जाती है। इसे सोधेश्य बलाघात भी कहते हैं। ग्रीक भाषा में सार्थक बलाघात के कारण अर्थ बिल्कुल बदल जाता है। उदाहरणार्थ ‘पाली’ शब्द में यदि बलाघात पहले अक्षर पर होगा तो उसका अर्थ होगा नगर, और यदि दूसरे अक्षर पर होगा तो उसका अर्थ होगा ‘बहुत’।

**निरर्थक बलाघात** उसे कहते हैं जिसके परिवर्तन से अर्थ में कुछ अंतर नहीं पड़ता। उदाहरणार्थ — हिंदी में कमल के ‘म’ के ‘अ’ पर बलाघात कर दें तो सुनने वाले को थोड़ा अस्वभाविक तो लगेगा किन्तु अर्थ वही रहेगा।

स्रोत : अज्ञात



# स्वतंत्रता संग्राम के महानायक राम प्रसाद बिस्मिल का हिंदी अनुराग



अभय राम सिंह  
सेवानिवृत्त सहायक लेखाधिकारी  
ग्राम मोहम्मदपुर, पोस्ट मरहट (खुटहन)  
जिला जौनपुर, उत्तर प्रदेश

इस लेख में लेखक ने राम प्रसाद 'बिस्मिल' का साहित्य और जीवन हम भारत देश के युवकों के लिए एक महान प्रेरणा स्रोत है, उनके अंदर देशभक्ति का बेमिसाल जज्बा था जिसमें उन्होंने देश की सेवा करने की अदम्य इच्छा व साहस हम सभी भारतीय नागरिकों के लिए एक संदेश दिया है।

राम प्रसाद 'बिस्मिल' उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जिले में जन्मे, काकोरी काण्ड के नायक, अनन्य बलिदानी एवं क्रांतिकारी साहित्यकार थे। वे एक कवि, शायद, लेखक और अनुवादक भी थे। उन्होंने सर्वप्रथम 'निहिलिस्ट रहस्य' नामक बांग्ला पुस्तक का हिंदी में अनुवाद किया। 'मन की लहर' एक अन्य पुस्तक थी जिसका प्रकाशन 'सुशील पुस्तक माला' के अंतर्गत किया। उन्होंने 'केथराइन' (स्वतंत्रता की देवी) एवं तदुपरान्त 'स्वदेशी रंग' पुस्तक लिखी। उन्होंने महर्षि अरविन्द द्वारा लिखित बांग्ला पुस्तक 'योगिक साधना' का भी हिंदी में अनुवाद किया। उनके समग्र क्रांतिकारी जीवन में हमें एक सुस्पष्ट वैचारिक चिन्तन परिलक्षित होता है। अपनी मातृभूमि की मुक्ति की छटपटाहट उनके कृत्यों के अतिरिक्त उनके द्वारा रचित साहित्य में सुस्पष्ट दिखता है।

उनके गीतों और गज़लों का मुख्य स्वर आत्मबलिदान और एक देश भक्त की दुश्मन के प्रति गर्जना के रूप में आलोकित है। उन्होंने भरी अदालत में स्पेशल मजिस्ट्रेट अइनुद्दीन को संबोधित करके एक गज़ल सुनवाई जो निम्नवत् थी :-

तेरी जुल्म की हस्ती को ए जालिम! मिटा देंगे,

जुबाँ से जो निकालेंगे, वो हम करके दिखा देंगे।  
अगर कुछ भेंट आजादी की देवी हमसे माँगेगी,  
समझकर सब जहे किस्मत हम अपना सर चढ़ा देंगे।

वे देश के युवाओं का आह्वान करते हुए कहते हैं :-

भारत के शेरों जागो, बदला है अब जमाना,  
प्यारे वतन को यारो आजाद है कराना।  
बिस्मिल यही समय है, अब कर लो देश सेवा,  
दो दिन की जिन्दगी है, इसका नहीं ठिकाना।

"बोलशेविकों की करतूत" में उन्होंने अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम को निम्न शब्दों में इंगित किया है :-

हाय! जननी मातृभूमि, छोड़कर जाते हैं हम,  
बस नहीं चलता है, रह-रह करके पछताते हैं हम।  
स्वर्ग के सुख से भी ज्यादा, सुख मिला हमको यहाँ,  
इसलिए तजते इसे हर बार शर्माते हैं हम।  
शीघ्र करके यत्न, ए निज देश आकर तुझे,  
दुश्मनों से छीन लेंगे, खौफ कब खाते हैं हम।

अपनी 'चिंगारियाँ' कविता में बिस्मिल आत्मा के अमृतत्व के दर्शन को समझ रखकर बलिपथ के राहियों को निम्नवत् समझाते हैं :-

होना तो भयभीत मृत्यु से कायरता है, दुःख है, हँसकर चढ़ना बलिवेदी पर निर्भयता है, सुख है। क्यों होते भयभीत मृत्यु से, आत्मा अजर-अमर है, बलिवेदी पर चढ़ो वीर! जयमाल तुम्हारे सर है।

जब चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह तथा अन्य क्रांतिकारी उनको जेल से छुड़ाने में विफल रहे तब उन्होंने 'अवध' अखबार द्वारा क्रांतिकारियों को निम्न पंक्तियों के माध्यम से उन्हें संदेश पहुँचाया था :—

मिट गया मिटने वाला, फिर सलाम आया तो क्या,  
दिल की बरबादी के बाद, उनका पयाम आया तो क्या।

गुलाम मातृभूमि के दर्द को गहराई से चिन्तन करते हुए उन्होंने निम्न पंक्तियाँ उकेरी :—

जुदा मत हो मेरे पहलू से, ए दर्द वतन हरगिज,  
न जाने बाद मुर्दन, मैं कहाँ और तू कहाँ होगा।

उनकी कविताओं की एक पुस्तक 'क्रांति गीतांजलि' में

बिस्मिल जी सहृदय कामना करते हैं :—

जगदीश! यह विनय है, जब प्राण तन से निकले,  
प्रिय देश! देश! रटते यह प्राण तन से निकले।  
देशोपकार करते, मन मातृभूमि करते,  
जय जय स्वदेश रहते यह प्राण तन से निकले।

वे देश के वैभवशाली अतीत को याद करते हुए तात्कालिक दशा पर बहुत दुःखी होकर भी एक आशा की किरण उनकी निम्न पंक्तियों में समाहित है :—

नए पौधे उगे, शाखें फलें—फूलें सभी बिस्मिल,  
घटा से प्रेम का अमृत अगर बरसे तो यूँ बरसे।

अपनी फाँसी होने के तीन दिन पूर्व तक वे अपनी आत्मकथा के लेखन में व्यस्त रहे जो उनके अदम्य साहस और वैचारिक दृढ़ता का स्पष्ट प्रमाण है। ध्यान रहे उन्हें 19 दिसंबर, 1927 को फाँसी के तख्त पर लटकाया गया था। अपनी आत्मकथा के अन्त में



उन्होंने देश के लोगों से मिलकर रहने की कामना करते हुए उकेरा है :—

मरते बिस्मिल, रोशन, लहरी, अशफाक अत्याचार से,  
होंगे पैदा सैकड़ों, इनके रुधिर की धार से।

बिस्मिल जी के मन में जन्म जन्मान्तर तक देश की सेवा के लिए बार—बार जन्म लेने की आतुरता थी जिसको उन्होंने अपनी पंक्तियों में निम्नवत् प्रतिबिंबित किया है :—

निभाऊंगा प्रतिज्ञा मैं ए अपने प्राण से प्रण से,  
उठेंगी देश सेवा की उमंगें देह से, मन से।  
मरण उपरान्त भी यदि जन्म लूँ तो यहीं आकर,  
कि जिससे देश सेवा होए नए तन से, नए मन से।  
ए मेरे चक्षु देखेंगे जयी भारत के गौरव को,  
जो पाएगा एक दिन मुक्त होकर अरि के बंधन से।  
ए मेरे कान भारत का सुयश सुनकर खुश होंगे,  
मेरा मुख जग को भर देगा उसी के यश के गायन से।

निश्चय ही राम प्रसाद 'बिस्मिल' का साहित्य और जीवन हम भारत देश के युवकों के लिए एक महान प्रेरणा स्रोत है। उनमें आग है, देश भक्ति का बेमिसाल

जज्बा है और एक ऐसी तड़प है जो अतुलनीय है। उनकी कविताओं में उकेरित जन्म जन्मान्तर देश की सेवा करने की अदम्य इच्छा व साहस हम सभी भारतीय नागरिकों के लिए एक संदेश है। इनका लेखन मात्र क्रांतिकारियों के लिए ही नहीं वरन् सारे देशवासियों के लिए एक अपेक्षित वरदान है। एक महान क्रांतिकारी के साथ ही वे एक कवि, शायर, लेखक और अनुवादक के रूप में अवतरित हुए थे जो राजभाषा हिंदी के प्रचार—प्रसार की निरन्तरता बनाए रखने में सक्षम रही तथा देश की स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका को विभूषित करने में तत्पर रही। मैं कवि तो नहीं, फिर भी मेरे मन में स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखने की दृष्टि से राजभाषा की निम्न पंक्तियाँ प्रस्फुटित हो उठीं :—

मेरे लाल तूँ निडर होकर जी,

तूँ जहाँ—जहाँ चलेगा मेरा साया भी साथ होगा।

निश्चय ही स्वतंत्रता की निरन्तरता बनाए रखने में राजभाषा हिंदी का योगदान चिर स्थायी रहेगा। हम आशान्वित हैं कि हिंदी भारत के हिंदी महोत्सव की निरन्तरता को अक्षुण्ण रखने में सदा सक्षम रहेगी।





# यमुनोत्री व गंगोत्री धाम के दर्शन

लेखक ने अपने लेख में उत्तराखण्ड में हिमालय की उत्तंग हिम शिखरों के मध्य स्थित यमुनोत्री व गंगोत्री धाम देश के चार धामों के विशेष महत्व को पाठकों के लिए अपनी कलम के माध्यम से प्रस्तुत किया है।



**ललित कुमार वर्मा**  
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा  
रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली-110023

हिमालय की उत्तंग हिम शिखरों के मध्य स्थित यमुनोत्री व गंगोत्री धाम देश के चार धामों में विशेष महत्व रखते हैं। चारधाम यात्रा का प्रथम तीर्थ यमुनोत्री धाम माना जाता है। यमुनोत्री धाम के कपाट खोलने का मुहुर्त यमुना जयंती के अवसर पर तीर्थ पुरोहित तय करते हैं। इसी दिन मां यमुनोत्री के शीतकालीन प्रवास स्थल खुशीमठ से यमुना की डोली का शनि महाराज की अगुवाई में यमुनोत्री के लिए रवाना होने का भी कार्यक्रम तय किया जाता है। अक्षय तृतीया की सुबह माता यमुना की डोली खरसाली से यमुनोत्री को रवाना होती है। इसमें शनिदेव की डोली भी शामिल होती है। यमुनोत्री धाम के लिए जानकी चट्टी से पैदल यात्रा करनी पड़ती है। इसमें ढाई-तीन से पांच घंटे

का समय लगता है। यमुनोत्री धाम पहुंचने पर हवन यज्ञ होता है व पूजा-अर्चना के साथ कपाट खोलकर मां यमुना की मूर्ति की स्थापना होती है। यमुना सूर्य की पुत्री व शनि महाराज की बहिन मानी जाती है। यमुना का उद्गम स्थल कालिंदी ग्लेशियर यमुनोत्री धाम से आठ कि.मी. आगे है।

प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु यमुनोत्री धाम में पहुंचकर पूजा-अर्चना करते हैं। हरिद्वार से देहरादून, बडकोट होते हुए जानकी चट्टी तक बस से यात्रा पूरी करने के उपरांत शेष पांच कि.मी. की दूरी पैदल तय करनी पड़ती है। इसमें घोड़े-खच्चर या कंडी की मदद भी ली जा सकती है। जानकी चट्टी से यमुनोत्री तक पांच कि.मी. लम्बे पैदल मार्ग को यमुना पथ के नाम से जाना जाता है। भैरव मंदिर से

लेकर यमुनोत्री तक रास्ता काफी संकरा है। यहां खाने-पीने व रहने के लिए होटल व धर्मशालाओं की सुविधायें भी मौजूद हैं। यमुनोत्री मंदिर की व्यवस्थाओं का संचालन पंच पंडा समिति व यमुनोत्री मंदिर करती है।

भैयादूज के अवसर पर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पारम्परिक विधि-विधान से यमुनोत्री धाम के कपाट बंद होने की प्रक्रिया शुरू होती है। इस अवसर पर सुबह खरसाली से शनि महाराज की डोली अपनी बहिन देवी यमुना को लेने के लिए यमुनोत्री धाम पहुंचती है जिसके बाद यमुना जी का मुकुट उतारकर यमुनोत्री धाम के कपाट बंद किये जाते हैं। तत्पश्चात पारम्परिक वाद्य यंत्रों की मधुर थाप के साथ मंदिर से शनिदेव की डोली की अगुवाई में यमुना की डोली रवाना होती है। शाम को



खुशीमठ में यमुना मंदिर का दृश्य

माँ यमुना की डोली खुशीमठ (खरसाली) पहुंचती है। यहां खरसाली के यमुना के मंदिर को भव्य रूप से सजाया जाता है व ग्रामीण भव्य स्वागत करते हुए चौलाई के लड्डू व पकवान बनाकर मां को भोग लगाते हैं। इस अवसर पर दीपावली जैसा उत्सव रहता है। इसके बाद छः माह तक देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालु मां यमुना के दर्शन खुशीमठ (खरसाली) में ही करते हैं। भैयादूज के अवसर पर ही केदारनाथ धाम के कपाट बंद होते हैं।

बैसाखी पर मां यमुना के शीतकालीन प्रवास खरसाली गांव में समेश्वर देवता (शनि देव) मंदिर

के कपाट खोले जाते हैं। शनिदेव को मां यमुना का भाई माना जाता है, जिन्हें गीठ पट्टी क्षेत्र के ग्रामीण समेश्वर देवता के रूप में पूजते हैं। कपाट खोलने के लिए शुभ मुहूर्त पर सुबह साढ़े पांच बजे विधि विधान के साथ मंदिर के कपाट पुरोहित खोलते हैं व देवता के प्रतीक शिरोही में यमुना नदी से जल लाकर उसे सिंहासन पर स्थापित करते हैं। दोपहर में समेश्वर देवता की डोली मंदिर परिसर में आकर सुख समृद्धि व खुशहाली का आशीर्वाद देती है। खरसाली गांव में समेश्वर देवता का प्राचीन पांच मंजिला मंदिर है जिसके कपाट शीतकाल में बंद किये जाते हैं।

गंगोत्री धाम के कपाट खोलने का निर्णय नवरात्र के पहले दिन तीर्थ पुरोहित पंचांग गणना के बाद मां गंगा के शीतकालीन प्रवास मुखवा में करते हैं दरअसल गंगोत्री से 28 कि.मी. पहले मुखवा मां गंगा का मायका माना जाता है। ग्रामीण गंगा को अपनी बेटी मानते हैं।

मां गंगा की डोली शीतकालीन प्रवास मुखवा से पारम्परिक वाद्य यंत्रों की मधुर धाप के साथ गंगोत्री के लिए अक्षय तृतीया से एक दिन पहले निकलती है। तीस कि.मी. की इस पैदल यात्रा में रवाना होने से पहले सुबह विशेष पूजा-अर्चना के साथ गंगा भोग मूर्ति का श्रृंगार कर उसे डोली में विराजमाल कर मुखीमठ मंदिर से बाहर निकाला जाता है। इस अवसर पर पांचों पांडव भी अपने पश्वा पर अवतरित होकर गंगा को ग्रीष्मकालीन पडाव गंगोत्री के लिए विदाई आयोजन में शामिल होते हैं। मुखवा में इस अवसर पर विशेष यज्ञ का भी आयोजन होता है। गांव से बाहर रह रहे प्रवासी, बाहर ब्याही औरतें और निचले इलाकों में रह रहे ग्रामीण भी इस अवसर पर मुखवा लौटकर मां गंगा की विदाई में





चंडी देवी मंदिर का दृश्य

शामिल होते हैं। इस दौरान मुखवा समेत हर्षिल, धराली व बगोरी के ग्रामीण मां गंगा की भोग मूर्ति को पुष्प चढ़ाते हैं। मुखवा से मार्कंडेय मंदिर, देवी मंदिर व जांगला होते हुए इसी दिन मां गंगा की डोली रात्रि विश्राम हेतु भैंरो घाटी पहुंचती है और यहां भैरव घाटी के भैरव मंदिर में विश्राम करती है। यहां एक दिन के विश्राम के पश्चात् अगली सुबह यानि अक्षय तृतीया को गंगा के पुजारी सेमवाल परिवार भैरोघाटी से मां गंगा की डोली लेकर दोपहर साढ़े ग्यारह बजे तक गंगोत्री पहुंचते हैं। रोहिणी नक्षत्र में गंगोत्री के कपाट

खोले जाते हैं व ग्रीष्मकालीन प्रवास के लिए भोगमूर्ति को मंदिर में प्रतिष्ठित किया जाता है। इस मौके पर हवन इत्यादि भी किया जाता है। गंगोत्री में प्रतिदिन गंगा

लहरी और गंगा सहस्रनाम पाठ भी होता है।

गंगोत्री धाम गंगा के उद्गम स्थल गोमुख से लगभग 18 कि.मी. पहले है। वर्तमान में मुखवा गांव के सेमवाल जाति के पांच तोकों के पांच हजार से अधिक सेमवाल ब्राह्मण, गंगोत्री स्थित मंदिर एवं मुखवा स्थित शीतकालीन पूजा स्थल में मां गंगा की पूजा-अर्चना के साथ-साथ मंदिर प्रबंधन एवं संचालन का दायित्व भी निभाते हैं।

अन्नकूट पर्व के शुभ मुहूर्त पर गंगोत्री धाम में सुबह मां गंगा के मुकुट को उतारा जाता है जिसके बाद भोगमूर्ति डोली में रखी जाती है। श्रद्धालु मां गंगा की भोग मूर्ति के दर्शन करते हैं। दोपहर अमृत



प्राचीन भैरव मंदिर का दृश्य



बेला, अभिजीत मुहूर्त में मां गंगा की डोली गंगोत्री मंदिर में लाई जाती है। इसके बाद कपाट बंद होने की प्रक्रिया शुरू होती है। इस दौरान श्रद्धालु मां गंगा की जयकारे लगाते हैं। तीर्थ पुरोहित विशेष पूजा व गंगा लहरी का पाठ करते हैं। तत्पश्चात् ढोल-दमाऊ की मधुर थाप के साथ मुखीमठ (मुखवा) के लिए तीर्थ पुरोहित मां गंगा की डोली लेकर रवाना होते हैं। रात्रि विश्राम मुखीमठ से चार कि.मी. पहले मार्कण्डेय स्थित चंडी देवी मंदिर में होता है। डोली यात्रा भैरोघाटी स्थित भैरव मंदिर व जांगला होते हुए मार्कण्डेय पहुंचती है। यह मंदिर एक शिला के ऊपर है। यहां रात्रि भर कीर्तन भजन व जागरण होता है। माना जाता है कि चंड व मुंड नामक दैत्यों का वधकर माता चंडी ने उन्हें इसी शिला के नीचे दबाया था।

गंगोत्री धाम के कपाट बंद होने के समारोह में यमुना घाटी क्षेत्र के आराध्य शेषनाग देवता की डोली भी शामिल होती है। इस परम्परा के अनुसार देवता की डोली का कुपडा गांव से गंगोत्री धाम को रवाना होने से पहले यहां शेषनाग

मंदिर में धार्मिक अनुष्ठान कर विधिवत पूजा-अर्चना होती है। रात्रि विश्राम के लिए उसी देवता की डोली काशी विश्वनाथ मंदिर में रुकती है। दीपावली के दिन गंगोत्री धाम पहुंचती है जहां मां गंगा के दर्शन के साथ ही विशेष पूजा-अर्चना होती है। गंगोत्री धाम के कपाट बंद होने पर मां गंगा की डोली के साथ शेषनाग देवता की डोली भी लौटती है। कई अन्य गांवों से भी देव डोलियां इस अवसर पर गंगोत्री पहुंचती हैं।

गंगोत्री के कपाट बंद होने के बाद गंगा की डोली अपने शीतकालीन प्रवास स्थल मुखवा में विराजमान होती है। शीतकालीन प्रवास पर मां

गंगा के पहुंचने पर ग्रामीण स्वागत में परम्परागत लोक-नृत्य करते हैं। मुखवा गांव में गंगा डोली पहुंचने पर पांडव नृत्य इत्यादि का आयोजन कर मां गंगा व पांडव पश्वाओं से श्रद्धालु आशीर्वचन लेते हैं। गांव में सुख-समृद्धि व अच्छी फसल के लिए कामना की जाती है। नृत्य में ढोल व दमों की विशेष थाप पर पांडव अपने पश्वाओं पर अवतरित होते हैं। प्रत्येक पांडव के लिए अलग विशेष थाप होता है जिसके बाद वे अपने पश्वा पर अवतरित होते हैं। इस अवसर पर विभिन्न तालों पर वादक महाभारत के कई प्रसंगों का भी गायन करते हैं।



पूजा-अर्चना में भाग लेते श्रद्धालुगण

# बिंदस जिंदगी

लेखक ने बिंदस जिंदगी यानि संतोष ही वह भावना है जो हमेशा वर्तमान में बनाए रखता है और आनन्द की अनुभूति कराता है, के बारे में जानकारी दी है।



संजीव कुमार गिरी  
डाटा प्रविष्टि प्रचालक  
कार्यालय महालेखाकार (ले.प.)-II  
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई-600018

इस संसार के सभी वस्तुओं को दो भागों में बांट सकते हैं। एक तो वो जिसे हम जानते हैं अर्थात् ज्ञात और दूसरा जिसे हम नहीं जानते अर्थात् अज्ञात। और अभी तक जितना ज्ञात है वो अज्ञात की तुलना में बहुत ही कम है। इसी क्रम में जीवन भी आता है। हम कहाँ से आते हैं और पुनः कहाँ चले जाते हैं, यह एक रहस्य ही तो है। भले ही अभी तक इस संबंध में कुछ स्पष्ट नहीं हैं पर कुछ तो है, क्योंकि हर परंपरा और धर्म यह कहते आए हैं कि हमसे ऊपर कोई है। जीवन की धारा हमेशा अपने रफ्तार में चलती है। हमारे चाहने या न चाहने से इसके ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ता। अतः हमें हमेशा इसके साथ संतुलन कायम करने की कोशिश करनी चाहिए। इस कोशिश में सबसे अहम् भागीदारी हमारे अंतःकरण की होती है। अंतःकरण के भूमिका का अर्थ यह नहीं कि हम क्या चाहते हैं, बल्कि यह है कि हम क्या सोचते हैं।

जीवन में जिस लक्ष्य को हम मंजिल मान कर सफर शुरू करते हैं वहाँ पहुँच कर उसे एक पड़ाव के रूप में पाते हैं और पुनः वहाँ से नए पड़ाव की ओर चल पड़ते

हैं। इन दो पड़ावों के बीच के सफर का आनंद लेना ही जीवन है। क्योंकि जिस दिन हम अपनी जिंदगी खुलकर जी लेते हैं वही दिन हमारा है, बाकी तो सिर्फ कैलेंडर की तारीखें हैं। इसे अन्य प्रकार से इस तरह भी समझ सकते हैं कि हमारे जन्म के साथ ही हमें अपना लक्ष्य दे दिया जाता है – वो है मृत्यु जिसकी ओर हम पल-पल बिना रुके अग्रसर रहते हैं और मनोरंजन या आत्मिक शांति के लिए खुद से वैकल्पिक पड़ाव बनाते रहते हैं पर अपनी वास्तविक यात्रा जारी रहती है।

हमें इस जिंदगी के सफर के दौरान खुद को बेहतरीन इंसान के रूप में निखारना चाहिये और आत्मिक संतोष भावना अनुभव करना चाहिए कि – “जो प्राप्त है वो पर्याप्त है।” क्योंकि संतोष ही वह भावना है जो हमें हमेशा वर्तमान में बनाए रखता है और आनंद की अनुभूति कराता है। ऐसा करना कोई साधना से कम नहीं है। जब से मैंने संतोष रूपी धन को पाया या यूँ कह लें कि अनुभव किया है जिंदगी मानों बदल सी गई है। यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है, और खुद की जिंदगी



में इतना तो संघर्ष तथा अनुभव करना बनता है कि उदाहरण के लिए खुद को पेश कर सके। ऐसा होने पर हम हर कदम समझ और आनंद के साथ बढ़ाते हैं। किसी ने क्या खूब कहा है —

*“एक शाम हम शहर को निकले, दिल में कुछ अरमान थे, एक तरफ थी झाड़ियाँ, एक तरफ श्मशान थे। पाँव तले एक हड्डी आई, उसके यही बयान थे, चलने वाले संभलकर चलना, हम भी कभी इंसान थे।”*

सच कहा गया है कि जिंदगी एक खूबसूरत तितली की तरह है, जिसके पकड़ने से तमाम रंग हाथ पर रह जाते हैं और तितली दूर आसमान में जा चुकी होती है, शायद कभी न लौटने के लिए। ये यादों के रंग जो हम सब मिलकर सजाते या बिताते हैं वे हमेशा के लिए एक सुखद याद बनकर रह जाती है। इसलिए कहते हैं कि

“जीवन मिलना भाग्य की बात है, मृत्यु होना समय की बात है, पर मृत्यु के बाद भी लोगों के दिलों में जीवित रहना कर्मों की बात है।”

हमें याद रखना चाहिए कि जरूरत तो जीने से है और जीने पर इच्छाएं हैं। मगर ऊपरवाला तमन्ना देता है तो भरोसा भी देता है। और भरोसा ही दिन—रात गुजार देने का सहारा है। इसमें किसी का सहयोग साथ हो सकता है तो किसी के यादों का साथ भी काफी होता है।

*“बहुत दिया देने वाले ने,  
तेरे आंचल ही में न समाये तो क्या कीजे।  
बीत गये हैं जैसे दिन—रैना,  
बाकि भी कट जाए दुआ कीजे।।”*

*“जिंदगी जिओ बिंदास”*





# वेलू नाचियार – भारत की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी



श्रीमती वी. राधा

सहायक पर्यवेक्षक

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II  
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई–600018

हम आज़ादी का अमृत महोत्सव (75 साल) मना रहे हैं, मैं इस संदर्भ में स्वतंत्रता संग्राम में अपना बहुमूल्य योगदान देने वाली भारत की प्रथम महिला नायिका के जीवन के बारे में लिखना चाहूंगी जिनकी कथा अनसुनी है। अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने वाली यह महिला, तमिलनाडु के शिवगंगा राज्य की रानी वेलु नाचियार थी, जिन्होंने न केवल लड़ाई लड़ी बल्कि 1780 में ही देश पर जीत हासिल की और 10 सालों तक शासन भी किया।

वेलु नाचियार का जन्म 3 जनवरी 1730 को तमिलनाडु के रामनाथपुरम में हुआ था। राजा सेल्लमुत्तु सेतुपति और रानी सकंधिमुथथा की इकलौती बेटी थी, बेटा ना होने की वजह से वेलु नाचियार का पालन-पोषण एक राजकुमार की तरह किया गया।

उन्होंने बचपन से ही घुड़सवारी, तीरंदाजी, तलवारबाजी और मार्शल आर्ट्स जैसे सिलंबम (छड़ी की लड़ाई) में महारथ हासिल की। अस्त्र-शस्त्र के साथ ही वेलु नाचियार ने भाषाओं की भी शिक्षा ली, अपनी मातृभाषा तमिल के साथ फ्रेंच, इंग्लिश, तेलुगु, कन्नड़ और उर्दू में भी पारंगत थी।

सोलह वर्ष की आयु में वेलु नाचियार का विवाह शिवगंगा के

राजा मुथुवदुगनाथ पेरिय उदय थेवर से हुआ। करीब 20 वर्षों तक रानी वेलु नाचियार और राजा उदय थेवर ने शिवगंगा पर राज किया, इसी बीच रानी वेलु ने एक सुन्दर राजकुमारी “वेल्लाची” को जन्म दिया, लेकिन खुशियों के यह पल ज्यादा दिन नहीं चल सके।

एक दिन, 1772 में ‘ईस्ट इंडिया कंपनी’ और आर्कोट के नवाब की सेनाएं शिवगंगा की सीमा पर आ गईं। राजा थेवर अपने राज्य की रक्षा करते हुए शहीद हो गए और शिवगंगा पर अंग्रेजों ने कब्ज़ा कर लिया, रानी वेलु अपनी बेटी के साथ ‘डिंडीगुल’ के पास ‘विरुपथी’ भाग गयी, जहाँ उन्होंने पालयकार गोपाल नायकर के संरक्षण में आठ साल तक शरण ली। इन वर्षों में वेलु नाचियार ने मैसूर के शासक हैदर अली की मदद से अपनी खुद की सेना गठित की और गोपाल नायकर एवं मरुथु भाईयों के साथ





मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया।

उन्होंने युवतियों की एक सेना बनाई और उनका नाम 'उदियाल' रखा क्योंकि एक बहादुर महिला 'उदियाल' ने शिवगंगा से भागते समय उनकी जान बचाई थी। उसने इन महिलाओं को विभिन्न प्रकार के युद्धों में प्रशिक्षित किया। इस सेना की सेनापति 'कुयली' थी।

सेना के साथ, रानी वेलु ने धीरे-धीरे शिवगंगा प्रांत को फिर से जीतना शुरू कर दिया और अंततः अपने किले पर पहुँच गयी, जहाँ अंग्रेज छिपे रहते थे। किले पर कब्जा करना आसान नहीं था और उनके पास किले को तोड़ने के लिए घेराबंदी के उपकरण भी नहीं थे। उस समय रानी वेलु को अंग्रेजों के बारूद के ठिकाने

का पता चला। उन्होंने तुरंत अपनी एक विश्वासपात्र सेविका 'उदियाल' सेना की सेनापति 'कुयली' को उसे नष्ट करने का आदेश दिया।

कुयली ने कुछ अन्य महिला सैनिकों के साथ पूजा करने के बहाने ग्रामीण महिलाओं के वेश में किले में प्रवेश किया। जब गोला-बारूद के ठिकाने देखे, बिना एक पल की देरी के, उसने मंदिर में रखा घी अपने शरीर पर डाला और खुद को आग लगा ली। फिर हाथ में तलवार लेकर, गोला-बारूद के ठिकाने की ओर बढ़ी, उसके द्वार की रखवाली करने वाले सिपाहियों के सिर को काट दिया और स्वयं उसमें कूदकर जल गई। मातृभूमि की रक्षा के लिए कुयली ने आत्म-बलिदान दे दिया।

एक भयंकर विस्फोट के साथ गोला-बारूद के ठिकाने को जला दिया। इस अचानक हलचल से अंग्रेज स्तब्ध रह गए। यही वह क्षण था जिसका रानी वेलु नाचियार को इंतजार था। उनकी सेना बिजली की गति से किले में प्रवेश करके भयंकर युद्ध किया और जीत हासिल किया। दस साल तक रानी वेलु नाचियार ने शिवगंगा राज्य पर राज किया। रानी वेलु ने 25 दिसम्बर 1796 को 66 वर्ष की आयु में अंतिम साँस ली।

रानी वेलु नाचियार के शक्तिशाली व्यक्तित्व के कारण उन्हें दक्षिण भारत में 'वीरमंगै' कहा जाता है। उनकी याद में 31 दिसम्बर, 2008 में भारत डाक टिकट जारी किया गया था। तमिलनाडु की स्वर्गीय मुख्यमंत्री जे. जयललिता ने 18 जुलाई 2014 को शिवगंगा में वीरमंगै रानी वेलु नाचियार स्मारक का उद्घाटन किया और रानी वेलु की छः फुट की कांस्य प्रतिमा भी बनाई गई थी। यह भी घोषणा की गई थी कि हर साल 3 जनवरी को उनकी जयंती के रूप में मनाया जाएगा।

हमें गर्व महसूस करना चाहिए कि भारत की स्वतंत्रता के आंदोलन में लड़ने वाली पहली महिला महँ वीरमंगै वेलु नाचियार, तमिलनाडु की थी।

# (एन.ई.पी.) नई शिक्षा नीति – भारतीय परिप्रेक्ष्य में वर्तमान शिक्षा नीति की समीक्षा



सुश्री सुमेधा अमर  
वरिष्ठ उप महालेखाकार (ए.एम.जी. V/प्रशा.)  
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)  
हरियाणा, चण्डीगढ़

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अगस्त 2020 में नई शिक्षा नीति को लेकर राष्ट्र को संबोधित किया था। शिक्षा संस्कृत की शिक्ष धातु से बना शब्द है। इसका अर्थ है अध्यापन व अध्ययन करना। भारत भू-मंडलीकरण के बदलते परिवेश में एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति व जन आधारित अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य रखता है। इसमें शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होगा। शिक्षा के ढांचे की संरचना से भारत की जनता का मानसिक व आध्यात्मिक विकास प्रगति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाएगा।

इस नीति को समझने के लिए शिक्षा क्षेत्र में भारत की पूर्व नीतियों का थोड़ा ब्यौरा आवश्यक है। स्वतंत्रता उपरांत अनेक आयोग व समितियां बनीं। 1968 व 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति विकसित की गई। 1992 में 1986 की नीति में संशोधन हुआ। इसमें आपरेशन ब्लैकबोर्ड बच्चों के स्कूलों में सकल एनरोलमेंट उद्देश्यों को बढ़ाने का प्रयास, इग्नू इंटरनेट (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय) आदि की स्थापना की गई। 2009 में शिक्षा के मौलिक अधिकार को संवैधानिक दर्जा दिया गया।

एन.ई.पी. द्वारा केंद्र सरकार ने पूर्वकालीन शिक्षा नीतियों की त्रुटियों व विषमताओं को समाप्त करने के लिए अनेक क्रांतिकारी सुधारों का सृजन किया है।

सर्वप्रथम, मानव संसाधन मंत्रालय कर दिया गया है एक ऑनलाइन पोर्टल द्वारा इस नीति के क्रियान्वयन की निगरानी की जाएगी। माई एन.ई.पी. द्वारा सभी हितधारकों जैसे शिक्षक, शिक्षाविद, शिक्षा पेशेवरों आदि से प्रारंभिक मसौदे पर सुझाव व टिप्पणियां आमंत्रित किए गए हैं। साथ ही प्रत्येक चरण का समयबद्ध क्रियान्वयन व संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही सुनिश्चित की जाएगी।

यह नीति श्री के. कस्तूरीरंगन, पूर्व इसरो अध्यक्ष के नेतृत्व वाली समिति ने बनाई है। छात्रों को 5+3+3+4 शैषिक संरचना में शिक्षित किया जाएगा क्रमशः प्री-स्कूल, प्रिपेटरी, माध्यमिक स्नातक स्तर। बुनियादी शिक्षा व संख्यात्मक ज्ञान के राष्ट्रीय मिशन के तहत, कक्षा 5 तक बच्चों के मूल ज्ञान पर जोर दिया जाएगा। कक्षा 6 से कौशल की शिक्षा दी जाएगी व कोडिंग सिखाई जाएगी। तनाव कम करने के लिए बोर्ड परीक्षा, दो चरणों में व बहुविकल्पीय प्रश्नों के माध्यम से लेने



का विचार है। स्कूल बैग का वजन, बच्चे के वजन का 10 प्रतिशत होगा व प्रत्येक विद्यालय में डिजीटल वेंडिंग मशीन होगी।

विकलांग बच्चों को पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में स्थान, शिक्षकों का समर्थन व उपयुक्त संसाधन प्रदान किए जाएंगे। केंद्र द्वारा कन्याओं व ट्रांसजेंडर छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के लिए जेंडर इन्क्लूजन फंड का गठन किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा, शोध व प्रशिक्षण अनुसंधान परिषद स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा तैयार करेगा।

शिक्षक उचित शिक्षा प्रणाली का दूसरा महत्वपूर्ण हिस्सा है। इनकी नियुक्ति पारदर्शी व पदोन्नति कार्य प्रदर्शन के आकलन के बल पर की जाएगी। इनके लिए राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण परिषद, पाठ्यक्रम का सृजन करेगा। इनका मूल्यांकन कौमन एप्टिट्यूड टेस्ट व विषयों में परीक्षा लेकर किया जाएगा। इनके लिए 4 वर्ष की बी.एड शिक्षा में स्नातक डिग्री आवश्यक होगी व इनके मूल्यांकन के मानक निर्धारित किए जाएंगे।

उच्च शिक्षा में प्रविष्टि व निकासी के लचीले नियम बनेंगे व पढ़ाई की समय-सीमा के अनुसार डिप्लोमा डिग्री दी जाएगी। एकेडेमिक क्रेडिट बैंक से विभिन्न उच्च संस्थानों के अंको को संग्रहित करके डिग्री दी जाएगी। 2040 तक आई.आई.टी. व आई.आई.एम. को मेरु (बहुविषयक शिक्षा व शोध महाविद्यालय) जिनमें मानविकी (Humanities) विषय भी पढ़ाए जाएंगे, बनाया जाएगा।



राष्ट्रीय उच्च शिक्षा आयोग मेडिकल/चिकित्सा व कानून के अतिरिक्त सभी उच्च शिक्षा क्षेत्रों में एकल निकाय होगा। इसमें चार वर्टिकल होंगे वित्त पोषण, मानक निर्धारण अक्रेडिटेशन व नियमन के लिए। उच्च शिक्षा संस्थानों में सीटें बढ़ाकर (3.5 करोड़ तक) सकल नामांकन अनुपात को 50 प्रतिशत तक बढ़ाया जाएगा।

कोविड के दौर में तकनीकी शिक्षा संप्रेषण प्रणालियों में वृद्धि की आवश्यकता सर्वजन्य हो गई है। इसलिए, राष्ट्रीय उच्च शिक्षा आयोग तकनीकी डिजीटल ढांचा सामग्री व क्षमता बढ़ाने की दिशा में कार्य करेगा। मनुदर्पण-ऑनलाइन पोर्टल से छात्र अपनी शिक्षा संबंधी दुविधाओं को सुलझा सकते हैं। काउन्सिलरों की राष्ट्रीय डायरेक्टरी (Directory) भी बनाई जा रही है व कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित यंत्रों से बच्चों की क्षमताओं का मूल्यांकन भी किया जाएगा।

शिक्षा की सार्वभौमिकता के संवैधानिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रत्येक धर्म, जाति व वर्ग के छात्रों को बराबर का मौका देना आवश्यक है। इस दिशा में,

छात्रवृत्ति का महत्वपूर्ण योगदान है। साथ ही जनजातीय व भारत की परंपराओं का ज्ञानवर्धन, जिससे स्वदेश व उसकी अमूल्य धरोहर पर गर्व की भावना बढ़े, आवश्यक है। छात्र इस नीति के तहत किसी भी भारतीय प्राचीन भाषा में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही विदेशी भाषाओं की भी शिक्षा पा सकते हैं।

उपरोक्त वर्णित तथ्यों से यह स्पष्ट है कि सरकार ने शिक्षा क्षेत्र के प्रत्येक पहल पर विचार कर सुधार करने का प्रयास किया है। इस समीक्षा के लिए भारत के नीति की परिप्रेक्ष्य को समझना जरूरी है, उदारीकरण, निजीकरण व भू-मंडलीकरण के वैश्विक युग में भारत की बढ़ती जनसंख्या, विशेषकर युवा पीढ़ी को वैश्विक नागरिक बनाने में इस नीति का महत्वपूर्ण योगदान होगा। इससे भारतीय युवा, वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकेंगे। युवाओं की रुचि, क्षमता व मांग में मैपिंग के कारण प्रत्येक क्षेत्र में रोजगार का सृजन होगा व उस क्षेत्र के लिए उपयुक्त रूप से प्रशिक्षित सक्षम व कार्यकुशल कर्मी मिलेंगे। उच्च शिक्षा के संस्थानों की गुणवत्ता में वृद्धि से शोध व नवाचार (Innovation) में नई ऊर्जा आएगी। आत्मनिर्भरता का मूल मंत्र, जो भारत के उज्ज्वल भविष्य की मांग है, इसी नीति की आधारशिला से संभव हो पाएगा। इस नीति से, रविन्द्र नाथ टैगोर के विचारानुसार सोचने-समझने का समय देने से छात्रों की वैज्ञानिक तार्किक व आध्यात्मिक सोच में वृद्धि होगी।

हालांकि, इसमें कुछ चुनौतियां भी सामने आएंगी। शिक्षा समवर्ती विषय (Concurrent list) है इसलिए राज्यों का सहयोग आवश्यक है। सकल घरेलू उत्पाद के 6 प्रतिशत हिस्से को शिक्षा पर व्यय करने के लिए राजनैतिक इच्छाशक्ति आवश्यक है। दक्षिण भारतीय

राज्यों का विरोध कि त्रि-भाषा सूत्र से देश का संस्कृतिकरण करने का प्रयास किया जा रहा है, को सुलझाने की जरूरत है। प्रत्येक विषय के शिक्षकों का भी अभाव है। साथ ही इस नीति से, भारत विश्व में अध्ययन केंद्र के रूप में विज्ञापित होना चाहता है। इससे विदेशी छात्रों की मेजबानी होगी परंतु विदेशी संस्थानों के आने से, शिक्षा महंगी होगी जिससे निम्न वर्ग के लिए इसकी प्राप्ति कठिन होगी।

भारत की आने वाली पीढ़ियों के सर्वांगीण, समग्र व समेकित विकास, जिससे उनमें स्वयं सोचने की शक्ति की वृद्धि हो, के लिए यह नीति वरदान सिद्ध होगी। साथ ही भविष्य में देश से मस्तिष्क पलायन की समस्या भी कम होगी। आशानुरूप भारत प्राचीन काल की अपनी शिक्षा क्षेत्र में अग्रणी होने की वास्तविकता को भी पुनः प्राप्त कर सकेगा।

अंत में,

विज्ञान व तकनीकी परिवर्तन के इस युग में  
औद्योगिकरण व भू-मंडलीकरण की सुध में,  
भारत बनना चाहता है वैश्विक ज्ञान महाशक्ति,

जिसकी नई शिक्षा नीति करेगी पुख्ती,

राष्ट्रपिता गांधीजी के कथनानुसार,

दें शिक्षा का सार्वभौमिक मूल अधिकार,

जिससे न हो किसी वर्ग का प्रतिकार,

व प्रत्येक भारतीय का हर सपना हो साकार,

बनेंगे तार्किक सोच वाले छात्र,

मिलेंगे हर क्षेत्र के लिए योग्य पात्र,

होगा संविधान व धरोहर पर गर्व,

व हर दिन मनाएंगे एकता और राष्ट्रीयता का पर्व,

इस नीति से बनेगी आत्मनिर्भर भारत की सुदृढ़ नींव,

जिससे हमारा राष्ट्र होगा चिरंजीव।

# पद्मभूषण – इसरो वैज्ञानिक नाम्बि नारायण



सुश्री आरती शर्मा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी  
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा  
(कृषि, खाद्य एवं जल संसाधन)

10, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110124

कि सी भी देश के समकालीन इतिहास में ऐसा शायद ही हो सकता है कि एक महान लक्ष्य को पूरा करने में तल्लीन एक कर्तव्यनिष्ठ, समर्पित, बुद्धिमान अंतरिक्ष वैज्ञानिक पर गलत तरीके से असत्य आरोप लगाकर अपने देश पर जासूसी करने का आरोप लगाया जाता है, फिर गिरफ्तार किया जाता है।

अदालत में लम्बे समय तक केस चलने के बाद उन पर लगे सब आरोप खारिज कर दिए जाते हैं और उन्हें सम्मान सहित रिहा किया जाता है, स्वास्थ्य और प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाने पर उचित मुआवजे सहित उनसे क्षमा मांगी जाती है और अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में राष्ट्र के लिए उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए मान्यता में उन्हें भारत के 70वें गणतंत्र दिवस पर पद्मभूषण से सम्मानित किया जाता है।



इसरो वैज्ञानिक नाम्बि नारायण

इस महान वैज्ञानिक, एयरो स्पेस इंजीनियर और इसरो निदेशक का नाम है – नाम्बि नारायण। जिस समय उन्हें षड्यंत्र के तहत पकड़ा गया था, (1994) उस समय वे इसरो के क्रायोजेनिक इंजन प्रोजेक्ट में व्यस्त थे।

लेकिन विचारणीय प्रश्न यह है कि इस महान वैज्ञानिक पर लम्बे समय तक चलने वाले षड्यंत्र से क्या क्रायोजेनिक इंजन प्रौद्योगिकी विकास को हुई भारी क्षति, जो भारत को उन्नत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी वाले देशों के समूह में बहुत पहले पहुंचा सकती थी, की भरपाई की जा सकती है।

कल्पना कीजिए, अपनी राजनीति के लिए कुछ स्वार्थी तत्वों ने दो दशक (1994) से भी अधिक समय पहले, भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र इसरो में कार्यरत इस मेहनती और देशभक्त वैज्ञानिक को एक गहन षड्यंत्र के तहत फंसवा कर न केवल उन्हें प्रताड़ित किया बल्कि राष्ट्रीय हित को भी नुकसान पहुंचाया। 25 साल चली लम्बी जांच के बाद, जांच एजेंसियों ने नारायणन के खिलाफ जासूसी मामले को निराधार घोषित किया।

## क्रायोजेनिक इंजन तकनीक क्या है

क्रायोजेनिक यानी कम तापमान। यह शब्द स्वयं उप-शून्य तापमान की तकनीक को संदर्भित करता है। क्रायोजेनिक इंजन तरल ऑक्सीजन का उपयोग



ऑक्सीडाइजर के रूप में और तरल हाइड्रोजन को ईंधन के रूप में करते हैं। जैसा कि ज्ञात है ऑक्सीजन को तरल अवस्था में 183 डिग्री सेल्सियस से नीचे रखा जा सकता है, जबकि हाइड्रोजन को तरल रूप में होने के लिए 253 डिग्री सेल्सियस से नीचे के तापमान की आवश्यकता होती है। चूंकि तरल ऑक्सीजन अत्यंत प्रतिक्रियाशील और दहनशील है, इसलिए इसे भारी भार ले जाने के लिए प्रणोदक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

### क्रायोजेनिक प्रौद्योगिकी के मूल सिद्धांत

यह 150 डिग्री से कम तापमान पर सामग्री के उत्पादन और व्यवहार का अध्ययन है। इसका उपयोग स्पीड लॉन्च वाहनों को कम तापमान पर उठाने के लिए अंतिम चरण में किया जाता है। इसमें यह भी कहा गया है कि क्रायोजेनिक चरण बेहद कम तापमान पर तरल प्रणोदक चरण या ठोस प्रणोदक चरण है।

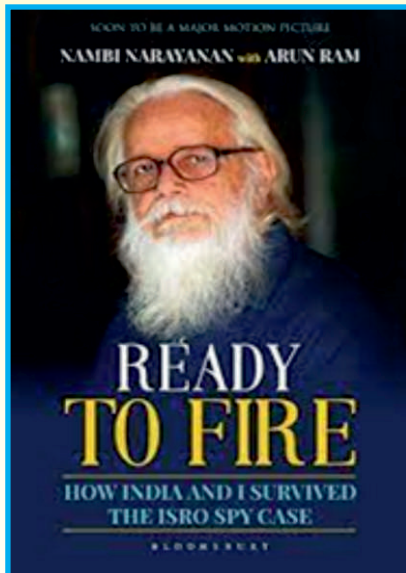
### भारत के अंतरिक्ष मिशनों में क्रायोजेनिक प्रौद्योगिकी का महत्व

नब्बे के दशक की शुरुआत में रूस सहित केवल कुछ चुनिंदा देशों के पास ही इस तकनीक का अधिकार था। भारत इस तकनीक को विकसित करने की

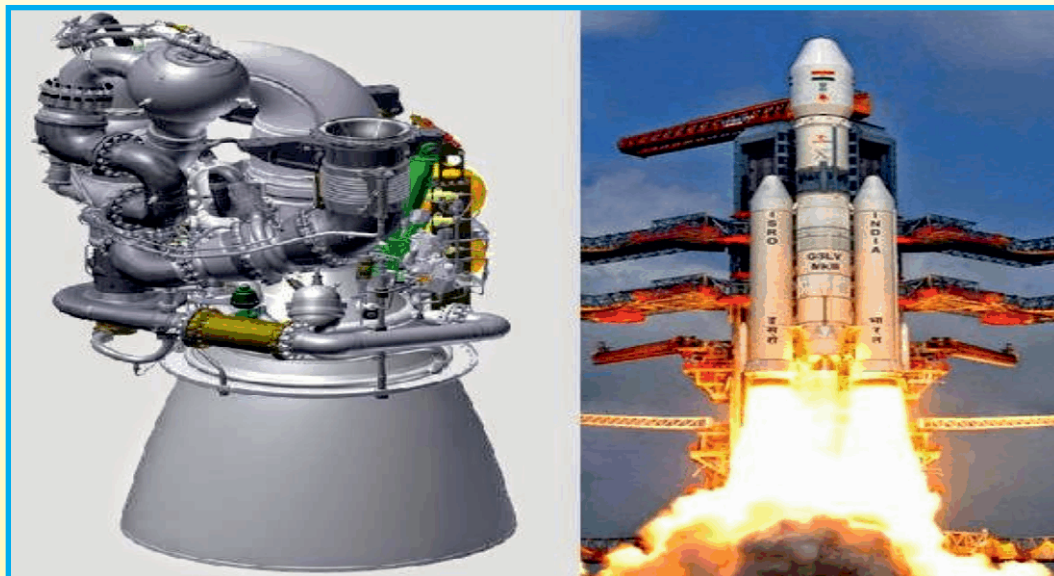
कोशिश कर रहा था और शक्तिशाली देशों से कई प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा जो नहीं चाहते थे कि भारत अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में आगे बढ़े। शायद इस महान वैज्ञानिक के खिलाफ साजिश रचने का यह भी एक कारण हो सकता है।

### आत्मकथा

उनकी आत्मकथात्मक पुस्तक Ready to Fire में उन्होंने इस जासूसी केस का विस्तार से उल्लेख किया है।



देशवासी भारत माता के इस महान सपूत की अंतरिक्ष अनुसंधान में दी गयी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए हमेशा के लिए ऋणी रहेंगे और विकट परिस्थितियों में भी देशभक्ति और कर्तव्य परायणता को हमेशा याद रखेंगे।



# जीवन के नाटक में मंच के नाटक का योगदान



योगेश कुमार मिश्र  
हिंदी अधिकारी  
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)  
असम, गुवाहाटी

हम सब के जीवन में अभिनय का महत्व ऐसा है मानो चंदन और पानी का साथ हो। हम जीवन के रंगमंच पर किसी अज्ञात सूत्रधार के और निर्देशक के इशारों पर नाच ही तो रहे हैं।

कभी पुत्र, कभी पिता, कभी पति की भूमिका में हम अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। हमारे जीवन का अभिनय इतना वास्तविक और जीवंत है कि हम इसे सच मान कर बाहर—भीतर एक रस मान कर चल रहे हैं। मेरे जियाव में वास्तविक रंग मंच के इतर भी रंगमंच रहा है। जिसकी भूमिका मेरे व्यक्तित्व और अस्तित्व पर बराबर पड़ा है।

बात उन दिनों की है जब हमारे गांव में बिजली नहीं थी। ऐसी बात भी नहीं थी कि गांव में इसके पहले बिजली नहीं थी वह जगन्नाथ मिश्र जी का समय रहा होगा क्योंकि

ट्रांसफार्मर, बिजली के तार और सीमेंटेड खम्भे थे वह जरूर बिजली के होने के सूचक थे।

मैंने होश बाबरी ध्वंस के समय संभाला था उसके बाद बिहार के लालू जी ने लालटेन के महत्व को रेखांकित करने को बिजली गुल कर दी।

मैं विशुद्ध लालटेन युग का प्राणी था।

तो हमारे यहाँ दुर्गा पूजा, दीपावली और सरस्वती पूजा में नाटक हुआ करता था। यह तीनों पर्व के नाटक मेरे गांव के आसपास के अलग—अलग गांव में होता था। मेरा गांव बहुत छोटा था यहाँ कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं होता था।

मैं बचपन से अभिनय में रुचि लेता था। मेरे पिता जी मंजे हुए अभिनेता

रहे हैं। बड़े भैया और मंझले भैया भी नाटक करते आये हैं। इन सब के बीच मेरे मन में भी अंकुर फूट पड़ा। अपने टोली को ले कर मैंने भी बीड़ा उठाया ... मैंने पहली स्क्रिप्ट शायद 8 वर्ष की उम्र में लिखी, मैं ही निर्देशक, मुख्य भूमिका, संचालक, व्यवस्थापक सब था ... मेक अप भी खुद ही करता था ... साड़ी पहनाने से लेकर इंस्पेक्टर के ड्रेस हों या डाकू के सब पर बारीकी से काम करता।

रिहर्सल पुरजोर चलता, ढोलक, बेंजो, फिल्मी गीत सब पिरोया जाता और अंत में सुखद नाटक का मंचन होता।

कमी दर्शकों की रहती थी ... क्योंकि हम उसी समय नाटक खेलते थे जब बड़े लोगों का नाटक चल रहा होता था ऐसे में हमें कोई भाव नहीं मिलता था।

चंदा मिलता नहीं था ऊपर से रात को नाटक करने को पंचलाइट (पेट्रोमैक्स) बड़ी मुश्किल से मिलता ... वह भी छीन गया तो दो लालटेन की व्यवस्था होती वह भी छीन गया तो हम लोग ढिबरी पर नाटक खेलने लगे ... ढिबरी में मिट्टी का तेल कहाँ से आये?

उस गरीबी में कोई पैसा नहीं देता था तब हम मिट्टी तेल का चंदा मांगते। बड़ा कष्ट था ... घर से चुरा कर कुछ व्यवस्था करता ...

मेकअप के लिए दीदी का पाउडर क्रीम ले कर भाग जाता ... ओह वे मुफलिसी के दिन ...

ऐसा ही करते-करते बिना दर्शकों के हम नाटक खेलते गए ... उपेक्षित, असहाय से ... लोग बहुत मज़ाक उड़ाते ... दूसरे का क्या कहा जाए घर वाले उपहास उड़ाते ... सब की नज़रों से बचा कर नाटक लिखते ... जंगल में अभ्यास करते ...

सबसे खराब तब लगता जब हमारे बीच में से कम उम्र का सुंदर लड़का लड़की का रोल करता तो गांव के छिछोरे उसे छेड़ने लगते ... इधर-उधर हाथ लगा देते ... यह भयावह था ... सब ताने मारते कि

“पण्डि जी के औ कोई काम नहीं है का जी...”

खैर यह सब सिलसिला चलता रहा और विराम तब लगा जब हम पढ़ाई के लिए जोधपुर चले गए ... लेकिन लौटे तो दुगने उत्साह के साथ नई तकनीक के साथ और इस बार जबर नाटक किया गया ... इस बार स्क्रिप्ट लिखा नहीं गया शोले का रिमेक बनाया गया।

ऐसा जीवंत बना कि जो लड़का गब्बर बना उसके बड़े भाई ने ठाकुर बने लड़के की हत्या रियल लाइफ में की ... बाद में गब्बर (शम्भू) ने भी आत्महत्या कर ली ... ठाकुर का छोटा भाई भरी जवानी में बीमारी से मरा बस जय वीरू और बसंती और रमेश (योगेश) सिप्पी बचे हुए हैं।

इसी नाटक में मैंने फीलर के रूप में एक शिक्षा पर गीत बनाया था जब अनपढ़ बाप बन कर नाटक के ब्रेक में मैं मंच पर बुढ़ा बन कर आया तो लोग भौचक्के रह गए कि यह कौन है? अंत तक नहीं पता चला बताने पर भी लोगों को विश्वास नहीं हुआ।

वह नाटक इतना हिट हुआ कि उसके बाद भीड़ हमारे अड्डे पर

होने लगी ... दूर दूर से लोग आने लगे ...

नाटक का सिलसिला काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भी जारी रहा और 2005 से मेरे नाटक को प्रथम स्थान मिला, 2006 में बेस्ट एक्टर, हास्य प्रहसन को द्वितीय फिर पुरस्कारों और मेरे प्रयासों को पर्याय माना जाने लगा।

मेरा साहस इतना बढ़ गया कि एक वारिस अली थे वे नाटक का नाम भी नहीं जानते थे ... लोगों को देख कर उनकी आवाज दब जाती थी उन्हें सीधे मैंने अंतर संस्थान युवा महोत्सव के मंच पर उतार दिया और वे बेहतरीन अभिनय कर के लौटे। उस नाटक को भी द्वितीय पुरस्कार मिला। इस तरह से सफलता मिलती गई। कुछ स्थानों पर असफलता भी मिली सबके अनुभव आगे की कड़ियों में काम आते गए सरकारी सेवा में आने के पश्चात भी नाटक का दौर बदस्तूर चलता रहा। कोलकाता में श्रुत नाटक करने के दौरान उसमें भी कई अनुप्रयोग चला। सबसे यादगार रहा जब मैंने कर्ण की भूमिका का निर्वहन किया।

उन दिनों से आज तक उन सब की यादें जीवंत हैं।



# हरामी



अनिल शर्मा 'अनिल'  
वरिष्ठ लेखा अधिकारी  
कार्यालय महालेखाकार (ले. व हक.)  
हरियाणा, चंडीगढ़

आम की फुनगी हिली और तपती दुपहर में लू से बदहवास टिटहरी उड़ी तो सुखिया चाची की बदहवास आंखें एक विश्वास का बोझ उठाए आम की कच्ची बरौनियों पर टिक गई। जून के बयालीस डिग्री तापमान और उमस में पसीने और आंसुओं के गंगा-जमुनी संगम में नहाया सुखिया चाची का सोच में गुम चेहरा। मैं सूती साड़ी के कोर से धीरे-से उनकी आंखें पोंछता हूं तो बिलख उठती हैं चाची – “हरामी ... मरने से पहले ये भी ना सोचा कि बूढ़ी किसके सहारे जिएगी।” करुणा और ममता से भीगे शब्द मुझे अंदर तक भिगो जाते हैं।

“हरामी ...” धरमवीर का हर वक्त तमतमाया सा चेहरा मेरी आंखों के आगे घूम गया।

“साला कौन बहन का यार कह सकता है दावे से कि वह हराम की औलाद नहीं। तू बोल किसना! तू कर सकता है दावा कि चाचा ही तेरे असली पिता हैं। बुरा मत मानियो ... कमला चाची के चरित्र पर छींटे नहीं उछाल रहा मैं ... मेरी मां जैसी ही है कमला चाची। लेकिन तू बता किसना ... साला दुनियां का कौन आदमी इस बात की गारंटी देता है कि ...।”

क्रोध में मनुष्य अपने मन की बात नहीं कहता, वह केवल वही कहता है जिससे दूसरों का दिल दुखे। मैं उसे समझाता – “तू क्यों लोगों की बातों पर कान देता है। हर बात को घुमा फिराकर वहीं ... उसी बात पर ले आता है कि तेरा जन्म चाचा के मरने के बाद विधवा चाची की कोख से हुआ। तुझे तो अब कहते हैं लोग ... चाची ने तो पूरा जीवन

सही हैं गांव भर की गलियां। किस तरह पाला है उन्होंने तुझे ... सबसे लड़कर। एक मां की तरह नहीं, एक बाप बनकर।”

“अम्मा को कोई दोष नहीं देता मैं ...” – वह तैश में आ जाता – “वह चाहती तो मुझे कोख में ही मार सकती थी। गुस्सा तो मुझे इन गांव वालों पर है जो अम्मा को दोषी मानते हैं और मुझे हरामी कहते हैं। इन सालों को इस बात का दुख है कि मर क्यों नहीं गई अम्मा ... मुझे जन्म क्यों दिया ... पाला-पोसा क्यों ...?” असहाय क्रोध से उसका चेहरा तमतमा उठता – “तू देखियो किसना, जिस दिन भी मुझे पता चला कि कौन था वो ... उसी दिन उसकी बहू-बेटियों का भी वही हथ्र करूंगा ... बस पता चलने दे मुझे।”

“क्या करेगा तू?” मैं उसे समझाता। “कुछ उल्टा-सीधा करके जेल जाएगा और जैसे अब तक रोती रही हैं सुखिया चाची वैसे ही आगे भी रो-रोकर अपनी जान दे देंगी ... इस बारे में सोचा है तूने?”

“मुझे नहीं मलतब किसी से ... मुझे बस बदला लेना है। और किसना, बदला मुझे अपनी अम्मा के बेइज्जती का नहीं लेना ... बदला लेना है मुझे अपनी बेइज्जती का ... समझ गया तू?” — वह तेजी से वहां से चल देता।

धरमवीर बचपन से ही मेरा दोस्त था। हम साथ खेले-पढ़े थे। बचपन से ही मुझे ना जाने क्यों उससे सहानुभूति थी। गाजियाबाद से सटे इस गांव की कुल आबादी पांच हजार भी नहीं थी तब। सारे गांव में सभी एक-दूसरे को नाम से पहचानते थे। दूर-दूर तक फैले खेत, कच्ची सड़कें और पगडंडियां ... विकास से कोसों दूर। गांव में स्कूल मात्र आठवीं तक था और आठवीं तक ही धरमवीर और मैं साथ-साथ पढ़े थे। आठवीं में फेल होने के बाद उसने पढ़ाई छोड़ दी और घर की खेती संभाल ली। पढ़ाई में उसका शुरू से ही मन नहीं लगता था। इसका एक कारण

यह भी था कि स्कूल के बच्चे ही नहीं मास्टर जी भी उसे ‘हरामी’ कहते। शुरू-शुरू में मेरी तरह उसे भी हरामी शब्द मात्र एक गाली की तरह लगता लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, इस शब्द का अर्थ समझने लगा था। गांव के दकियानूसी माहौल में हमउम्र के बच्चों को उनके मां-बाप की ओर से सख्त मनाही थी कि वे धरमवीर के साथ ना ही खेलें और ना ही उसके घर जाएं। सिर्फ एक मेरा घर था जहां उसका आना-जाना था। वह भी इस कारण कि वह मेरे पड़ोस में ही रहता था और मेरा सबसे अच्छा दोस्त था। जब मां-बाबूजी दबे स्वर में उसका विरोध करते तो मैं उसके समर्थन में खड़ा हो जाता — “सजा तो उसको मिलनी चाहिए थी जिसने ‘अपराध’ किया है। आप धरमवीर

को किस बात की सजा देना चाहते हो? सभी जानते थे कि यह अपराध गांव के ही किसी दबंग व्यक्ति का है। ... तो जिन लोगों पर शक था उनसे खुलकर पूछताछ क्यों नहीं की गई? उस समय तो गांव की बदनामी का डर दिखाकर सुखिया चाची को पुलिस में रपट तक नहीं लिखाने दी। असली अत्याचार तो चाची और धरमवीर के साथ हुआ है” — मैं तैश में आ जाता — “और अपराधी अब भी खुला घूम रहा है।”

“सब जानती है वह कुलच्छिनी ...” — अम्मा अपनी खीज उतारतीं — “विदेशी नहीं था कोई ... आंखों पे पट्टी नहीं बंधी थी उसके ... रात में इतना अंधेरा भी नहीं होता कि ... अंधेर है अंधेर ...।” — अम्मा बड़बड़ाती हुई सामने से हट जाती।



मैं अंदर ही अंदर गुस्से से उफनता रहता। पूरा गांव जानता था कि खेतों में पानी लगाकर लौटते वक्त रात सुनसान गन्ने के खेतों में अपना चेहरा छुपाए व्यक्ति ने जब चाची से बलात्कार किया था तो चाची ने बुरी तरह घायल होने की हद तक विरोध किया था। स्कूल के अभिलेखों में यद्यपि उसके पिता के नाम की जगह सुखिया चाची के स्वर्गीय पति वीरभान का ही नाम दर्ज था किन्तु जल्दी ही उसे पता चल गया था कि वीरभान की मृत्यु तो उसके जन्म के एक वर्ष पूर्व ही हो चुकी थी। उसका बाप कौन है? यह प्रश्न उसे बौखला देता।

आठवीं में वह फेल हुआ और आगे पढ़ने से उसने इंकार कर दिया। सुखिया चाची उसे बहुत प्यार करती। उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य वही था। जब वह छोटा था और खेल-खेल में बच्चे आपस में झगड़ जाते तो धरमवीर को आहत करने का ब्रह्मास्त्र उन्हें पता था। हरामी। यही वह शब्द था जिसे सुनकर वह बौखला जाता। बच्चों का यह झगड़ा तब बड़ों तक पहुंच जाता और चाची हमेशा धरमवीर का पक्ष लेती। यही कारण था कि गांव भर के बच्चों को उनके



माता-पिता ने उसके साथ खेलने की मनाही कर रही थी। स्वभाव से भी वह कुछ जिद्दी और अक्खड़ किसम का था। बात-बेबात झगड़े पर उतर आता। उसके इस स्वभाव के पीछे उसका नाजायज संतान होना मुख्य कारण था। परन्तु चाची का उसके प्रति अटूट, एकनिष्ठ प्यार भी एक वजह थी क्योंकि वह इससे चिढ़ता था।

मैं उसे समझाता — “तू क्यों चाची की भावनाओं को ठोस पहुंचाता है। इस बात में तो तुझे कोई शक नहीं कि तेरा जन्म उसकी कोख से हुआ है। जमाने भर के ताने सुनकर भी उन्होंने तुझे पाला-पोसा है। मां और बाप का प्यार दिया है तुझे।”

“सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए किसना ... अम्मा को अपने बुढ़ापे के लिए

एक सहारा चाहिए था बस” — वह फिर तैश में आ जाता — “मुझे चिढ़ होती है अम्मा के इस तरह प्यार करने से। तेरी भी तो मां है। क्या वह इस तरह तेरे पीछे छाया की तरह लगी रहती है? अब मैं कोई बच्चा तो हूं नहीं।”

“हर मां इसी तरह अपने बच्चों का भला चाहती है। ... और फिर तुझे अपने बुढ़ापे का सहारा वह समझती हैं तो इसमें बुराई क्या है?” — मैं समझाता — “मेरे मां-बाप भी मुझसे यही अपेक्षा रखते होंगे।”

“मैं इसे गलत तो नहीं कह रहा। मां-बाप अपने बच्चों के लिए इतना कुछ करते हैं तो उन्हें हक है ऐसा सोचने का। सारी दुनियां इसी लेन-देन पर चलती है। सारे रिश्ते



स्वार्थ पर टिके हैं ... यही सच्चाई है। बाकी सब ढकोसला है। कौन नहीं जानता कि एक औरत दो वक्त की रोटी और सामाजिक सुरक्षा के नाम पर अपना शरीर और आत्मा आदमी के पास गिरवी रख देती है और आदमी अपनी शारीरिक भूख के बदले में औरत को पालता है ... पालतू कुतिया की तरह। बस एक यही रिश्ता है आदमी-औरत का ... बाकी सब दिखावा। पूरे गांव में ये जितनी भी औरतें हैं ना, सब की सब अपने आदमियों की पालतू हैं।”

“इसका मतलब इस एक रिश्ते के अलावा और कोई रिश्ता नहीं है इस दुनिया में?” — मैं नाराज हो जाता — “तू एक बीमार मानसिकता को पाल रहा है।”

“जानता हूं मैं ... लेकिन काश ऐसा नहीं होता। मैं चाहूं तो भी अम्मा का सहारा नहीं बन सकता” — वह मेरे पास से उठ जाता।

“मैं चाहूं तो भी अम्मा का सहारा नहीं बन सकता।” उसके इस कथन का आशय मैं समझता था। अतीत की कंदराओं के यातना-कक्ष से उठता स्मृतियों का आर्तनाद हमेशा अपने अवचेतन मन में गूंजता रहता। चाची से वह

दिलोजान से प्यार करता था परन्तु दिखावा ऐसा करता जैसे वह उनसे चिढ़ता हो। इसके पीछे उसकी वही बदला लेने की मनोवृत्ति थी जिसको उसने अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य मानकर पोषित किया था। ... और इस उद्देश्य की पूर्ति के बाद वह जानता था कि वह चाहकर भी अपनी मां का सहारा नहीं बन सकता। वह कहता यही था कि मुझे अपनी मां की नहीं बल्कि अपनी बेइज्जती का बदला लेना है परन्तु सिर्फ मैं जानता था कि उसकी आंखों में आंसू सिर्फ तभी आते थे जब वह कहता — “किसना, जब किसी औरत के साथ बलात्कार होता है ना तब उसमें उसके जिस्म को नहीं बल्कि उसकी आत्मा को इतनी गहरी चोट पहुंचती है कि उसे अपने वजूद से नफरत हो जाती है। मुझे नहीं पता दुनिया में ऐसी कौन-सी सजा है जो उस व्यक्ति को वही अनुभूति कराए जो औरत को होती है। तू बता किसना, तू तो इतना पढ़ा-लिखा है। मैं उसे वही महसूस कराना चाहता हूं जो अम्मा ने उस वक्त महसूस किया होगा। बरसों से मैंने अम्मा को रात के अंधेरे में सुबकते हुए देखा है ...

सुना है। लेकिन मैं उसे सांत्वना भी नहीं दे सकता ... क्या कहूं उसको .. भूल जा। जिस बात को मैं भूलना नहीं चाहता उसके लिए उसको कैसे कहूं कि भूल जा” — वह मेरे कंधे से लगकर सुबकने लगता — “अम्मा ने बहुत अच्छा किया जो मुझे जन्म दिया वरना उसके अपमान का बदला कौन लेता।”

प्रेम और नफरत व्यक्तित्व और आदतों को अविश्वसनीय ढंग से बदल देते हैं। प्रेम और नफरत में डूबा आदमी बड़ी से बड़ी चुनौती लेने को आमदा हो जाता है। सुखिया चाची के प्यार ने धरमवीर की उस बदला लेने की मनोवृत्ति का पोषण ही किया क्योंकि मात्र दो वर्षों के अंदर ही वह अपराध की दुनिया का एक ऐसा सितारा बन गया जिसके दुस्साहस से पूरे जिले में दहशत फैल गई। हत्या, लूटपाट और बैंक डकैती के अनेक मुकदमों में वह नामजद था।

सिर्फ हफ्ते पहले की बात है। मैं कॉलेज से लौटकर आया तो वह मेरे इंतजार में हॉस्टल के गेट पर मौजूद था। मैं आश्चर्य चकित रह गया — “तू यहाँ? पता है पूरे जिले की पुलिस तुझे ढूंढती फिर रही है?”

वह मेरे गले लग गया — “और मैं तुझे ढूँढता फिर रहा हूँ ... तुझे तो यहां कोई जानता ही नहीं किसना।”

“तीन हजार स्टूडेंट हैं यहां। कौन किसको जानता है” — मैं चिंतित हो उठा — “तुझे सब जानते हैं किसी ने पहचान लिया तो?”

“तू चिंता मत कर। आंख और दिमाग से आदमी पहचानता है परन्तु बोलता तो जुबान से है ना ...। किसकी हिम्मत है जो अपनी जुबान खोले। अच्छा ये सब छोड़ ...। मैं तेरे पास इसलिए आया था कि तू मेरे साथ गांव चल। मुझे थोड़ी हिम्मत रहेगी ... अम्मा के सामने। बहुत नाराज है वो मुझसे।”

“क्या करेगा गांव जाकर...? सुखिया चाची को तूने कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं छोड़ा।” — मैं छिटक गया।

“तू जानता है किसना ... कसम से मैंने आज तक कोई अपराध नहीं किया। एक भी नहीं। हां, इस गुट में मैं शामिल हूँ ... पर वो सिर्फ इसलिए कि मैंने बदला लेना है अपने अपमान का। उस बदले के बाद अम्मा कहे या तू कहे ... एक बार कहकर देखियो ... कनपटी से लगाकर घोड़ा दबाने में एक सेकेण्ड भी नहीं लगाऊंगा। जो सजा देना चाहो, दे दीजियो ... पर उस आदमी को मैं माफ नहीं करूंगा। अम्मा तो सिर्फ रात को ही रोती थी ... मैं तो चौबीसों घंटे

कलपा हूँ। काश! कोई तो तरीका होता यह जानने का कि वह था कौन?”

“बीस बरस हो गए धरमवीर ... बीस बरस। कहते हैं वक्त के साथ आत्मा पर लगी चोट के घाव भी भर जाते हैं। पर तूने तो इन बीस बरसों में इन घावों को नासूर बना लिया।”

“सच ... एकदम सच। यही तो चाहता था मैं ...। इस घाव को खरोंच-खरोंचकर नासूर बनाना। इतना कि इसके मवाद और सड़ांध से मेरा जीना दूभर हो जाए। किसना ... नहीं चाहता मैं जीना ... बिल्कुल नहीं चाहता। लेकिन मैं मरूंगा भी नहीं तब तक जब तक अपना बदला ना ले लूं।”

“कब तक जीएगा तू? पुलिस तेरे पीछे हाथ धोकर पड़ी है। पूरा गांव तेरा दुश्मन है। तेरे जैसे हिस्ट्रीशीटर को पुलिस गिरफ्तार नहीं करती, सीधा एनकाउंटर करती है।”

“तू यह सब नहीं जानता किसना ... तुझे बताना भी नहीं चाहता मैं। तेरे पास मैं आज सिर्फ इसलिए आया हूँ कि तू मेरे साथ गांव चल। कुछ मेरे साथी भी होंगे। गांव के सिर्फ दो चार लोग हैं जिनमें से ही कोई



एक था इस अपराध में शामिल। बस उन्हीं से इस बार बात करनी है। लगता है मैं जो सोच रहा हूँ वही सच है। और अगर यह सच नहीं भी तो यह अपराध मैं करने जा रहा हूँ कि वे सारे ... हां ... सारे के सारे। अब और ज्यादा सहने का मादा नहीं है मेरा।”

“अच्छा किया तूने मुझे बता दिया धरमवीर क्योंकि अब मैं तेरे साथ गांव नहीं जा रहा हूँ।”

“चल, ठीक है फिर ...। तेरी तरह बातों को तर्क की कसौटी पर परखने की बुद्धि नहीं है मुझमें। एक तरह से यह ठीक भी होगा। दुनियां में सिर्फ दो लोग हैं जो मेरी कमजोरी हैं ... एक अम्मा और दूसरा तू।” — वह अपने छः फुट लम्बे शरीर के साथ सीधा खड़ा हो गया — “आखिरी बार गले तो मिल ले” — उसने अपनी बलिष्ठ बाहें एक मासूम बच्चे की तरह फैला दीं। मैंने अपने कमजोर से शरीर को जब उसकी बाहों के हवाले किया तो एक बार मुझे फिर अहसास हुआ कि उसके चौड़े और मजबूत सीने में एक बहुत ही संवेदनशील दिल है।

“सिर्फ तुझसे कहूंगा किसना ... मैं इस गिरोह से जुड़ा हुआ जरूर हूँ..

. अपने मकसद से ... लेकिन मैंने अब तक किसी अपराध में हिस्सा नहीं लिया। पुलिस के सारे मामले झूठे हैं” — मैंने देखा उसकी आंखों में आंसू हैं जिन्हें छुपाते हुए वह एकाएक कमरे से बाहर निकल गया — “एक तू ही तो था जो मुझ पर विश्वास करता ... बाकी तेरी इच्छा।”

जब मैं गांव पहुंचा तब मुझे पूरी कहानी पता चली। अपने चार साथियों के साथ जिन तीन लोगों पर उसे शक था उन्हें बंधक बनाकर वे गांव के बाहर बने उस पवित्र मंदिर में ले गए। पुजारी रामदरस अपने परिवार सहित रहते थे। पुजारी रामदरस बड़े ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे और गांव भर में उनका सम्मान था। गांव के उस पुरातन मंदिर में गांव वालों की बड़ी आस्था थी और उसकी कसमें खाई जाती थीं।

आगे की कहानी बस इतनी है कि दोषी उन तीनों में से कोई नहीं था लेकिन उसके बदमाश साथियों की नजरों में पुजारी रामदरस की बीस वर्षीया लड़की पूजा आ गई। उसे उठाकर जब वे खेतों में बने ट्यूबवेल पर ले गए तब धरमवीर अपने घर सुखिया चाची से मिलने आया हुआ था।

पुजारी रामदरस रोते-गिड़गिड़ाते सुखिया चाची के घर पहुंचे और उसके कदमों में गिर पड़े — “बचा ले उसे ... मेरा कहा नहीं मानेगा धरमवीर।”

अंदर कमरे में बैठा धरमवीर सब सुन रहा था। वह क्रोध से चिल्लाया — “कोई नहीं बचाएगा चाचा ... यह तो इस गांव की परंपरा रही है” — वह बाहर निकल आया — “अम्मा भी तब ऐसे ही गिड़गिड़ाई होगी। तब आया था गांव का कोई मर्द उसे बचाने। अब इस गांव में हरामी ही पैदा होंगे, चाचा।”

पुजारी रामदरस धरमवीर के कदमों में गिर पड़े — “तुझसे नहीं कहूंगा, धरमवीर ... पूजा को बचाने के लिए। लेकिन इतना जरूर कहूंगा कि यह सब देखने से पहले मुझे गोली मार दे ... कर ले अपना बदला पूरा। मैं ही हूँ तेरा अपराधी। मां को तो बचा नहीं सकता था ... बहन को बचा सकता है तो बचा ले।”

अगले दिन अखबार में तो बस इतना ही छपा था कि आपसी गैंगवार में पांच ईनामी बदमाश ढेर हो गए। जिनमें कुख्यात बदमाश धरमवीर भी था।



# यह शादी नहीं हो सकती



संजय कुमार सिंह  
कनिष्ठ अनुवादक  
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)  
तमिलनाडु, चेन्नई-600018

मेरा दामाद मेरे लिए भगवान था। वह आर्मी का ड्राइवर था लेकिन मुझे उस पर गर्व था और मुझे यह उम्मीद थी कि वह एक दिन भारत का राष्ट्रपति बनेगा। हो सकता है कि आप लोगों को मेरी बातों को सुनकर हँसी आएगी लेकिन आप यह बताइए कि सेना का सर्वोच्च अधिकारी कौन होता है? अरे भैया, राष्ट्रपति। तो मुझे यह उम्मीद थी कि एक दिन तरक्की करते-करते वह भारत का राष्ट्रपति बन जाएगा। जिस दिन मेरी बेटी की शादी तय हुई उसी दिन मैंने इंद्र भगवान के मंदिर में 100 किलो गेंहू के लड्डू चढ़ाए। यह इंद्र भगवान का मंदिर भी मेरा बनवाया हुआ है। असल में यह बात उस वक्त की है जब बचपन में मेरी बेटी छोटी थी और मेरी सारी बहनें जवान। मेरी सबसे बड़ी बहन की शादी एक बहुत बड़े खानदान

में हुई लेकिन लड़का बहुत काला था। सच बताऊँ, मुझे यह रिश्ता बिल्कुल पसंद नहीं था और मैं यह चाहता था कि यह रिश्ता टूट जाए। कहाँ मेरी बहन, दूध जैसी गोरी और कहाँ वह लड़का कोयले की तरह काला। मेरे पिता ने मुझे अपने पास बिठाया और हुक्का गुड़गुड़ाते हुए बोले “देख भीखू, रूप रंग के पीछे ज्यादा नहीं भागना चाहिए। रूप आज है, कल नहीं। तू लड़के के गुण देख। चार-चार ट्रक चलते हैं उसके। पैसों में खेलता है वह। अरे बेटा, हमारी शांति राज करेगी। ऊपर से, अगले महीने शराब की फैक्ट्री डालने वाला है वह अपने जिले में। बड़ा संस्कारी लड़का है। कह रहा था कि उसके यहाँ से बनी शराब सस्ते में मिलेगी और साथ में वह सबको मुफ्त में पकौड़ा और चखना देगा। भगवान उसका भला करे।

उसकी दुकान के भरोसे मेरा बुढ़ापा अच्छे से कट जाएगा बेटा।” मेरे ना चाहने के बावजूद पिताजी ने शांति की शादी उस कोयले के खदान से कर दी। लेकिन उसी दिन से मुझे काले रंग से नफरत हो गई। मैंने काला छाता लेकर निकलना बंद कर दिया और मैंने इलाहाबाद से नीली छतरी मँगवाई। एक दिन मेरी पत्नी पूजा घर में गाना गा रही थी “जसुमति मैया से बोले नंदलाला, राधा क्यों गोरी मैं क्यों काला?” उस दिन मेरा ध्यान इस तरफ गया कि कृष्ण भगवान भी तो काले हैं। मैं मंदिर में घुसा और कृष्ण भगवान की मूर्ति उठाकर भागने लगा। मेरी पत्नी मुझे रोकती रह गई लेकिन मैंने उसे डाँटकर कहा “यह काला भगवान यहाँ नहीं रहेगा। अब इस घर में सिर्फ गोरे देवताओं की पूजा होगी।” बस यही संकल्प लेकर मैंने

गाँव के बाहर इंद्र भगवान का मंदिर बनवाया। इस मंदिर के बाहर सुबह शाम क्या भीड़ लगती। लेकिन इंद्र भगवान की कृपा से मैंने अपनी बाकी बहनों का विवाह धूमधाम से सुंदर लड़कों से करवाया। मेरी बहनों में एक खास बात यह है कि वह एक घर का चार घर करना जानती हैं। मेरी हर बहन ने अपने सास के नाम में ऐसा दम किया कि सबको अस्थमा हो गया। मेरी बहनें अपने ससुराल में राज करती हैं। और मैं यह मानता था कि मेरी बेटी की किस्मत भी कुछ ऐसी ही हो। और एक बात आपको बता दूँ कि घर तोड़ने में और लड़ाई करने में मेरी बेटी मेरी बहनों से बीस स्टेशन आगे है। बहरहाल कहानी पर लौटते हैं।

दिन पंख लगाए उड़ते गए और एक दिन मेरी बेटी प्रियंका बड़ी हो गई। मैं सपने संजोने लगा कि एक दिन अपनी बेटी को बहुत ऊँचे खानदान में बयाहूँगा। गाँव के रंग ढंग देखकर मैं बहुत डरा रहता था। हर दिन खबरों में सुनने में आता कि कोई लड़की किसी लड़के के साथ भाग गई और उन्होंने मंदिर में शादी कर ली। मेरे पड़ोस में रहने वाली राधा तो लड़की के साथ भाग गई थी। मैंने उसी दिन फैसला कर दिया था कि

जल्द से जल्द प्रियंका की शादी किसी गोरे लड़के से कर दूँगा। दैवयोग से एक दिन मैं जब यही सब सोच रहा था तो प्रभात मिश्रा आ गए। मिश्रा जी खटिया पर बैठे और फिर बोले “का बबुआन, बेटी का बियाह कीजिएगा? एक बहुत अच्छा रिश्ता है। लड़का फौज में ऑफिसर है। आपकी बिटिया राज करेगी।” मैंने पूछा “यह बताईए मिश्रा जी की लड़का देखने में कैसा है।” प्रभात मिश्रा बोले “एकदम सुजीत कुमार की तरह है। क्या रंग, क्या रूप, आहा! और गोरा तो ऐसा कि रात को कहीं निकल जाए तो उजाला हो जाए” मिश्रा की बातें सुनकर मेरी खुशी का ठिकाना ना रहा। मेरा मानना है कि गोरापन और सुंदरता संसार का सबसे बड़ा गुण है। इसके आगे संसार के सारे गुण फेल हैं। आप लोग ही बताइए कि लोग सबसे

पहले आपका चेहरा देखेंगे कि आपकी डिग्री। मैंने कहा “मिश्रा जी, हमें यह रिश्ता मंजूर है। आपने कहा कि लड़का गोरा है। बस इतना ही काफी है मेरे लिए।” इस पर मेरे बड़े बेटे माधव ने कहा “अरे पंडित जी आपने बताया नहीं कि लड़का किस पोस्ट पर है?” इस पर मिश्रा जी बोले “अरे बिटुआ। जानकर क्या करोगे? चलो, बताया तुमको की लड़का ड्राइवर है आर्मी में। बेटा, सरकारी नौकरी है उसकी। तुम्हारी तरह बाप के पैसों पर नहीं पलता।” माधव भड़ककर कहने लगा “ओ मिश्रा। ड्राइवर से करवाओगे मेरी बहन की शादी। कुछ अकल ठिकाने है कि नहीं। यहाँ बिहार में तो हम लोग ड्राइवर को दो थप्पड़ मार देते हैं और भाड़ा भी नहीं देते।” इस पर मिश्रा जी भड़क गए “बेटा, यह आर्मी का ड्राइवर है, तुम्हारे छपरा और



सिवान का ड्राइवर नहीं। यह आर्मी के बड़े-बड़े अपसरान को खतरनाक जगहों पर लेकर जाता है। उसे तो राष्ट्रपति पुरस्कार मिलना चाहिए।" माधव और मिश्रा की नौक झोंक बढ़ती जा रही थी। मैंने चिल्लाकर इस झगड़े को रोका "बस माधव। लड़का सरकारी काम करता है और सबसे बड़ी बात की गोरा है। प्रियंका की शादी यहीं इसी लड़के से होगी।" प्रभात मिश्रा का मुँह खिल गया था। वहीं पर जब यह सब बातें चल रही थी तो मेरी चाची बैठे-बैठे यह सब बातें सुन रही थी। वह बोली "मिश्रा जी अंकिता भी बड़ी हो गई है। झूठ क्या कहूँ? प्रियंका से एक साल बड़ी ही है। उसके लिए कोई रिश्ता बताइए ना।" मिश्रा ने गंभीर मुद्रा बनाई और बोले "काकी। एक रिश्ता तो है। लड़का अभी इंकम-टैक्स इंस्पेक्टर हुआ है। लेकिन ड्राइवर की तरह गोरा नहीं है और ड्राइवर की तरह अच्छी नौकरी भी नहीं है। सुना है कि कुछ आईएस वाईएस की तैयारी कर रहा है। कहिए तो मैं बात चलाऊँ।" उस दिन मिश्रा ने दो-दो काम बनाए थे। एक ही घर से दो रिश्तों की बात उन्होंने पक्की की थी। और एक दिन हम लोगों ने शहर में मंदिर में लड़का लड़की के

मुलाकात का दिन तय कर लिया था। मेरे चाचाजी ने अपनी बेटी अंकिता को दिखवटी भी उसी मंदिर में रखवाई थी। हम लोगों ने तय किया था कि जो भी खर्चा आएगा वह हम लोग मिलजुल कर बाँट लेंगे। सुबह 11 बजे मेरे दामाद जी अपने रिश्तेदारों के साथ मंदिर पहुँचे। चार-चार बड़ी गाड़ियों में उनका काफिला आया था। जैसे ही मेरे दामाद जी उतरे, मैं उनको देखता रह गया। मैं अपने आप को रोक नहीं पाया और मैंने दामाद जी को एक सैल्यूट मारी और जोर से चिल्लाया 'सैल्यूट मेजर साब'। मेरे दामाद जी भी घबरा गए और उन्होंने कहा 'कहाँ हैं मेजर साब'। मैंने कहा "अरे, मेरे लिए तो आप ही मेजर साब कहा है।" मेरे दामाद ने कहा "जी। आप तो मुझे शर्मिंदा कर रहे हैं। मैं मेजर नहीं हूँ। मैं तो मेजर साब का ड्राइवर हूँ।" इस पर मैंने उनकी बात को काटते हुए कहा "अरे, मेरे लिए तो आप ही मेजर हैं। घबराईए मत एक दिन आप मेजर बनेंगे। ब्रिगेडियर भी बनेंगे। अरे मैं तो कहता हूँ कि आप एक दिन राष्ट्रपति बनेंगे।" बहरहाल मैंने अपनी बेटी को बुलाया। लड़के वालों ने लड़की देखी, हम लोगों ने लड़के वालों को देखा और रिश्ता

पक्का हो गया। उसी समय अंकिता को देखने के लिए लड़के वाले भी आ गए। उनकी एक ही गाड़ी आयी थी। मैं मन ही मन बहुत खुश हुआ कि चलो इन लोगों की शादी अच्छे घर में नहीं हो रही। लेकिन अगले ही पल गाड़ी में से 6 फुट का एक गोरा, जवान और सुंदर लड़का निकला। सच बताऊँ, मैं अंदर तक जल-भुन गया। मैंने मन में यह निश्चय किया कि अगर अंकिता की शादी इस लड़के से हो गई तो मैं आत्महत्या कर लूंगा। मैं यह सब सोच ही रहा था तो गाड़ी के अंदर से एक और साँवला लड़का निकला। वह टाई पहने हुए था। मैं समझ गया कि असली लड़का यह है। वह गोरा और लंबा लड़का लड़के का भाई था। मैंने राहत की साँस ली। मैं जल्द से उसी मंदिर के प्रांगण में हनुमान जी के मंदिर के सामने भागा और दंडवत होकर रोने लगा "तुम बड़े अच्छे हो प्रभु! तुमने मेरी लाज रख ली। मेरी बेटी के लिए इतना सुंदर लड़का और अंकिता के लिए वह काला सम्राट। वाह प्रभु! धन्य तुम्हारी लीला। अगर इस जगह मेरी बेटी की शादी हो गई तो मैं वादा करता हूँ कि श्रीलंका आऊँगा और कम से कम दो पेड़ श्रीलंका में जरूर जलाऊँगा।"



भगवान ने मेरी सुन ली। लड़के वालों को मेरी बेटी प्रियंका बहुत पसंद आई। मेरे समधी ने मुझसे कहा “देखिए चौधरी। वैसे तो हम पैसों के लालची नहीं हैं। भगवान का दिया हुआ सबकुछ है और कोरोना के टाईम पर लड़के की सरकारी नौकरी है। लेकिन हम चाहते हैं कि आप बारातियों का स्वागत पान पराग और 10 लाख रुपये से करें।” दस लाख रुपये की बात सुनकर मेरा दिमाग चकरा गया। मैंने कहा “समधी जी। आजकल के वक्त में भला कौन लेता है दहेज।” समधी जी बोले कि “हम लेते हैं दहेज और बड़ी शान से कहते हैं। वह देख रहे हैं मेरे बड़े बेटे को। जब तक पूरा दहेज मेरे पास नहीं आया तब तक उसको मैंने हनीमून पर नहीं भेजा। आप सोच लीजिए। मेरा लड़का लाखों में एक है। परसों ही भोजपुरी फिल्म की हीरोईन का रिश्ता आया था लेकिन हमने इंकार कर दिया।” मैंने मन में सोचा कि ठीक है, अपनी जमीन बेच दूँगा, लेकिन शादी तो प्रियंका की यहीं होगी। मैंने कहा ठीक है। समधी जी ने खुश होकर मुझे छाती से लगा लिया और मिठाई मँगवाई। मुझे वह काले रंग की मिठाई खिला रहे थे। मैंने उनका हाथ पकड़ा और

कहा “समधी जी। आप मुझे वह सफेद रसगुल्ला खिला दीजिए। मैं खुशी-खुशी खा लूँगा लेकिन यह काली मिठाई मत खिलाईए। बड़ा अपशकुन होता है।” उसी दिन प्रियंका की शादी की तारीख तय हो गई। 14 जून को मुहूर्त रखा गया।

और देखते-देखते शादी का दिन भी आ गया। बारातियों के स्वागत के लिए मैंने बनारस से पान और सुपाड़ी मँगाए थे। बारातियों के स्वागत में 10 घोड़े दरवाजे पर खड़े थे। उसी दिन अचानक से दोपहर 1 बजे खबर मिली की सुशांत सिंह राजपूत की मौत हो गई। सारे घर में मातम का माहौल फैल गया। सुशांत सिंह राजपूत हमारे बिहार से ही बॉलीवुड गए थे और अपनी पहचान बनाई थी। मैं खुद बहुत दुखी था लेकिन मैंने भगवान से प्रार्थना की “प्रभु! अब और कुछ अपशकुन मत कीजिएगा शादी में।” शाम को 5 बजे बारात मुख्य द्वार पर लग गई। मेरे दामाद जी क्या लग रहे थे दूल्हे के लिबास में। मेरा समधी लेकिन एक नंबर का लिच्चर आदमी निकला। अपने आप को महान दिखाने के चक्कर में वह 5000 बारातियों को लेकर पहुँच गया। अपने आस-पास के गाँव से भी बाराती उठा

लिए थे और सबको कहा था कि चलो बारात में सबको पैसा मिलेगा। पैसे के लालच में आसपास के गाँव के लोग भी बारात में आ गए। अब मेरे समधी ने अजीब शर्त रख दी। उसने कहा कि “भोज पर समधी जी, हर बाराती के प्लेट में खाने के पहले 100 रुपये के नोट आप रखेंगे। और अगर आपने ऐसा नहीं किया तो बारात वापस चली जाएगी।” मैं समधी की यह शर्त सुनकर चौंक गया। मैंने हिसाब लगाया 5000 बारातियों के प्लेट में 100 रुपये। यानि कुल 500000 रुपये। मेरे समधी ने तो मेरा भाटा बैठा दिया था। मैं अंकिता के बड़े भाई के पास गया। वह आर्मी का जवान था। मैंने उससे कहा “बेटा त्रिलोक। तू तो मेरे भाई जैसा है। प्रियंका तेरी बेटी जैसी है। बेटा मेरी मदद कर दे। मुझे सिर्फ पाँच लाख रुपयों की सख्त जरूरत आन पड़ी है। समझ की यह तेरे हाथ नहीं, पैर हैं। मैं पैर पड़ता हूँ।” त्रिलोकी ने मेरी बात मान ली। उसने मेरी मदद की और इस तरह से प्रियंका की शादी धूमधाम से सम्पन्न हुई।

लेकिन दोस्तों मेरा असली दुख तो असल में बाद में शुरू हुआ। मेरा दामाद तो पहले ही दिन से मेरी बेटी का गुलाम हो गया। नहीं, नहीं

मुझे इस बात का दुख नहीं है। मुझे तो इस बात की बहुत ही खुशी है कि मेरा दामाद अब मेरी बेटी के इशारों पर नाचता है। मेरा दामाद मेरी बेटी का इतना बड़ा गुलाम निकला कि शादी के दूसरे ही दिन वह मेरी बेटी को लेकर हमारे गाँव आ गया। मैं तो पहले घबरा गया और पूछा की सब कुछ कुशल मंगल तो है। इस पर वह बोला “पापाजी। प्रियंका को आप लोगों की कमी बहुत महसूस हो रही थी। और मैं प्रियंका के चेहरे पर उदासी नहीं देख सकता था। इसलिए मैं प्रियंका को लेकर आ गया।” लेकिन भाईयों, मेरे असली गम का कारण कुछ दूसरा है। हुआ यूँ कि मैंने अपनी बेटी की शादी की खुशी में गाँव में बहुत बड़ी दावत दी थी। तरह-तरह के पकवान बने थे। मछली, मुर्गे का पूरा इंतजाम था। इसमें शराब का भी बंदोबस्त था। मेरे सारे दोस्त शराब के नशे में धुत थे। मैंने भी उस रात जी खोल कर शराब पी ली थी। कन्हैया ने शराब के नशे में मुझे कहा “अरे पगले, तेरे जैसा बेवकूफ इंसान मैंने आज तक नहीं देखा। तूने अपनी बेटी की शादी एक मामूली आर्मी के ड्राइवर से कर दी और खुद तेरी चचेरी बहन अंकिता की शादी इंकम टैक्स इंस्पेक्टर से हो रही है। जानता है

तू कि इंकम टैक्स इंस्पेक्टर का क्या रूतबा होता है। लाखों की ऊपरी कमाई होती है। गधा कहीं का। ड्राइवर से शादी करके देखो कैसा इतरा रहा है।” मंटू ने उस पर से उसका साथ दिया “भिखारीलाल चौधरी उर्फ भीखू। तुम नाम के भी भिखारी हो और काम से भी भिखारी निकले। अंकिता का होने वाला पति मालूम है ना आईएस की तैयारी कर रहा है। जानता है तू गधे को आईएस क्या होता है। पूरे जिले का मालिक। और यह देखो, यह साहब ड्राइवर से शादी करके इतरा रहे हैं और पूरे गाँव को मछली चावल खाने का इन्होंने निमंत्रण दिया है। शर्म कर कुछ और डूब मर चुल्ली भर पानी में।” अपने दोस्तों की बात सुनकर मेरा नशा काफूर हो गया। ऐसा लग रहा था कि मुझे काटो तो

खून नहीं। अब तो मेरी बेटी की शादी हो गई थी। मैंने सोचा था कि दामाद एक दिन राष्ट्रपति बनेगा लेकिन उस दिन जाना कि ड्राइवर तो ड्राइवर होता है फिर चाहे वह बस का हो या आर्मी का।

सुबह मेरी नींद खुली तो मैं बहुत पछता रहा था। लेकिन मेरी बेटी की शादी तो हो चुकी थी। अब मैं क्या कर सकता था। लेकिन मैं गाँव का ठेठ गँवार आदमी हूँ। मेरे अंदर यह फितरत है कि अगर खुद मेरा भला नहीं हुआ तो सामने वाले का भी मैं भला नहीं होने दूँगा। भगवान की कृपा से मेरी पत्नी भी इन्हीं गुणों से सम्पन्न है। किसी का घर बसता देखकर मेरी पत्नी को बहुत दुख होता है और अगर किसी भी इंसान को मेरी पत्नी खाना खाते हुए देख ले तो मान कर





चलिए कि उसका हाजमा खराब होगा ही होगा। मैंने अपनी पत्नी के साथ मिलकर षड़यंत्र रचा कि किसी भी तरह हमें अंकिता की शादी उस इंकम-टैक्स इंस्पेक्टर के साथ तोड़नी है। मैंने अपनी पत्नी को कहा कि “आरती, तुम आज आँगन में बखेड़ा लेकर उठ जाओ। और ऐसी लड़ाई लड़ो कि अंकिता और उसके घरवाले परेशान हो जाएँ।” आरती आँगन में गई, तब तक उसकी सहेलियाँ आँगन में आ चुकी थी। सबको सुनाने के उद्देश्य से आरती ने ताना मारा “हं। देखो मेरे दामाद को। कितना गोरा है। लेकिन कुछ लोगों का नसीब उतना अच्छा थोड़े ही होता है। लोग गोरा लड़का खोज नहीं पाते तो काले से शादी कर देते हैं। इससे तो अच्छा है कि अपनी बहन को भैंस के साथ खाना कर दें।” अंकिता की भाभी कुसुम आँगन में ही खड़ी थी। वह तिलमिला गई और गुस्से में बोली “शर्म करो भाभी। अंकिता के भैया ने आखिरी मौके पर पैसे नहीं दिए होते तो आज प्रियंका की बारात नहीं उठ पाती। जिस थाली में आप खाती हैं उसी में छेद करती है।” अब लड़ाई में कूदने की बारी मेरी थी। मैंने अपने धोती को ऊपर चढ़ाया और लड़ने के तेवर में बोला

“हाँ। तो कोई एहसान नहीं किया तुम्हारे पति ने। मेरे एक बीघे खेत मैंने उसके पास बंधक रखे हैं। जैसे ही पैसे आएँगे, मैं वह पैसे तुम पति पत्नी के मूँह पर मारूँगा।” इस पर त्रिलोकी बीच में आ गया और तैश में बोला “वाह भैया। कितने एहसान फरामोश हो तुम। उस दिन तो हाथ जोड़कर मुझसे पैसे की भीख माँग रहे थे और आज देखो तेवर ही बदले हुए हैं।” मेरा आँगन युद्ध का मैदान बन गया था। बस सिर्फ वहाँ भीम और दुर्योधन के गदे की कमी थी। आसपास के घर की औरतें खुश होकर मेरे घर की तरफ आ रही थीं जैसे मेरा घर कोई तीर्थस्थल हो। मैंने तो दो बच्चों को अपने घर के बाहर बात करते सुना “अरे चल-चल सोनु, लड़ाई हो रही है। बड़ा मजा आएगा। किसी का सर फूटेगा।” त्रिलोकी ने इसी बीच

कहा “तुम रंग की क्या बात करते हो भैया? अंकिता के पति का पद देखो। वह इंकम टैक्स इंस्पेक्टर है। ऊपर से वह आईएस की तैयारी भी कर रहा है। और तुम्हारा दामाद क्या करता है। सिर्फ आर्मी का ड्राइवर ही है ना। उससे ज्यादा तो कुछ नहीं।” मैंने कहा — “अरे तुमको क्या पता कि आर्मी का ड्राइवर बहुत बड़ा पद है। तुम्हारे इंकम टैक्स इंस्पेक्टर से भी बड़ा पद। वह आईएस वाईएस लोगों को अपने यहाँ नौकरी पर रख लेगा।” मेरी बात खत्म होते ही सारे लोग ठहाका मार कर हँसने लगे। मुझे खुद पर इतनी शर्म महसूस हुई कि आपको मैं बता नहीं सकता। एक-एक कर सारे लोग हँसते हुए चले गए। यहाँ तक कि त्रिलोकी भी हँसता हुआ अपनी पत्नी के कंधे पर हाथ रखकर अपने कमरे में चला गया। मैं रात





को अपनी आरती के गोद में फूट-फूट कर रोया "आरती। आज तुम्हारा भीखारीलाल सचमुच का भिखारी हो गया। मैं कहीं का नहीं रहा। गोरे रंग के चक्कर में मैंने हीरे को फेंककर कोयला उठा लिया। नहीं आरती। अब सैलाब आएगा। मैं यह शादी नहीं होने दूँगा। मैं यह शादी तोड़ कर रहूँगा।"

देखते-देखते अंकिता की शादी का दिन भी नजदीक आ गया। मेरे सारे रिश्तेदार इस शादी में पहुँच चुके थे। लेकिन मेरे दिमाग में कुछ और ही चल रहा था। मैंने अपने दोस्त जो सर्कस में काम करता था उससे नकली बाल और दाढ़ी का सेट मँगवाया। फिर मेरे दूसरे दोस्त से जुलाब की गोलियाँ मँगवाई। मैंने सोचा कि दूल्हे के घर रात को पहुँचकर खाने में चुपके से जुलाब मिला दूँगा। सारे लोग दस्त से परेशान होकर पेट पकड़कर इधर से उधर भागेंगे। कितना मजा आएगा। दूल्हे की बारात जिस दिन आने वाली थी उससे एक दिन पहले मैंने दाढ़ी और नकली बाल लगाए। फिर पगड़ी पहनकर मैं सरदार के मेकअप में आ गया। मैंने अपने आप को आईने में देखा। एकदम गदर फिल्म का मैं सनी देओल लग रहा था। मेरी पत्नी ने

मुझे विजयी भव का आशीर्वाद दिया। आरती बोली "सुनते हो जी। एकदम सनी देओल लग रहे हो। किसी की नजर ना लगे। आप अपना काम करके वापस लौट आइए, फिर मंदिर में चलकर आपसे वापस शादी करूँगी।" अपनी पत्नी को मैंने दिलासा दिया और लाल जैकेट पहनकर मैंने मोटरसाइकल चालू की। तभी पीछे से आरती ने आकर मुझे टोका "अरे यह जुलाब की शीशी आप तो यहीं पर छोड़ कर जा रहे थे। अच्छे से सबके खाने में मिलाइएगा यह जुलाब। ताकि लोग बरसों तक यह शादी भूल ना पाएँ।"

मेरी बाइक आज रिकार्ड तोड़ने वाली थी। 100 की स्पीड से मैं अपनी बाइक अंकिता के होने वाले पति के गाँव की तरफ भगा रहा था। आज तो लग रहा था कि अपुन इच भगवान है। अब मैं अंकिता के ससुराल से मात्र 3 किलोमीटर दूर था। जैसे ही मेरी बाइक खेतों की तरफ मुड़ी मैंने एक अद्भुत दृश्य देखा। मैंने वहाँ 100 साँड़ों का झुंड देखा। इतने सारे साँड़ मैंने एक साथ कभी नहीं देखे थे। मैं अपलक खड़ा होकर उनको देखने लगा। अचानक से उन साँड़ों ने मुझे देखा। पता नहीं उन साँड़ों ने आपस में क्या बातचीत की

लेकिन अचानक से सारे मेरी तरफ भागने लगे। मैं घबड़ा गया। मैंने अपनी बाइक चालू की और सरपट भागा। लेकिन साँड़ों का यह झुंड मेरे पीछे क्यों पड़ा है। अचानक से मुझे याद आया कि मैंने तो लाल जैकेट पहन रखा है। यह साँड़ इसलिए मेरे पीछे पड़े हैं। मैंने मन ही मन इंद्र भगवान को स्मरण किया "हे प्रभु! यदि आप मुझे आज बचा लोगे तो मैं सारे पाप छोड़ दूँगा।" लेकिन वह साँड़ कहाँ रुकने वाले थे। लग रहा था कि सारे ऑलिंपिक में भाग रहे थे। अचानक से उनमें से एक साँड़ ने मेरी बाइक को टक्कर मारी। टक्कर से मेरी बाइक दूर गिर गई। अब मैं था और उन साँड़ों के झुण्ड के बीच। अब उन आदमखोरों ने मुझे सींगों से उठा-उठा कर पटका। मेरे सारे कपड़े फट गए थे। पगड़ी और दाढ़ी गिर चुकी थी। सिर्फ मेरे शरीर पर अमूल की गंजी और नीचे लक्स कॉजी का बरमुडा था। लेकिन साँड़ फिर भी कहाँ रुकने वाले थे। वह मुझे दौड़ाए जा रहे थे। भागते-भागते मैं अंकिता के ससुराल पहुँच गया। मैं रो रहा था। साँड़ों से बचने के लिए मैं एक पेड़ के पीछे छिप गया। मैंने सोचा कि जो हुआ सो हुआ लेकिन अपना काम मैं कर के

जाऊँगा। उसी गंजी और बरमूड़ा में मैं अंकिता के ससुराल की तरफ चला गया। रात हो गई थी और गाँव में रात्रिभोज का आयोजन था। कल सुबह बारात यहाँ से निकलकर मेरे गाँव आने वाली थी।

मैं चुपके-चुपके उस ओर गया जहाँ पर खाना बन रहा था। दूसरी मंजिल पर एक बड़ा सा शामियाना लगा हुआ था और बड़ी-बड़ी कड़ाइयों में बढ़िया-बढ़िया पकवान रखे हुए थे। किसी कड़ाई से बिरयानी की खुशबू आ रही थी। तो किसी से मछली की। किसी में रायता रखा था, तो किसी में मुर्गा मुसल्लम। दैवयोग से उस समय वहाँ कोई नहीं था। मैं चुपके-चुपके कड़ाइयों के पास पहुँचा और जैसे ही मैं सब में जुलाब मिलाने जा रहा था अचानक से दूसरी मंजिल की छत से एक आवाज के साथ चरमराते हुए छत टूट गई। ना सिर्फ दूसरी मंजिल की छत टूटी बल्कि सारी कड़ाइयाँ, उनमें रखा खाना और साथ में मैं भी जमीन पर आ चुका था। उस समय आँगन में कोई नहीं था। मेरे ऊपर दाल गिर चुकी थी। कई लोग पीस मेरे मुँह में जा चुके थे और मेरी पीठ की हड्डी टूट चुकी थी। बाहर मुझे सुनाई दे रहा था कि कोई किसी को डाँट रहा है “अरे, तुझे पहले ही

कहा था कि छत बनवा ले। अब पड़ गए ना लेने के देने। देख कितना नुकसान हो गया।” दूसरी आवाज ने कहा “अरे बाबूजी उतना दहेज मिला ही कहाँ कि छत बनवा लिया जाए।” मेरी चेतना लुप्त हो चली थी। मैंने बंद होती आँखों से देखा कि बहुत सारे लोग आँगन में आए और मुझे उठाया। करीब तीन घंटे बाद मेरी नींद खुली तो मैंने देखा कि मैं एक पलंग पर लेटा हूँ और एक डॉक्टर मेरे पास बैठा है। कई सारे लोगों ने हमें घेर रखा था। लड़के के चाचा ने मुझे पहचान लिया था। उन्होंने कहा “अरे आप तो अंकिता के चचेरे भाई हैं ना। उस दिन आपको दिखवटी में देखा था और आप यहाँ इतनी रात गए कैसे।” मैं पूरी तरह फँस चुका था इसलिए मैंने कहानी बनाई “जी मैं यह देखने के लिए आया था कि यहाँ पर सारा इंतजाम ठीक तो है ना। लेकिन रास्ते में मुझे साँड़ों ने बहुत मारा। ऊपर से यहाँ पर यह छत टूट गई। आज सबकुछ बुरा ही हुआ।” अंकिता के पति के दादा ने कहा “आपके साथ बहुत बुरा हुआ। हमें आप माफ कीजिएगा। अब आप हमारे मेहमान हुए। आप रात भर आराम कीजिए। कल आप हम लोगों की तरफ से बारात में

चलिए। आपकी खतिरदारी में कोई कमी नहीं होगी। रात भर मेरा छोटा पोता अंकित जो डॉक्टर भी है आपकी देखभाल करेगा।”

अगली सुबह मैं अंकिता के ससुराल में तैयार हुआ। मैं पछता रहा था कि क्या सोचा था और क्या हो गया। जल्द ही बारात वहाँ से निकलकर मेरे गाँव पहुँची। मुझे दूल्हे वालों की तरफ से देखकर सारे लोग चौंक गए। तब अंकिता के पति विशाल ने वहाँ पर सबको सारा माजरा समझा दिया। त्रिलोकी ने आगे बढ़कर मुझे गले से लगा लिया और बोला “भैया, मुझे माफ कर देना। मैंने तुम्हें कितना गलत समझा।” अंकिता भी रोते हुए बोली कि “भैया आप मेरे चचेरे नहीं, सगे भाई हो।” मेरे पिताजी ने भी मुझे आशीर्वाद दिया। आखिर में मेरी नजर मेरी पत्नी आरती पर पड़ी। वह गुस्से में मुझे देखे जा रही थी। अंत में मेरे पास मेरा दामाद अजय आया। उसने मुझे गले लगाया और बोला “पापाजी। आप असली हीरो हैं। यू आर द बेस्ट।” उस दिन मुझे समझ आया कि अपना दामाद ही अपना होता है, बाकी तो सब सपना होता है। उस दिन से मेरा दामाद मेरा भगवान बन गया।

# दो कविताएँ



सुश्री लीना दरियाल 'सत्यम'  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी  
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),  
लखनऊ

## ज़िंदगी जीने को है

ज़िंदगी जीने को है, जी इसे जीने वाले,  
हम भी तो तुझे, रोज़ नहीं मिलने वाले।

क्यों नाराजगी जाहिर करें, किसी से भला,  
कौन हमेशा के लिए, हम हैं ठहरने वाले।

चल कर लेते हैं, कुछ नादानियां हम भी,  
रोज कहाँ मिलेंगे, यूँ मरते हुए हँसने वाले।

जख्म जो मिले वो, फूल बन जायेंगे,  
न मिलेंगे गुलिसतां में, यूँ महकने वाले।

ता'बीर खुद 'सत्यम', लिखना जानती है,  
ख़्वाब उसके क्या, पढ़ेंगे पढ़ने वाले।

कशियॉ उन्हीं की, डूबती हैं 'सत्यम',  
नहीं होते जो, तूफ़ां में संभलने वाले।

## प्रकृति से छेड़छाड़

प्रकृति से छेड़छाड़ ये, मानव के क्रियाकलाप,  
डायनामाइट आज, कल मानव करेगा संताप।

विस्फोट कर जो आज, पत्थर उछाल रहे हैं,  
कल करोगे मिट्टी के, खिसकने का अनुताप।

जब पैरों तले न होगी, मिट्टी न ठोस धरातल,  
सिर्फ हाथ आयेगा, करने को एक पश्चाताप।

विकास के नाम पर, कर रहे धरती को छलनी,  
जननी कहकर तुम, कैसे करते हो ये घोर पाप।

एक विनाश सर्वनाश की, क्यों हो रही तैयारी,  
क्यों ले रहे हो, भविष्य अनुजों हेतु अभिशाप।

कल कैसे पाओगे जल, नदी भी गई जो सूख,  
शिव को बुला कौन भगीरथ, दूर करेगा श्राप।





## निवेदन

श्रीमती विदुषी वत्स  
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं ह.)—II  
महाराष्ट्र, नागपुर

है निवेदन मेरा आपसे दोस्तों,  
आओ वक्त की धारा को मोड़ दें।

उठ रही सैकड़ों उंगलियां देश पर,  
ऐसे दरिन्दों की हम भुजाएँ मरोड़ दें।

प्यार हमने जिसे जितना ज्यादा किया,  
बदले में उसने है हमको विष ही दिया।

हाथ बढ़ाते रहे दोस्ती के लिए,  
संधियाँ दुश्मों से करनी छोड़ दें।

पीड़ा दुःख से भरी, आंसुओं से घिरी  
है कहानी उनकी यह गम से भरी।

खाकी वर्दी को जिसने कलंकित किया,  
ऐसे जयचंदों की पसलियाँ तोड़ दें।

खून से लिखी है वीरों की दास्ताँ,  
भूल सकते नहीं ये जमीं ये आसमां।

सर तिरंगे की खातिर कटाना पड़े,  
ना हटाएं कदम पीछे हम दोस्तों।  
है निवेदन मेरा यह आपसे दोस्तों।

# दो बूँद



पंकज अरोरा

लिपिक

कार्यालय महालेखाकार (ले. व हक.)  
हरियाणा, चंडीगढ़

दो बूँद ...?  
दो बूँद बारिश की आस।  
किसान की दो बूँद की आस,  
खेत को दो बूँद की प्यास,  
एक आँसू है, एक पसीना,  
दो बूँद बारिश की आस।  
बीज को दो बूँद की प्यास,  
फूल और फल बस दो की आस।  
सुख व खुशी बस दो की आस।  
दो बूँद बारिश की आस।  
इंद्र की बारिश की आस,  
सूखे को बारिश की आस,  
बच्चे को दूध की प्यास,  
बस दो बूँद बारिश की आस।  
पोलियो में दो बूँद,  
इलाज सिर्फ दो बूँद,  
अमृत भी दो बूँद,  
जहर भी दो बूँद,  
बस दो बूँद बारिश की आस।  
दो बूँद से अमरता,  
दो बूँद से तबाही,  
दो बूँद से दुनिया का नाश,  
दो बूँद जिंदगी का नाम।  
बस फिर क्या समझे?  
समझदारी की दो बूँद,  
नासमझी पर है भारी।  
बस दो बूँद बारिश की आस।  
उठो जागो और कर्म करो,

दो बूँद की आस,  
टूटने मत दो।  
पालो अमृत को,  
जीत लो विश्व को,  
ताकत है सिर्फ दो बूँद  
बस दो बूँद बारिश की आस।  
सत्य और प्रेम का संदेश,  
समझो और जानो,  
विश्व को सचेत करो,  
जियो और जीने दो।  
दो बूँद की आस,  
मिटने मत दो।  
बस दो बूँद बारिश की आस।  
मंत्र फूँककर,  
विश्व विजेता बनो।  
धर्म युद्ध जीतकर,  
कल्याण पथ पर चल पड़ो।  
आस सिर्फ दो बूँद,  
दो बूँद जीवन के।  
सुख व शांति बस दो बूँद,  
दो बूँद बारिश की आस,  
दो ही बूँद प्रेम की प्यास,  
प्रेम की प्यास, दो बूँद बारिश की आस .....।



सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'

सहायक लेखा अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)

हरियाणा, चण्डीगढ़

## दो गज़लें

### गज़ल — 1

जहाँ फूलों भरी राह नहीं जहाँ शम्स<sup>1</sup> नहीं जहाँ माह<sup>2</sup> नहीं  
 वो जहान मुझे तो पसंद नहीं जहाँ रात के बाद सबाह<sup>3</sup> नहीं  
 मुझे प्यार की दौलतें बख्श सनम मुझे ज़र या ज़मीन की ख़्वाह<sup>4</sup> नहीं  
 करूँ क्या मैं हसीन महल को तेरे मेरे पास जो हुजरा-ए-चाह<sup>5</sup> नहीं  
 जहाँ प्यार के वास्ते जाह नहीं जहाँ दर्द में भर सकूँ आह नहीं  
 वहाँ कैसे रहूँ तू बता दे खुदा जहाँ रंज-ओ-अलम की पगाह<sup>6</sup> नहीं  
 मुझे दोष न दे तू हसीन सनम ये हरातर-ए-जिस्म<sup>7</sup> है बार-ए-अलम<sup>8</sup>  
 ये कसूर भी तेरी नज़र का ही था हुआ इश्क़ तो ख़्वाह-मख़्वाह नहीं  
 मेरे होश-ओ-हवास की पूछ न तू कई रोज़ से नींद न ख़्वाब कोई  
 लड़ी जब से है उनकी नज़र से नज़र गया चैन-ओ-सुकून फ़लाह<sup>9</sup> नहीं  
 न ज़मीन मेरी न फ़लक<sup>10</sup> ही मेरा न बशर<sup>11</sup> ही मेरा न मलक<sup>12</sup> ही मेरा  
 तेरे दिल के सिवा मेरी जान-ए-जहाँ कोई ठौर नहीं कोई गाह<sup>13</sup> नहीं  
 जहाँ चाह नहीं वहाँ राह नहीं कि जहान से सीखा है मैंने यही  
 मगर उनकी तलाश वहाँ भी रही जहाँ यार की चश्म-ए-बराह<sup>14</sup> नहीं  
 लिखा कैसा है मेरा नसीब खुदा, कोई सुनता नहीं मेरे दिल की सदा<sup>15</sup>  
 जहाँ प्यार में होता हो सूद-ओ-ज़ियाँ<sup>16</sup> मेरा ऐसे जहाँ से निबाह नहीं

बहर: 112 112 112 112 // 112 112 112 112

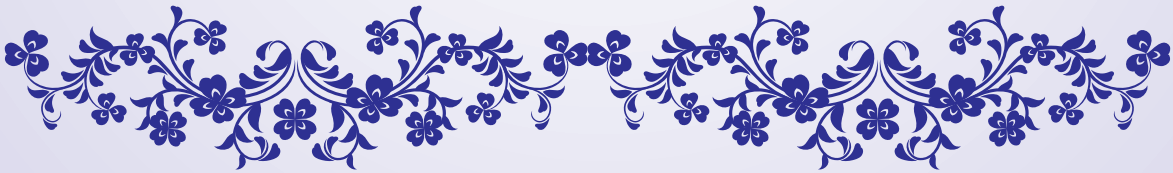
1. सूरज 2. चाँद 3. सुबह 4. तलब, इच्छा 5. प्रेम की कोठरी 6. तड़का, भोर 7. बुखार 8. प्रेम के दुख का भार 9. राहत, आराम 10. आकाश  
 11. आदमी 12. फ़रिश्ता 13. जगत 14. बेचैनी से प्रतीक्षा करने वाला, रास्ते पर आँखें लगाये हुए 15. आवाज़ 16. लाभ और हानि



## ग़ज़ल – 2

वो देखो देख रहा यार आओ सच बोलें  
 मेरा खुद तेरा करतार आओ सच बोलें  
 करो न झूठ की बेगार आओ सच बोलें  
 कभी तो होगा चमत्कार आओ सच बोलें  
 मुहब्बतें रहें हावी हर इक अदावत पर  
 यही हो ज़िंदगी का सार आओ सच बोलें  
 ये माना इल्म नहीं है उन्हें मुहब्बत का  
 कहाँ हैं हम भी समझदार आओ सच बोलें  
 तराशते ही रहे रात-दिन हम उस बुर्त को  
 तभी उन्हें न हुआ प्यार आओ सच बोलें  
 नहीं है हीर सी कोई न अब है राँझा सा  
 गिरा है प्यार का मे'यार आओ सच बोलें  
 तमाम ज़िंदगी सोना है गर मज़े से तो  
 बनो न इश्क के बीमार आओ सच बोलें

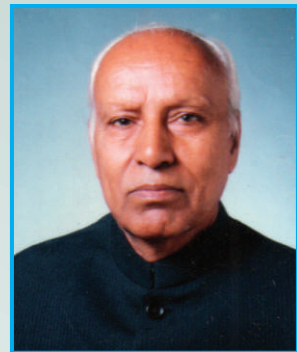
यूँ बोस्तों में कई गुल महक रहे थे मगर  
 बिन आपके लगे सब ख़ार आओ सच बोलें  
 न जाने कैसे कही थी क़तील ने ये ग़ज़ल  
 रदीफ़ है बड़ा दुश्वार<sup>10</sup> आओ सच बोलें  
 दुखी रहा है सदा सत्य बोलने वाला  
 मज़े में हैं सभी अय्यार<sup>11</sup> आओ सच बोलें  
 तुम्हें पता ही नहीं सच पे क्या गुज़रती है  
 करो न झूठ की जयकार आओ सच बोलें  
 सभी ने पोत लिए चेहरे रंग-रोगन से  
 बड़ा किया नहीं किरदार आओ सच बोलें  
 है कूच जब से किया शहर की तरफ़ हमने  
 हुए न गाँव के दीदार आओ सच बोलें  
 हर एक बात पे जो बोलते रहे हैं झूठ  
 वही कहें हमें सरकार आओ सच बोलें  
 उन्होंने यूँ तो कमा ली हैं दौलतें 'मीरा'  
 मगर हुए नहीं दिलदार आओ सच बोलें।



बहर: 1212 1222 1212 1222 / 112

1. ईश्वर 2. सृष्टिकर्ता, विधाता 3. दुश्मनी 4. ज्ञान 5. प्रेमिका 6. मानक 7. वाटिका 8. कांटे 9. क़तील शिफ़ाई का जन्म 1919 में ब्रिटिश भारत (अब पाकिस्तान) में हुआ। उसका असली नाम मुहम्मद औरंगजेब था। उन्होंने 1938 में 'क़तील शिफ़ाई' को अपने कलम नाम के रूप में अपनाया, जिसके तहत उन्हें उर्दू शायरी की दुनिया में जाना जाता है। (उन्हीं की ज़मीन पर कही ये ग़ज़ल) 10. कठिन 11. मक्कार, ठग, चालबाज़

# सी.डी.एस. ले. जनरल बिपिन रावत – श्रद्धांजलि



रामसिंह  
आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)  
हुमायूँपुर, सफदरजंग एनक्लेव  
नई दिल्ली

उत्तराखण्ड राज्य में स्थित पौड़ी एक सुरम्य स्थान;  
जहाँ जन्म लेकर नृसिंह ने भारत भू का बढ़ाया मान।  
आठ दिसम्बर दो सहस्र इक्कीस को चोंपर दुर्घटना घटी अजान;  
कुन्नूर वैलिंगटन समीप जहाँ नीलगिरि पर्वत विद्यमान।

क्षण में भस्मीभूत हुआ हेलीकॉप्टर ले तेरह जन प्राण;  
जनरल रावत सपत्नीक हुए काल कवलित बच न सके प्राण।  
मात्र एक ग्रुप कैप्टन बच पाये श्री वरुणसिंह हादसे में ग्लान;  
एक सप्ताह उपरान्त, बेंगलूरु अस्पताल में उनके भी समाप्त हुए प्राण।

अनेक अलंकरणों से भूषित श्री रावत थे परमवीर सुज्ञान;  
ले. जनरल के सुपुत्र थे, 'सोई ऑफ ऑनर' मिली द्युतिवान।  
कालान्तर में मधुलिका रावत संग परिणय हुआ, मिले दो गुणवान;  
दुर्घटना में, स्वयं भी जलकर, स्वर्ग गई नारी पुण्यवान।

अरी पर सर्जिकल स्ट्राइल प्रहार में बहुत बढ़ाया उनका मान;  
राष्ट्रीयता से प्रेरित योद्धा ने अर्जित किया पूर्ण सम्मान।  
एल.ए.सी. पर चीन संग संघर्ष में अक्षुण्ण रखा देश का मान;  
जब तक सूर्य चन्द्र हैं नभ में ध्रुव सम अटल उनका बलिदान।

# जीवन के बदलते रंग



मेहरबान सिंह नेगी

वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (से.नि.)  
भूखण्ड-191, (एफ 2), सेक्टर 4, वैशाली,  
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201010

मैं था और मेरा किराए का वह कक्ष  
छोटी-सी रसोई थी समक्ष  
पानी की बाल्टी मिट्टी के तेल का स्टोव  
माचिस में कुछ तीलिया  
लोहे की कढ़ाई करछुल तवा और दो पत्तिलिया  
सिलवर की एक थाली थी साथ  
दो रोटी दाल पेट पाल तक सीमित थी बात।  
उजले दिन के ढलने के बाद  
कलुष रात्रि का होना  
मेरे उस जीवन और वस्त्रों के रंग से मेल खाते  
त्रिपाद श्वेतश्याम टेलीविजन का वह कोना  
रात्रिकाल में दीवार से सटे  
उस तख्त पर बिछौने पे सोना।

एक शुभ दिन वह जोवना जब वेद मंत्रोच्चार के साथ  
हल्दी के स्वर्ण वर्णी रंग में नहाई थी  
तब वह सोलह श्रृंगार कर  
जीवन संगिनी का रूप धर  
मेरी श्वेत-श्याम दुरंगी जिन्दगी में  
नव रंग लिए सरमाती पायल छनकाती मन भरमाती  
संग में कांच की चूड़ियां खनकाती  
मेरे कक्ष में वधु रूप में प्रवेश पाई थी

तन बदल पे लपेटे सितारों के संग  
उर उपजी उस उमंग तरंग का वही रूप रंग  
उभरा आज बन के एक प्रसंग।

वह  
जोवना  
जो नवेली आई थी  
मेरे उस श्वेतश्याम जीवन में  
समस्त रंग-तरंग उमंग वही तो  
अपने संग में लाई थी  
उसी ने मेरा सारा नीरस उदासीन  
रंगहीन जीवन संवारा  
जीवन की बगिया महकाई थी  
उस के उन संस्कारों से गुंथी  
घने केशों की वह लम्बी वेणी  
लगती थी जैसे पावन संगम त्रिवेणी  
झुकी पलकों में सजता वह सुरमई कजरा  
वातावरण को सुरभित करता फूलों का गजरा  
नखों में नेल पॉलिस माथे पर झिलमिलाती बिंदी  
नज़रें लजाती जुबां स्तब्धता मिटाती आंचलिक हिंदी  
परिलब्ध शब्द-शब्द सुरमय सुरीले मनभावन  
शब्दों के तरंगित स्वरों में भाव पवित्र पावन



सिंदूरी रंग में रंगी बस छोटी सीमांग  
 उस के दो होंट थे रक्तिम लाल  
 खिले गुलाब से भी गुलाबी गाल  
 स्वर्णिम वर्ण थे वे समस्त गहने  
 उसने थे जो अत्यंत मनभावन अरमानों से पहने  
 जोवन में प्रसरते रंगों के संग लगे थे वे भी कुछ कहने।

कक्ष के उस कोने पर सजा था रंगीन टीवी  
 तख्त पर पदासीन थी एक अदद बीबी  
 कक्ष की खिड़की—दरवाजों पर  
 झूलते रंगीन पर्दे लगे थे  
 चमचमाते सितारों से जड़ा  
 उसी शिल्पी के हाथों कढ़ा वह ताज  
 लौह की कील में टंगी  
 चांद सितारों वाली युगल तस्वीर  
 मेज में फूल पत्तियों वाली डिजाइन में कढ़े  
 प्रसरित मेजपोस का भी अपना था राज  
 सज रहा था गृहलक्ष्मी के  
 साम्राज्य में बदलाव लेते उस कक्ष का हर पक्ष  
 विधि प्रदत्त उसके दो कोमल कर्मण्य हाथों से  
 जो थे ही इतने दक्ष  
 संगीतमय हो रहा था वह सजा—धजा कक्ष  
 हरी चूड़ियों की खनक के संग पायल की झंकार थी  
 आ गई एक जवां परी सजी संवरी जो फनकार थी  
 डोलते थे झूम के कानों में कुछ बोलते दो झुमके  
 गजगामिनी की चाल में ओ मद मस्त तुमके  
 रंग रूप टपकता जैसे मदमस्त वसंत की नव बहार थी।  
 उसके संग बसते घर संसार में  
 सुर संगीतमय नव बहार की बयार में  
 पावन मंद सुरभित अगरबत्ती से सुलगते प्यार में  
 खिलके महकता था चमन — लग जाता था मन

न जाने कैसे कब बीत गया वह  
 स्वर्णिम बासंती आधा जीवन।

आज उसके जाने के बाद  
 पलपल क्षण—क्षण छलक आती है याद  
 उस भव भार से उस लरजती डार की  
 उस उरबसी ऊर्जस्वी के दिए हर हसीं उपहार की  
 आती है याद अब रह—रह कर हिए  
 उस काल खण्ड में जिए  
 उन जीवन के रंगों में रंगे चमकते सितारों की  
 उसकी हंसी के उन गूंजते फव्वारों की।  
 अब उसका दिया हुआ घर है गाड़ी है सब कुछ है  
 पर उस के सापेक्ष सब तुच्छ है  
 बचा क्या जिन्दगी में?  
 कौन है अपना सिवाय उसकी यादों संवादों में  
 बसे उस प्रतिरूप के  
 पड़ गया धुंधला पर इन नयनों में बसे  
 उस देवी स्वरूप के  
 बस मैं उन पुरानी अधूरी कहानी की यादों  
 उन अधूरे संवादों के सहारे जी रहा हूं  
 पुनरमूसकः भवः के भाव में  
 जीवन के खारे अश्रुओं को पी रहा हूं।  
 अब अधिक सोचने को कुछ नहीं है  
 बस पार्श्व में मैं झांकता हूं  
 उसके उन समर्पण के रंगों में रंगे भावों में  
 था जो अद्भुत वह आंकता हूं।  
 मैं उसे महसूसने जब  
 गहराई में जाता हूं  
 उसके आने से पहले और उसके जाने के बाद  
 जीवन का सफर दुष्कर उदासीन नीरस  
 और रंगहीन पाता हूं।

# किस्मत की बात



रूप लाल  
सहायक पर्यवेक्षक  
कार्यालय वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा  
पोस्टल एकाउन्ट ऑफिस काम्पलैक्स  
पोस्ट रोड, सीनपुरा, कपूरथला-144601



प्यार मिले या न मिले, किस्मत की बात है,  
अकेले जीवन गुजार देना, हिम्मत की बात है।

तेरा प्यार से बुलाना, हसरत की बात है,  
और आंखों का झुकाना, मुहब्बत की बात है।

सच तो है कि मांगने से इज्जत मिलती नहीं,  
मगर इज्जत का मिलना, तो इज्जत की बात है।।

जो सच बोले न सुने, उसे इन्सां कहूं कैसे,  
सच कहना और सुनना तो जुर्रत की बात है।

रोटी, कपड़ा तथा घर सबको ही चाहिए,  
यह सब कुछ न मिलना, तो गुर्बत की बात है।

कोई वक्त था वो नज़र-अंदाज करते थे,  
उनका महफिल में बुलाना, हैरत की बात है।



## इति और हास



भूपेन्द्र कुमार शर्मा  
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी  
मुख्यालय

था कभी मैं सम्बल तुम्हारा  
तुम्हारे गहन तिमिर पथ का उजियारा।  
भीत सा वह भीति सा जिसके सहारे तुम  
हर समस्या का समाधान पाते थे।  
सारे उलझन मुझ खूंट्टी पर टांग  
निश्चित हो जाते थे।  
था तो नहीं पर तुम्हारे कथनानुसार  
था मैं पथ प्रकाशक देवतुल्य सहधर्मी प्यारा।  
मिलकर विकट जीवन को सरल बनाया  
स्नेह दिया पारितोषिक स्वरूप प्रचुर सम्मान पाया  
तुम्हीं तो थे जो कहते थे कि मैं जीना सीखाता हूँ  
भीगी पलकों पर आशा की जोत जगाता हूँ।  
देववश अचानक हुआ मैं  
एक दुष्चक्र का शिकार  
तुम भी थे उस जाल चक्र के इक तार  
दुर्भाग्य कि तुमने मेरे स्नेह का गलत अर्थ लगाया  
पिता तुल्य निर्दोष पर मिथ्या दोष लगाया  
किया सरल मन पर एक कुठाराघात  
परन्तु मैं बचा, सम्भला सह गया  
वो तीक्ष्ण हृदयाघात  
किन्तु  
तुम यह करके प्रसन्न नहीं थे  
परिस्थितिवश थे उस षडयंत्र के एक यंत्र  
इस सदविचार ने रखा भ्रम में  
लम्बे समय तक नहीं कर पाया कोई उपालम्भ  
अपने ईष्ट से, ईश्वर से  
पर दोष की पीड़ा भी सरलता से नहीं सह पाया  
शान्त चित्त रह पान की वह यंत्रणा  
किसी ने तो दी होगी तुम्हें यह मंत्रणा  
छोड़ो अब पूर्ण हुआ वो ग्रहण काल  
स्वीकार है जो नियति ने दिया मलाल परन्तु अब  
उस अपराध बोध से तुम कैसे मुक्ति पाओगे  
मैंने कोई अपराध नहीं किया

जग से कह लो  
स्वयं से कैसे कह पाओगे?  
ईश्वर की लाठी में आवाज नहीं होती  
जो स्थिति कल थी वो आज नहीं होती  
हुआ कल गर तुम पर कोई देवाघात  
नियति ने तुम पर किया कोप  
कोई आघात हुआ तुमसे  
या तुम्हारों से कुछ अवांछित अप्रिय  
सजल नेत्रों से अपनी अन्तर्त्मा से कैसे  
बच पाओगे  
मैंने नहीं किया कभी किसी का बुरा  
कोई अपराध या पाप  
मैं निर्दोष हूँ  
ईश्वर ने क्यों दण्ड दिया मुझे यह  
अपने प्रभु से कैसे कह पाओगे  
मुझसे किया अपराध कैसे भूल पाओगे  
कलंकित कर निर्दोष को  
कैसे सदा मुख उज्ज्वल रख पाओगे  
जीवन का चक्र निरंतर निरपवाद चलता रहेगा  
मेरा मौन मर्म तुम्हारे दोषी  
अन्तर्मन में पलता रहेगा  
समयावधि से यह पीड़ा काल  
इतिहास बन जाएगा  
मेरे लिए वेदना की इति  
तुम्हारे लिए  
मंगलमय जीव का  
हास बन जाएगा।



## प्रस्थान-पत्र



केदार नाथ प्रसाद  
सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी  
जय महावीर कालोनी, संदलपुर  
महेन्द्र, पटना

जाना ही था तो क्यों आयीं  
मेरे घर में बन नेह—सुधा।  
ओठों की लाली पर रख कर  
अनुराग, प्रेम और स्नेह श्रद्धा।  
आंचल में भर कर मौलसिरी,  
आंखों में स्वाती की बूंदें।  
रक्तिम कपोल पर स्वप्न सुमन  
लहरातीं आयी थीं चंदे!  
पलकों पर था मोहक कम्पन,  
अधरों पर मधुरिम हास्य रेख।  
जब मिला उन्हें प्रस्थान—पत्र  
वह लगीं देखने मुझे देख।  
पढ़ते—पढ़ते वह दुखद पत्र  
डब—डब हो गये नयन उनके।  
कुछ स्वप्न छोड़, कुछ स्वप्न लिये  
चल पड़े चरण बोझिल बनके।  
आयी थीं बनकर वह पूजा  
वह अगुरुधूम सी चली गयीं।

थे मौन नयन, गमगीन अधर  
आंसू छलकाती चली गयीं।  
मैं खड़ा—खड़ा देखता रहा  
बुझ गया दीप, छा गया तिमिर।  
दो बूंद ढरे थे आंखें से  
हो गया शांत सुरभित समीर।  
चम्पकवर्णी, चन्दनगंधी।  
अर्पित है मेरा आमंत्रण।  
आयें दुल्हन सी रातों में  
करबद्ध प्रार्थना, अभिनन्दन।  
कुछ फूल चढ़ेंगे पांवों पर,  
गूंजित होगी जय—जयवंती।  
है यही प्रार्थना अब मेरी  
आयें बनकर शुभ रसवंती।  
आरती—दीप की छाया में  
स्वागत होगा हे! स्वर्ग—सुधे।  
मेंहदी रच दूंगा हाथों में  
हे! कमल पुष्प पावन वसुधे।

## कन्या भ्रूण हत्या



सुश्री स्वाती गुप्ता

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी  
कार्यालय प्रधान निदेशक (वाणि.) लेखापरीक्षा,  
प्रथम तल, बासवा भवन, बेंगलूर-560001

आँखों में लिए सपने हज़ार  
भरना था जिसे सबके मन में प्यार  
अपनों ने ही उन आँखों को बंद कर दिया  
खिलने से पहले क्यूं माली ने फूल कुचल दिया।

एक सवाल वो मुझसे करती हैं  
मेरी गलती ही क्या थी?  
क्यूं मुझे इतने बेरहमी से मार दिया  
खिलने से पहले क्यूं माली ने फूल तोड़ दिया?

मैं चुप ही रहती हूँ  
क्या कहूँ उसको  
तेरा लड़की होना ही तेरी गलती थी  
शायद इसलिए माली ने खिलने से पहले फूल  
तोड़ दिया!!!

मेरा ये उत्तर पाकर  
उसे खुद से धिन्न आने लगती है  
ऐसे माँ बाप पाने से तो अच्छा है  
खिलने से पहले माली ने फूल कुचल दिया!  
(वो लड़की अपने माँ के पेट में क्या सोचती है)

रंग बिरंगी दुनिया है बाहर  
मेरे ही माँ बाप ने मुझको

मेरे लहू का लाल रंग दिखा दिया  
ना जाने क्यूं माली ने फूल कुचल दिया?

ऐसी छोटी सी गलती की ऐसी सज़ा देते हुए  
उनके हाथ क्यूं नहीं कांपे  
माँ तो खुद एक देवी थी  
फिर उसने मेरे सपनों के पौधे क्यूं नहीं रोपे  
तो ना जाने क्यूं माली ने फूल कुचल दिया?

मैं उनके आँगन में हँसना, खेलना चाहती थी  
उनके घर को खुशियों से भर देना चाहती थी  
उन सबकी आँखों का तारा बन जाना चाहती थी

ना देते वो मुझे कोई खुशी  
इस बात का गम न होता  
मुझे कौन सा जिंदगी भर पालना था  
फिर क्यूं माली ने फूल कुचल दिया?

मुझे यकीन नहीं आता मेरे माँ बाप ने  
मुझे मार दिया  
मांग लेते जान तो खुद दे देती  
कोई न कोई मजबूरी रही होगी  
शायद इसलिए माली ने फूल कुचल दिया!

# नन्ही कली



सुश्री पूनम शर्मा

वरिष्ठ अनुवादक

कार्यालय प्रधान निदेशक (वाणि.) लेखापरीक्षा,  
प्रथम तल, बासवा भवन, बेंगलूर-560001

वो पल याद है मुझे जब वह नन्ही कली  
इस संसार में आई थी।  
वो पल याद है मुझे जब उसने अपनी  
पहली किलकारी सुनाई थी।  
इतरा उठी थी कुछ इस तरह अपने भाग्य पर मैं।  
उसकी मुस्कान से मेरी सारी पीड़ा हर आई थी।  
जो मासूम सा चेहरा उसका देखा था आंखों ने पहली बार।  
एक बार नहीं कई बार, बारम्बार,  
हुआ था हृदय मेरा हर्षित और हर्ष हुआ था अपार।  
काले बादल की घटाओं से, लहरा रहे थे उसके केश।  
अप्रतिम सौंदर्य का था उसमें समावेश  
जब नन्ही सी उसकी उंगली ने हाथ मेरा थामा था,  
बस यही है अब जीवन मेरा, मैंने भी माना था।  
नन्हे कदमों से छनछन करके चलने लगी है आंगन में।  
जैसे वर्षा की बूंदें छम छम बरसे सावन में  
तोतली सी आवाज में जब पहली बार मम्मा मुझे पुकारा था  
उसके तोतले पन की खुशी से झूमा संसार मेरा सारा था।  
ज्यों ज्यों बचपन बढ़ता गया नन्ही कली भी खिलती गई  
बिन मांगे ही खुशियाँ जहान की  
उसके होने से मुझे मिलती गई।  
इसी प्रसन्नता, इसी हर्ष, इसी उल्लास में,  
समय निकलता जा रहा था,  
पर पता नहीं एक प्रश्न अन्जान अज्ञात सा  
मस्तिष्क में मेरे घर करता जा रहा था।  
अब बड़ी हुई बिटिया मेरी, स्कूल भी तो जाना होगा,  
इसके सम्पूर्ण चहुँ विकास हेतु शिक्षा का  
स्रोत इसे भी दिलवाना होगा।  
अब तो चिड़िया के बच्चे की भांति,  
इसे अपने घोंसले में ही रखा था मैंने,  
अब इसे पढ़ा लिखा, शिक्षित कर  
समाज हेतु योग्य बनाना होगा।

वह दिन शुभ भी आया बिटिया मेरी स्कूल गई,  
धीरे धीरे मैं भी सारी चिंताओं को भूल गई।  
दिन प्रतिदिन उसका स्कूल आना जाना हुआ,  
पर पता नहीं मेरी शंका का रूप, क्यों नहीं पुराना हुआ।  
क्यों उसे कहीं भेजने पर मैं स्तब्ध सी हो जाती हूँ,  
क्यों इस समाज के डर से मैं खो सी जाती हूँ।  
जहाँ नन्हीं बच्ची, युवा किशोरी, किसी का भी सम्मान नहीं,  
क्या यह महिला वर्ग का अपमान नहीं।  
क्यों झिझक है आखिर बेटियों को अकेले कहीं भेजने में,  
क्यों रुह काँपती है मेरी, उसकी सुरक्षा के लिए सोचने में।  
क्या शिक्षित वर्ग की यही एक पहचान है,  
जहाँ नन्हे कदमों से लेकर बुढ़ापे तक  
नारी का हो रहा अपमान ही अपमान है।  
शिक्षा का अभिप्राय पन्नों को रटना नहीं,  
शिक्षा का अभिप्राय सभ्यता से कटना नहीं।  
क्यों न इस समाज को उत्तम बनाया जाये,  
क्यों न अपने बेटों को यह घर में ही सिखलाया जाये।  
हो बहन, माँ या फिर संगी साथी तुम्हारी,  
सभी की इज्जत करना तुम्हारी ही है जिम्मेदारी।  
मस्तिष्क में कतई यह विचार ना आने पाये  
और अब कोई बच्ची निर्भया, जैसिका, लाली ना बन जाये।  
हर बेटा को हर बच्ची को,  
कल्पना, सिंधू, मल्लेश्वरी, किरन,  
सानिया, इंदिरा, प्रतिभा बनायेंगे।  
तब कहीं जाकर भारत वर्ष को हम,  
गर्व से भारत वर्ष कह पायेंगे।



# आज की नजर

विनोद कुमार  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी  
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (ऊर्जा)  
10, बहादुरशाह जफर मार्ग,  
नई दिल्ली-110124

एक ही घर में कई मकान देखता हूँ।  
जब मैं आस-पास के इंसान देखता हूँ॥

देश ने तो कभी नहीं चुना अपना कोई धर्म।  
फिर क्यों मैं अलग-अलग हिंदू और मुसलमान देखता हूँ॥

वीर जवानों की कुर्बानी का क्या मोल सोचूं।  
जब नशे में डूबे आज के जवान देखता हूँ॥

हर कोई फैला रहा नफरत है आज कल।  
इंसानियत को हो रहा ये नुकसान देखता हूँ॥

हत्या लूट डकैती और न जाने क्या-क्या होगा।  
यहाँ हर नुककड़ पे मौत की दुकान देखता हूँ॥

कब रुकेंगे ना जाने बेटियों पे ये जुल्म।  
हर बेटे की माँ को आज परेशान देखता हूँ॥

जाने किसकी नजर लगी खुश बहार गांव को  
गरीबी और तंगी से बदहाल हमारे किसान देखता हूँ॥

कभी सोने की चिड़िया कहलाता था ये देश।  
आज हजारों टुकड़ों में बंटा ये हिंदुस्तान देखता हूँ॥

कब दूर होंगे ना जाने सबके दुःख और दर्द।  
गहरी नींद में सोया आज भगवान देखता हूँ।  
गहरी नींद में सोया आज भगवान देखता हूँ॥

# आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका

लागोस, यहाँ मिला एक सौ से  
ज्यादा किस्म का नाश्ता

भाग-2 (कड़ी जोड़ने के लिये कृपया पिछले 137वें अंक को देखें)



कमलजीत सिंह रामवालिया  
प्रधान निदेशक

हम लागोस, नाइजीरिया की राजधानी उस सप्ताह पहुंचे जब चुनाव होने वाले थे। नाइजीरिया का एक बड़ा चुनावी दिन, 28 मार्च शनिवार जो राष्ट्रपति और नेशनल असेंबली दोनों के होने वाले चुनावों से संबंधित था। यहां दो प्रमुख दावेदार थे – पीठासीन राष्ट्रपति श्री गुडलक जोनाथन जो पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी – पीडीपी के थे और उनके प्रतिद्वंद्वी मेजर जनरल मोहम्मद बुहारी जो ऑल प्रोग्रेसिव कांग्रेस – एसीपी पार्टी के थे। और बाकी 12 अन्य उम्मीदवार भी थे जो सभी अपनी किस्मत आजमा रहे थे। कुल मिलाकर सैनेटरियल सीटों पर 584 और हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेशन सीटों पर 1544 उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे थे। ये चुनाव अब तक के सबसे महत्वपूर्ण चुनाव थे। सत्ता को हासिल करने का यह एक बड़ा मुकाबला था। अफ्रीका महाद्वीप में सामाजिक परिवर्तन में नाइजीरिया

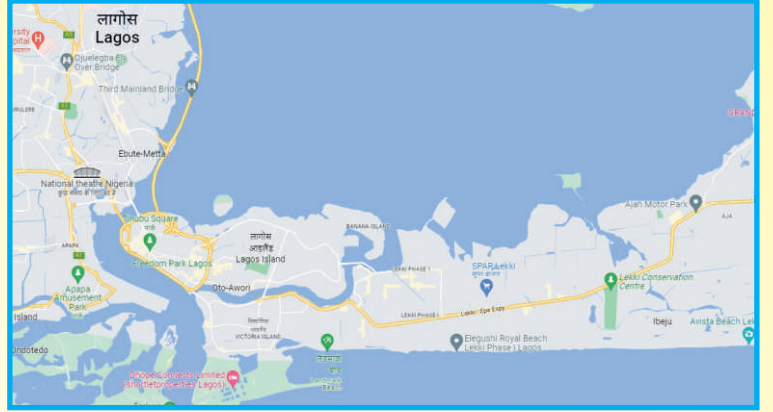
का स्थान सबसे आगे है लेकिन यहाँ सामाजिक दरारें भी गहरी हैं। चुनाव के मद्देनजर वाहनों की आवाजाही भी बंद है। इस क्षेत्र में सड़कें वीरान हैं, कभी-कभार ही किसी व्यक्ति को केवल आज चलते हुए देखा जा सकता था। यह एक कर्फ्यू की तरह था। हमें नाश्ते की लॉबी में सख्ती से अंदर रहने की हिदायत दी गई, क्योंकि शहर में या अन्यत्र कहीं भी, किसी भी समय, चुनावी हिंसा हो सकती थी। इस संबंधी चर्चा यात्रा वृत्तांत में आगे करेंगे।

जैसा कि पहले ही दिन लॉबी में हमारा परिचय श्री हरसुख और उनके एक साथी से हो चुका था जो कि दोनों ही भारतीय थे और होटल इंटरकांटिनेंटल, लागोस में कार्यरत थे, उनकी हमसे मुलाकात होटल की लॉबी में ग्राउंड फ्लोर पर बुफे नाश्ते के वक्त हुई थी। वहाँ का खाना अलग प्रकार का होने के कारण



हमें भारतीय खाने की दरकार थी। उन्होंने हमें बताया कि भारतीय भोजन की व्यवस्था की जा सकती है क्योंकि श्री गुप्ता नाम का एक व्यक्ति यहां लागोस शहर में भारतीय खाने की टिफिन सेवा चलाते हैं और उनका भोजन काफी अच्छा होता है। यदि हम चाहें तो वे व्यवस्था कर सकते हैं। इससे भोजन के मामले में हम थोड़ा आश्वस्त हो गये, फिर भी, यदि हम चाहें तो हमारे पास होटल में अन्य प्रकार के खाद्य पदार्थों को आजमाने का विकल्प भी मौजूद था। यहां परोसे जाने वाला नाश्ता सौ से अधिक किस्मों का था और इसमें कई तरह के फलों के जूस भी उपलब्ध थे। यहाँ नाश्ते में “कॉन्टिनेंटल नाश्ता” शामिल था जिसमें ताजा निचोड़े हुए संतरे, अंगूर, गाजर के रस का विकल्प भी था। “मॉर्निंग बेकरी बास्केट” में डेनिश पेस्ट्री, फ्रेंच रोल (क्वासंग) और अन्य प्रकार के रोल या टोस्ट, मौसमी कटे हुए फल और हॉट चॉकलेट या चाय कॉफी आदि थे।

“अंग्रेजी नाश्ते” में ताजा संतरे, अंगूर या गाजर का रस, बेकन के साथ दो अंडे, टमाटर और हैश ब्राउन, डेनिश पेस्ट्री के साथ बेकरी बास्केट आदि और गर्म कॉफी / चाय / चॉकलेट शामिल थे।



भूगोलिक स्थिति के अनुसार लागोस शहर की तुलना मुंबई शहर से की जा सकती है

“नाइजीरियाई सूर्योदय के नाश्ते” में शामिल थे ऊपर बताए गए जूस, बकरे के मांस या मछली स्टू के साथ सर्व किए गए उबले हुए याम को तले हुए कदली के साथ बीनस, मक्की का दलिया, अकरा या मोइन-मोइन, बेकरी बास्केट में कई प्रकार के अंडे, मौसमी फल, ब्रेड रोल और टोस्ट के साथ गर्म कॉफी / चाय / चॉकलेट शामिल थी।

“फिट फार फन” में उपरोक्त जूसों के अतिरिक्त जैम और मार्जरीन वाले ब्राउन टोस्ट, आधे ठंडे किए हुए अंगूरों के फल, सादा दही या फलों के स्वाद वाला दही, कटे हुए मौसमी ताजे फल और गर्म चाय, कॉफी या चॉकलेट।

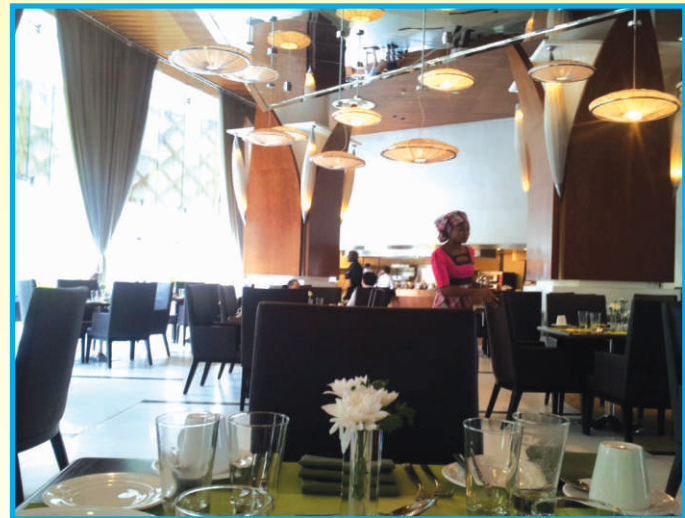


होटल इंटरकॉन्टिनेंटल का हवाई दृश्य



होटल के कमरे से बाहरी दृश्य





इकाबो भोजनालय कक्ष का दृश्य

“अन्य व्यजनों” में फ्रूट स्मूदी — केला, स्ट्रॉबेरी, सेब, शहद आदि शामिल थे। “गर्म और ठंडे सीरियल” में शामिल था जई का दलिया, फुल क्रीम या स्किम्ड ठंडे दूध के साथ एक चुनिंदा सीरियल, फल और दही के साथ मूसली। मेपल सिरप या शहद के साथ पैनकेक और बेल्जियन वैफल, टमाटर के साथ अंडे का सफेद भाग, मशरूम, बेल पेपर, स्मोक्ड साल्मन मछली और टोस्ट या ब्रेड रोल को चुनने के साथ परोसा गया था क्रीम चीज।

“बेकरी” वाली मेज पर थे ओवन में पकाये हुए ताजे ब्रेड रोल, क्रोइसैंटस (क्वासंग), डेनिश पेस्ट्री, विभिन्न

फलों के मुरब्बे (जैम), शहद, मक्खन और मार्जरीन के साथ परोसे गए सफेद और भूरे रंग के टोस्ट आदि शामिल थे।

नाश्ते के बाद, हमने 5वीं मंजिल पर बने हुए स्विमिंग पूल की ओर रुख किया ताकि इसमें नहाने का टाईम और सहूलियतों का पता कर सकें। इसी बीच मेरे पास श्री चौधरी, एच.ओ.सी. का फोन आया, वह होटल के भोजन के बारे में थोड़ा चिंतित लग रहे थे। हमने उन्हें बताया कि होटल के मेनू में हमारे पास भारतीय भोजन का विकल्प है जिसको हम ट्राई करेंगे। अगर नहीं अच्छा लगा तो हम चीनी भोजन भी ले सकते हैं जो



सुबह का नाश्ता



नाश्ता बुफे में विभिन्न प्रकार के फल





नाश्ता बुफे में विभिन्न प्रकार की बेकरी सामग्री

हमारे लिए शायद ठीक हो। हमने उनसे कहा कि वो फिकर ना करें एक-दो दिन की बात है जैसे ही चुनावों का शोर-श्रावा खत्म होगा फिर सब नार्मल हो जायेगा।

नीचे लॉबी से निकलकर हम पांचवीं मंजिल की तरफ लिफ्ट लेते हुए बढ़े। यहाँ आना हमारे लिए विशेष था क्योंकि इंटरकांटीनेंटल होटल के इन्फिनिटी पूल में तैरना एक अनूठा अनुभव है। यह एक मीडियम साईज का अच्छा पूल है। यह सोच कर अपने साथ मैं तैराकी पोशाक लाया था, किसी वक्त तैरने का आनंद लेना बढ़िया रहेगा। पांचवीं मंजिल पर यह पूल छत पर बना

हुआ है जहां से शहर का दूर-दूर तक साफ नजारा दिखाई देता है और यह तैराकों और खासकर उन लोगों के लिए बहुत रोमांटिक एवं आरामदेह हो सकता है जो सिर्फ मौज करना चाहते हों और दूर समुद्र के दृश्य का आनंद लेना चाहते हों। उसी पांचवी मंजिल पर और पूल से कुछ कदमों की दूरी पर पीएस एसपी रेस्तरां है जो, पूल पर या आसपास के "जेन टैरेस" पर एक इनडोर ला-क्राई मेनू प्रदान करता है जेन टैरेस का आकार भी बहुत बड़ा है, अतः बड़ी पार्टियों के लिए भी यहाँ जगह की कमी महसूस नहीं होगी।

ऊपर अपने कमरे की बालकोनी से मुझे समुद्र में लंगर डाले एक समुद्री जहाज दिखाई दे रहा था। आज

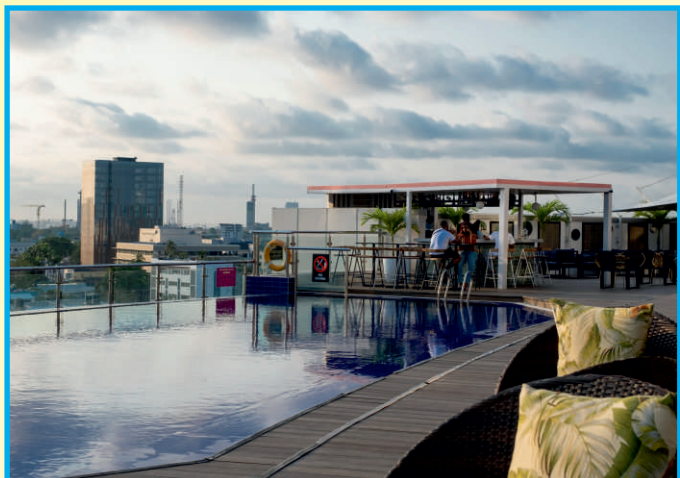


लाजवाब बुफे



भोजनालय कक्ष

ज्यादा आवाजाही नहीं थी लेकिन दर्जनों जहाज पास ही में लंगर डाले हुए थे। यह होटल जिस क्षेत्र में स्थित है वह प्रीमियम एरिया है। यह एक मिश्रित उपयोग वाला वाणिज्यिक और आवासीय द्वीप है जो लागोस के अन्य भागों के साथ पुलों से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। नजदीक ही प्रसिद्ध बाजार बालोगुन मार्केट हैं – जो लागोस द्वीप पर कई गलियों में फैली हुई है। विभिन्न कपड़ों पर बड़ा मोलभाव भी किया जा सकता है, जैसाकि लेस, अंकारा और कॉरपोरेट वियरस और



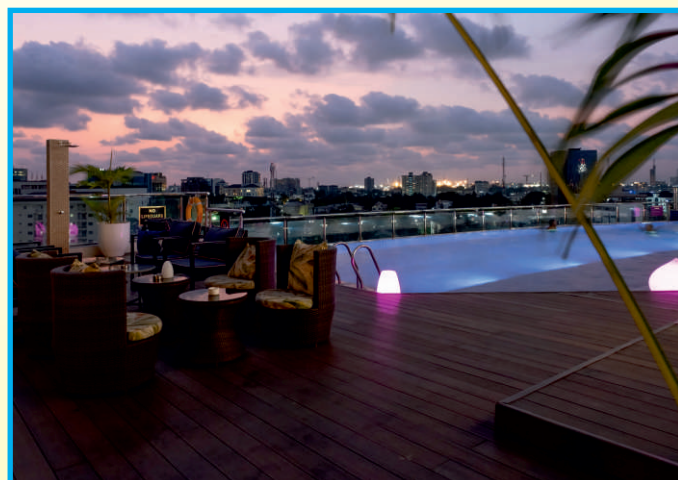
तरणताल के पास ओपन एयर पीएस एसपी रेस्टरां

जूतों पर। यहां हर समय भीड़ लगी रहती है। बाजार जाने के लिए हमने सोचा कि यह अच्छा होगा कि किसी ऐसे व्यक्ति का पता लगाया जाए जो आसपास का रास्ता जानता हो और यह जानकारी भी रखता हो कि मोलभाव कैसे किया जाता है। जाकंडे बाजार के नाम से जानी जाने वाली लेक्की मार्किट, एक छोटा सा नुकडड बाजार है इसमें मोतियों, वस्त्रों, हस्तनिर्मित शिल्प, पेंटिंग, लकड़ी की नक्काशी और अन्य कलाकृतियों को बेचने वाले कारीगरों के अनेकों स्टाल हैं। यहां सांस्कृतिक स्मृति चिन्ह सस्ते में मिल सकते हैं। यहां जमकर सौदेबाजी होती है। यहाँ के शॉपिंग मॉल बड़े हैं मेगा प्लाजा – ईडाउ मार्टिनस, दि पॉमस, सिटी मॉल, इकेजा सिटी माल, डोमिनो (ई सेंटर) आदि।

विकासशील देशों की यह आम समस्या है कि ऊर्जा आपूर्ति हमेशा कम ही रहती है। और हमारी तरह ही नाईजीरिया के बड़े शहर लागोस में बिजली की आपूर्ति में भी काफी मुश्किलें हैं। होटल में दिन के दौरान, लगातार बिजली की ट्रिपिंग हो रही थी और शाम को काफी लंबे समय तक बिजली बंद रही। बिजली के लिए होटल को बार-बार डीजल जनरेटर से जोड़ना

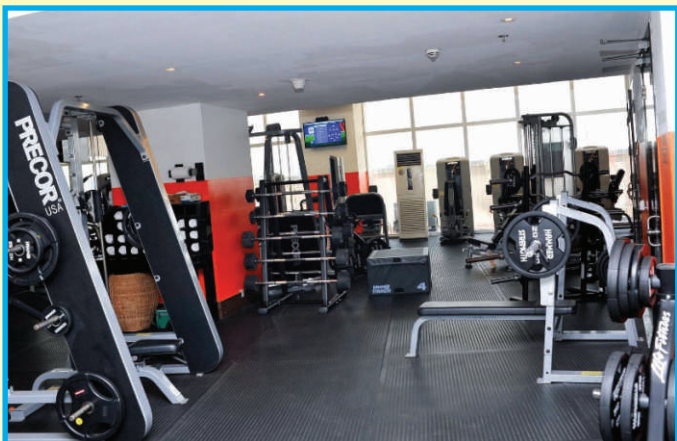
पड़ा था। उधर सूर्य ढल रहा था इस आइलैंड पर देर शाम तक भी सड़कें आज सूनी रहीं। मैंने पांचवीं मंजिल इन्फिन्टी पूल पर तैराकी की, जिम भी गया, जिम में सभी आधुनिक मशीनें उपलब्धित थी। इसके लिए प्रोफेशनल ट्रेनर भी मौजूद था जिससे जिम मशीनों के प्रयोग आदि के लिये मार्गदर्शन लिया जा सकता था।

अगले दिन 29 मार्च को मैं थोड़ी देर से उठा, कल की पूल और जिम की थकावट की वजह से। खिड़की से मैं समुद्र में जहाजों की कुछ हलचल और सड़क पर कारों आदि की आवाजाही देख सकता था। कल वाहनों की आवाजाही पूरी तरह से ठप होने के बाद यह एक अच्छा बदलाव था। इस देश के कुछ हिस्सों में कुछ हिंसक घटनाओं के बावजूद कुल मिलाकर राष्ट्रपति और असेंबली के चुनाव शांतिपूर्वक संपन्न हुए थे। मेरे पास श्री चौधरी का फोन आया कि श्री गुप्ता केंटरर द्वारा घर के बने लंच और डिनर की व्यवस्था की गई है और वह इसे डिलीवर करेंगे। होटल के नाश्ते में फिर से कई प्रकार की असंख्य चीजें थीं और हमने एक शानदार नाश्ता किया। मैंने पहली बार बेकन खाया जो एक सफेद रंग का नरम स्टफ था लेकिन यह मुझे पसंद नहीं आया। नाश्ते में मैंने कोई चाय या कॉफी



“जेन टैरेस”, तरणताल के पास बैठने की जगह





आधुनिक मशीनों से सुसज्जित जिम

नहीं ली। बस सिर्फ थोड़ा सा चावल और ब्रेड और फ्रूट स्मूदी ली। वहाँ से फारिग होकर हमने अगले दिनों के कामकाज का जायजा लिया और इससे संबंधित योजना बनाई ताकि कार्य निर्बाध एवं कुशलतापूर्वक सम्पन्न हो जाये।

लंच के समय मेरे पास श्री गुप्ता का लंच डिलीवरी के लिए फोन आया। हमें लगा कि वो कुछ वक्त बाद पहुंचेंगे पर वो तुरंत पहुंच गए हम उन्हें नहीं जानते थे, कभी मिले भी नहीं थे पर फिर भी हमने उनकी भारतीय लोगों के चेहरे मोहरे से और उनकी कार की दिखावट से पहचान लिया, उनकी कार एक काली शेवरले थी जिसके बम्पर टूटे हुए थे जो उन्होंने टेप से जोड़ रखे थे। ऐसे लगता था जैसे किसी घायल शख्स पर पट्टियां बांधी हों। हो सकता है उन्होंने इस गाड़ी को डिलिवरी के लिए जानबूझ कर ऐसी लुक्क में रखा हो ताकि कोई रास्ते में उनपे कोई वार ना कर दे या लूट ना ले। हमने उनसे भोजन ले लिया और उनको इसके लिए धन्यवाद दिया।

अब यह दोपहर का समय था बाहर हवा गरम थी जैसे हमारे यहाँ अप्रैल में होती है। पर यह तो पांच तारा होटल था, अंदर लाबी में ए.सी. से आरामदायक

माहौल बना हुआ था। लाबी में सुंदर अंग्रेजी लाइव बैंड, एक महिला गायिका, और यामाहा और ड्रम पर दो उपवादक थे। यह रोमांटिक किस्म का संगीत था, जो कानों को भा रहा था। कुछ देर हम वहाँ बैठे और इस रोमांचित संगीतमयी माहौल का आनंद लिया। बैंड के लोगों को धन्यवाद देते हुए हम ऊपर कमरे में दोपहर के भोजन करने के लिए चले गये। पर कमरे में बिजली की कई लाइटें खराब थीं, मैंने तत्काल सेवा के माध्यम से इसे नोट कराया लेकिन कोई भी लंबे समय तक इसकी मरम्मत या इसे ठीक करने नहीं पहुंच सका।

दोपहर के भोजन का हम सबने इकट्ठे आनंद लिया, उसके बाद मैंने जिम जाने के बारे में सोचा, मैं सुबह जिम नहीं जा सका था और उसके बाद हमने चमचमाती धूप में तैराकी की। सूरज तेजी से चमक रहा था, अटलांटिक सागर की ओर से कभी-कभार बादल भी आ जाते थे और यहां हवाएं, हमेशा की तरह, तेज चल रही थीं। कुछ दूरी पर मालवाहक जहाज भी दिखाई दे रहे थे।



अटलांटिक सागर में तट के पास तेलवाहक जहाज

अफ्रीका के मुल्कों में इस तरह का माहौल मिलना एक स्वप्न जैसा लग रहा था मानों कि समय कुछ देर के लिए थम सा गया हो ...

(क्रमशः आगामी अंक में ....)





ऑडिट दिवस पर मंच पर आसीन (बाएं से) भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, माननीय प्रधानमंत्री जी एवं उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदया



माननीय प्रधानमंत्री जी भारत रत्न बाबा साहेब अम्बेडकर की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए





ऑडिट दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री महोदय महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय  
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124